ओ३म
ओ३म
हम सब हिन्दू हैं
हम अब किसी हिन्दू
का धर्म परिवर्तन नहीं
होने देंगे!
अखिल भारतीय
हिन्दू रक्षा समिति
कार्यालय
वेद मन्दिर, करौल बाग
नई दिल्ली - ५ द्वारा प्रसारित

प्रकाशक—

पं० राकेश रानी
अध्यक्ष, दयानन्द संस्थान, वेद मन्दिर,
दिल्ली-११००३६

दिल्ली कार्यालय—
दयानन्द संस्थान
१५६७, हरध्यानसिंह मार्ग, करोल बाग,
नई दिल्ली-११०००५
दूरभाष : ५६२६३६/५६४७४१/८०१२११

मूल्य : ५० पैसे

प्रथम संस्करण : सितम्बर १९८१

* * * * *

इस पुस्तक की कम-से-कम १०० प्रतियां बाँटना प्रत्येक देश भक्त का धर्म है।

हम सब हिन्दू हैं

हम अर्थात् भारत के सभी वासी जो इस देश का वन्दन करते हैं, मां को, भारत मां को, पूज्य, वन्दनीय और पावन समझ वन्दे मातरम् गाते हैं। गंगा-यमुना सरस्वती को, वेद—गौ—गंगा-गायत्री के प्रति जिन की निष्ठा है, जो समवेत स्वर में द्वारिका से निकोबार तक की सारी धरती पर फहराते राष्ट्रध्वज के प्रति समर्पित हैं, वे सभी हिन्दू हैं।

राम-कृष्ण की गाथाएं सुन जिन का मस्तक गौरव से तन जाता है। प्रताप का शौर्य वर्णन जिन्हें नवजीवन देता है। दर्शन—अध्यात्म—ज्ञान-चिन्तन जिनके मानस में अमृत बरसाता है, जो भारत की मिट्टी के प्रत्येक कण पर हजार कोहेनूर न्योछावर कर सकते हैं, वे सब हिन्दू हैं।

मां की वन्दना में जो शीश कटा सकते हैं, अर्चना में सर्वस्व समर्पित कर सकते हैं, पूजा में जो स्वयं को विस्मृत कर झूम-झूम जाते हों, जो हिम-गिरि के मुकुट पर त्रैलोक्य का साम्राज्य भी न्योछावर कर सकते हों, वे सब हिन्दू हैं।ऐसे सभी राष्ट्र भक्तों को हम हिन्दू कह अपने को धन्य मानते हैं। जो हिन्दू है, वह राष्ट्र भक्त है, जो राष्ट्र भक्त है, वह हिन्दू है। हिन्दू शब्द अब न जातिवाचक है न किसी मत का प्रतीक। वह भारतीयता का प्रतीक है। वह ध्वज है उस पावन संदेश का, जिस के पीछे मातृभूमि के प्रति सिर कटाने की भावना है।

किन्तु जो हिन्दू नहीं, वह देश भक्त नहीं। मत परिवर्तन होते ही राष्ट्र भक्ति में परिवर्तन आ जाता है। इसलिए हमने संकल्प लिया है कि हम भारत में किसी भी देश भक्त को देशद्रोही बन कर नहीं रहने देंगे। विदेशी शक्तियां भारत को हड़पने की चेष्टा में धन बल से षड्यन्त्र कर रही हैं। किन्तु भारत के देशभक्त उनके कुत्सित चिन्तन को विफल करने के लिए कृत संकल्प होकर जुट गए हैं।

मेरी धरती की पावन माटी को कलुषित करने के लिए हिन्दू को हिन्दू का शत्रु बनाने का प्रयत्न सफल होना क्या हम सबके लिए कलंक नहीं है ? क्या भौतिक साधनों से ईमान खरीदा जाएगा ? क्या भारत का मानस चांदी के टुकड़ों पर बिक जाएगा ? क्या देश की धरती के बेटे विदेशियों की गर्हित चालों से विद्रोही बन अपनी मां को मृत्यु की ओर धकेलेंगे ?

इन प्रश्नों के साथ हम फिर यही संकल्प दुहराते हैं कि नहीं अब हम और नहीं रुकेंगे और एक भी हिन्दू को ईसाई या यवन नहीं बनने देंगे।

—वेदभिक्षुः
अध्यक्ष

अखिल भारतीय हिन्दू रक्षा समिति
१५६७ हरध्यानसिंह मार्ग, करोल बाग, नई दिल्ली-५

क्या है इस्लाम ?

—राकेशरानी

आग लगने पर कुआँ खोदना बुद्धिमत्ता नहीं। जब सभी कुछ दांव पर लगा हो तब सोते रहना कौन बुद्धिमत्ता कहेगा ?

आज भारत के हिन्दू को मिटाने के लिए यवन-ईसाई एकजुट होकर लग गए हैं। तब भी क्या हम सब सोते ही रहेंगे ?

सभी सोचें और स्वयं अपना कर्तव्य निश्चित करें—यह आज की मांग है।

आखिर इस्लाम है क्या ? क्या है उस का इतिहास ? कौन नहीं जानता कि जिस इतिहास का हर शब्द हकीकत राय जैसे हजारों बेगुनाह बच्चों के कटे हुए सिरों से चुना गया हो, जिसकी हर पंक्ति सीता और सावित्री की बेटियों के नग्न शरीरों में चुभी संगीनों पर टिकी हो, जिसका हर पृष्ठ गुरु गोविन्द सिंह के केवल चार नहीं, हजारों बेटों के खून से रंगा गया हो—वह इतिहास किसी धर्म का नहीं हो सकता—वह पाप का और शैतानियत का इतिहास है, जिसके रहते एकता की बात चलाना हवाई किले बनाने से ज्यादा कुछ नहीं है और सबसे बड़ी विडम्बना तो यह है कि यह इतिहास जिस शिक्षा का परिणाम है—जिस किताब से मुसलमानों ने अनाचार का यह बीभत्स ताण्डव सीखा है उस कुरान के रहते हम एकता का नाटक कर रहे हैं।

मैं पूछती हूं कि जिस किताब ने शिखा न कटाने वालों के सिर काटने की तालीम दी है, जनेऊ न तोड़ने वालों के सीने चीर देना और कलमा न पढने वालों के सिरों पर आरे चलाना सिखाया हो, वह किताब आज भी दुनिया की इतनी बड़ी आबादी का धर्मग्रंथ है, समूची मानवता के लिए इससे बड़ा कलंक क्या होगा ?

जिन धर्मालयों की सीढ़ियां हिन्दू, जैन और बौद्ध देवी-देवताओं की मूर्तियों के सिरों को तोड़ कर बनाई गई हों, वे स्थान धर्मालय कदापि नहीं हो सकते। जिन भवनों का हर पत्थर घृणा, द्वेष और अत्याचार की कहानी कहता हो वे सिर्फ शस्त्रागार ही हो सकते हैं।

एक बार इसी इतिहास की पुनरावृत्ति १९४६-४७ में हुई जब भारत माता के टुकड़े करके उसकी कीमत चुकानी पड़ी थी। ३५ साल के भीतर ही उसे फिर दोहराने का वातावरण तैयार कर लिया गया है।

कश्मीर से लेकर हैदराबाद और तमिलनाडु के देहाती इलाकों तक सारे देश में इस्लामीकरण का दौर चला हुआ है। मुरादाबाद, सम्भल, अलीगढ़, हैदराबाद और बिहारशरीफ इस साम्प्रदायिक जनून की आग में धधक रहे हैं।

महर्षि दयानन्द ने हमें प्यार करना सिखाया था। वह पहले महापुरुष थे, जिन्होंने आदमी और उसे डुबोने वाले अंधेरे के बीच एक रेखा खींच दी थी। मानव को प्यार से गले लगाना और अज्ञान को छोड़ देने का महामन्त्र उन्होंने दिया। मुसलमान भी एक मानव है, जिसे हम प्यार करते हैं; लेकिन जिस शिक्षा, जिस उपदेश ने उसे अन्धा बनाया, उसे छुड़ाना अपना धर्म सकझते हैं।

कल ही किसी ने पूछा था कि आप "धर्मान्तरण के विरोधी क्यों हैं ? अगर एक मूर्तिपूजक जातिवादी हिन्दू निराकारवादी मुसलमान बन जाए तो आपको क्या परेशानी है ?" यह सवाल उचित ही था। यद्यपि मैंने जवाब में कह दिया था कि मूर्तिपूजक हिन्दू में राष्ट्रीय हो जाने की जितनी संभावना हो सकती है, मुसलमान के अराष्ट्रीय होने की उससे ज्यादा गारण्टी है।

राष्ट्रीयता का सवाल

यहां एक अहम सवाल है कि क्या भारत में रहनेवाला कोई मुसलमान राष्ट्रीय हो सकता है ? अपवाद को छोड़कर देखा जाय, तो इसका जवाब होगा कि मुसलमान राष्ट्रवादी नहीं हो सकता, और अगर राष्ट्रवादी है तो वह मजहबी मुसलमान नहीं है।

राष्ट्रवादी होना कोई फैशन नहीं है। राष्ट्र के तीन तत्त्व हैं—धरती, धरती पर रहने वाले लोग और लोगों की संस्कृति। इस हिसाब से किसी भी व्यक्ति के राष्ट्रवादी होने की यही कसौटी होगी कि क्या वह इन तत्त्वों के साथ समानता और समस्वरता रखता है ? क्या वह इनके साथ एकाकार है? अब जरा इन तीनों पर अलग-अलग चर्चा की जाय।

धरती

कोई भी मान्यता कानून, उपदेश या किताबों से नहीं बना करती—मान्यता के पीछे एक लम्बा इतिहास छुपा होता है। भारत में रहने वाला मुसलमान भारत की धरती को एक जीती हुई जागीर समझता है। उसके दिमाग के किसी न किसी कोने में आपको यह मान्यता जरूर मिल जाएगी कि वह इस देश की विजेता कौम का है और चूंकि उसके पूर्वजों ने यह जमीन

लड़कर जीती थी—इसलिए लड़ना उसकी पुरातन परम्परा है, उसका संस्कार है।

कोई मुसलमान यह मानने को तैयार नहीं कि वह किसी मिट्टी की संतान है—यही धरती उसकी मातृभूमि है। यह दूसरी बात है कि हजारों में एकाध मुसलतान भी मुश्किल से मिलेगा, जिसके पूर्वज अरब से आए थे।

पिछले दिनों मुरादाबाद के साम्प्रदायिक दंगों के दौरान और फिर हाल ही में हैदराबाद में हुए इस्लामी सम्मेलन के दौरान लगे नारे, हंस के लिया था पाकिस्तान, लड़ के लेंगे हिन्दुस्तान, क्या इस बात के जीते-जागते प्रमाण नहीं हैं कि कल का लुटेरा आज भी नहीं बदला है। मुसलमान की इसी मनोवृत्ति ने भारत माता के टुकड़े करवाए हैं और जब तक आक्रामकता का जहर उसके दिलो-दिमाग से नहीं निकल जाएगा, कश्मीर, अलीगढ़, मुरादाबाद और हैदराबाद को लाहौर या ढाका बनने से नहीं रोका जा सकता। जहां थोड़ा-सा भी बस चलता है, इस्लाम के ये बन्दे धरती के उस हिस्से पर अपनी बपौती जताने लगते हैं।

अभी हाल में आयकर विभाग के कुछ वरिष्ठ अधिकारी कश्मीर गए थे। आप लोगों ने अखबारों में पढ़ा होगा कि श्रीनगर में उनके ऊपर हमला करते हुए नारे लगाये गये थे "हिन्दुस्तानी कुत्तो, वापिस जाओ", "काफिरों के लिए कश्मीर नहीं, कुफ्र है।"

इससे ज्यादा शर्मनाक बात और क्या हो सकती है कि अराष्ट्रीयता का जहर उगल रहे इन विषधरों को हम अंगूर, सेब और काजू खिलाकर ताकतवर बना रहे हैं। इनका फन और भी लपलपा सके, इनके दांत और भी पैने हो सकें—शायद इसी लिए सरकार ने धारा ३७० के तहत इन्हें विशेषाधिकार भी दे रखे हैं।

धरती के बारे में उनका दृष्टिकोण बड़ा साफ है—

चीनो-अरब हमारा, हिन्दोस्तां हमारा
मुस्लिम हैं हम, वतन है सारा जहां हमारा।
तौहीद की अमानत सीनों में है हमारे
आसां नहीं मिटाना, नामो निशां हमारा।
तेगों के साये में हम पलकर जवां हुए हैं
खंजर हलाल का है कौमी निशां हमारा।

जब तक यह मानसिकता नहीं टूटेगी, तब तक कोई भी मुसलमान इस देश की धरती से नहीं जुड़ सकेगा। भारत का बंटवारा इसी मानसिकता

की परिणति थी। मुस्लिम लीग (जो आज भी इस देश में क्रियाशील है) के संस्थापक मिस्टर जिन्ना ने लीग के उद्देश्यों की भूमिका में स्पष्ट लिखा था—

"मैं अपने आपको भारतीय नहीं मानता। भारत इस मायने में कोई देश नहीं है। भारत में अनेक राष्ट्र हैं। इसमें दो राष्ट्र बड़े हैं और हमारा कहना है कि हमें अपने राष्ट्र के लिए अलग स्वतंत्र राज्य मिलना चाहिए। मुझे उनके साथ संयुक्त रूप में रहने की इच्छा नहीं है। हिन्दू-मुसलमान एक-दूसरे से अलग हैं। इतना ही नहीं, एक-दूसरे के विरुद्ध हैं। ऐसा होते हुए भी हम इकट्ठे रहें, हमें यह बिल्कुल स्वीकार्य नहीं। अगर इस के बावजूद तुम हमें इकट्ठा रखने के लिए दबाव डालोगे तो तुम्हें अपनी संगीनें तैयार रखनी चाहिएं।"

(ट्रिब्यून, लाहौर—२ अप्रैल '४६)

भारत विभाजन से पूर्व जिन्ना के इस बयान और अब्दुल्ला बुखारी, शेख अब्दुल्ला व हैदराबाद सम्मेलन में मुसलमान नेताओं के बयानों में कोई खास फर्क नहीं, जो खुल्लमखुल्ला कह रहे हैं कि 'हम मुसलमान पहले हैं और भारतीय बाद में।'

धरती और इस्लाम

अब आप पूछेंगे कि वह कौन-सा कारण है जिससे भारत का मुसलमान इस धरती को अपनी धरती नहीं मानता? मैं बताती हूं। कई साल पहले की बात है। हमारे पड़ोस में एक मुसलमान परिवार रहता था। पांचों वक्त की नमाज, रोजा आदि में बहुत कट्टर थे वे लोग। लेकिन जिस खास बात से उनकी चर्चा यहां आई वह यह कि वे किसी भी चुनाव में वोट नहीं डालते थे। इतना ही नहीं, वे अपने क्रियाकलापों में ऐसा प्रदर्शित नहीं होने देते थे कि वे इस देश के नागरिक हैं। बहुत खोज-बीन से उनके वोट न देने का कारण यह पता चला कि वे "दारुल हरब" का नागरिक होना इस्लाम के विरुद्ध मानते थे। इस देश का नाम भारत, हिन्दुस्तान, इंडिया, आर्यावर्त तो सुना था किन्तु यह 'दारुल हरब' क्या बला है, तब तक मैं नहीं जानती थी। थोड़े से प्रयत्न के बाद इस शब्द का अर्थ पता चला—"दारुल हरब" यानी लड़ाई का घर अथवा युद्धक्षेत्र। यह बात मेरे लिए ही क्या किसी भी राष्ट्रवादी के लिए वेदनापूर्ण तथा चुनौतीपूर्ण है कि भारतमाता की कोख से जन्म लेने वाला हिन्दुस्तानी इसे लड़ाई का घर माने। जिसके शरीर के खून का हर कतरा इसी धरती की मिट्टी और पानी से बना हो, जिसकी हर

सांस उस पवित्र हवा से चलती हो जिसमें सारे संसार को प्यार, मानवता और भाईचारे के शिक्षा देने वाले वेद की पावन ऋचाओं की गूंज भरी पड़ी है—इतना ही नहीं, जिसके पूर्वज तक इसी धरती मां की गोद में पैदा हुए, पले और बढ़े, अगर वह इसे युद्धक्षेत्र मानता है तो इसमे बड़ा दोगलापन और क्या होगा ?

लेकिन बात इसे युद्धभूमि मानने तक ही समाप्त नहीं हो जाती। यहाँ से तो शुरू होती है। क्योंकि प्रश्न उठता है कि यह युद्धभूमि क्यों है? तो इसका जवाब होगा,— 'दारुल अमन' बनाने के लिए। दारुल अमन का मतलब होता है "शांति का घर"। आप सोचेंगे तब तो इस्लाम की बड़ी अच्छी योजना है। लड़ाई के घर को शांति का घर में बदल देने से अच्छी भला और क्या बात हो सकती है? किन्तु दारुल अमन गन्तव्य नहीं है। यह तो एक छोटा-सा पड़ाव है। गन्तव्य तो है "दारुल इस्लाम"।

अब आप इन तीनों शब्दों, दारुल हरब, दारुल अमन और दारुल इस्लाम की परिभाषाएं भी जान लीजिए।

दारुल हरब उस जगह को कहते हैं, जहाँ मुसलमान अल्पसंख्यक हों और जिस देश के शासक गैर-मुसलमान हों। चूंकि इस जगह में इस्लाम के अनुयायियों में बढ़ोतरी करना प्रत्येक मुसलमान का धर्म है और दुनिया भर का इतिहास साक्षी है कि यह बढ़ोतरी बगैर तलवार के नहीं हुई, इसलिए इसे रणक्षेत्र कहा गया।

भारत का उदाहरण

जब किसी देश में मुसलमानों का शासन हो जाए—वे बहुसंख्यक बन जाएं, किन्तु फिर भी वहाँ अल्प संख्या में अन्य मतावलम्बी रहते हों, वह जगह 'दारुल अमन' कहलाती है, क्योंकि वहां लड़ाई की जरूरत नहीं पड़ती। आप पूछेंगे कि लड़ाई की जरूरत क्यों नहीं पड़ती? इसका जवाब बड़ा सीधा है। 'दारुल अमन' में इस्लामी शरीअत (धार्मिक संविधान) के अनुसार शासन व्यवस्था चलती है और सरकार व शरीअत की सामान्य प्रक्रिया में ही गैर-मुसलमान धीरे-धीरे स्वतः ही समाप्त होने लगता है। दरअसल जब सरकार और कानून ही उसका जीना दूभर कर देगा फिर आम मुसलमान नागरिक को क्या पड़ी है कि वह उसे 'रण-क्षेत्र' माने ?

पाकिस्तान और बंगलादेश का उदाहरण आप दारुल अमन की तरह ले सकते हैं। विभाजन के समय पाकिस्तान (तत्कालीन प० पाकिस्तान) की जनसंख्या में २२ प्रतिशत हिन्दू थे, जो अब घटकर केवल २.२ प्रतिशत

रह गए हैं। इसी तरह बंगलादेश की आबादी में हर सौ में से तैंतीस हिन्दू थे, जो घटकर केवल पन्द्रह रह गए हैं।

क्या आपने कभी सोचा कि ईरान से पारसियों को क्यों भागना पड़ा ? सन् १९१४ से १९१७ के बीच के तीन सालों में ४० लाख से ज्यादा आर्मिनियनों की हत्या क्यों कर दी गई थी ? १९६५-६६ में नाइजीरिया के १५ लाख ईसाइयों को अपना देश छोड़कर क्यों भाग जाना पड़ा ? साइप्रस, इथियोपिया, फिलीपीन्स और लेबनान के अल्पसंख्यकों का जीवन क्यों अधर में लटक रहा है ? ये सभी एक ही जवाब के पीछे मुंह चिढ़ाते सवाल हैं कि इन देशों में 'दारुल अमन' को दारुल इस्लाम बनाने की प्रक्रिया चली अथवा चल रही है।

अभी कल के अखबारों में पाकिस्तान की एक खबर छपी है कि वहां हिन्दू मन्दिर बनाने पर पाबन्दी लगा दी गई है। मैं मन्दिर बनाने का पक्षपाती नहीं हूं। किन्तु पाकिस्तान यह तो चाहता है कि लाहौर या कराची में बारिश होने पर दिल्ली का मुसलमान सड़क पर छाता खोल कर चले, पर लाहौर के हिन्दू को अपने लिए मन्दिर तक न बनाने दे। यह मानवीय स्वतन्त्रता की हत्या है। पिछले दिनों मद्रास मूल का एक पाकिस्तानी परिवार मुझे रेल में मिला। मुसलमानी लुंगी टोपी के बावजूद उन्हें तमिल बोलते देखकर जिज्ञासा हुई। बातचीत शुरू करने पर पता चला कि वे कराची के पास किसी गांव में रहते हैं और अपने सम्बन्धियों से मिलने तमिलनाडु जा रहे थे। थोड़ा-सा कुरेदने पर उन्होंने बता दिया कि अभी ५-६ साल पहले वे मुसलमान बनने पर मजबूर हुए हैं। ६५-वर्षीय सलमा बी (पूर्वनाम सीतम्मा) यह बताते हुए फूटकर रो पड़ी कि किस तरह उसके बड़े बेटे की पुलिस कोतवाली में हत्या कर दी गई। उसके छोटे बेटे की दूकान और सम्पत्ति बरबाद कर दी गई। उसकी १३-१४ वर्षीय पोती से सेना के लोगों ने खुले आम बलात्कार किया, किन्तु किसी के भी कानों में उनकी दर्दभरी पुकार नहीं पहुंची। मुसलमान पड़ोसी उन्हें काफिर कहकर सम्बोधित करते थे। उसका कहना था "वहां हिन्दुओं के लिए जीना दूभर है— अब तो हमारे गांव में एक भी हिन्दू नहीं बचा।"

इससे अन्दाजा लगाया जा सकता है कि दारुल अमन में अमन के वास्तविक मायने क्या हैं ?

कुरान की सूरत ९, आयत २८ में अल्लाह ने हुक्म दिया है —

"अहले किताब में से जो लोग अल्लाह और आखिरी दिन पर ईमान नहीं लाते तथा अल्लाह और उसके रसूल की हराम की हुई चीजों को हराम नहीं जानते और दीने-हक (इस्लाम) कबूल नहीं करते, मुसलमानो! तुम ऐसे लोगों का मुकाबला करो। यहाँ तक कि वे अपने हाथों से जजिया दें और जलील (तुच्छ) होकर रहें।"

जब कुरान का आदेश ही गैर-मुसलमानों को जलील करना है, तो पाकिस्तान में हिन्दुओं पर अमानुषिक अत्याचार एक 'धार्मिक कृत्य' ही है।

अब बारी आती है 'दारुल इस्लाम' की। दारुल इस्लाम यानी इस्लाम का घर। जब दारुल अमन में सत्ता और शरीअत के दबाव से सभी अल्पसंख्यकों को या तो मुसलमान बना लिया जाय, उनकी हत्या कर दी जाय या उन्हें देश निकाला दे दिया जाए, और केवल इस्लाम धर्मावलम्बी ही बचें तो वह देश दारुल इस्लाम बन जाता है। इस्लाम का घर बन जाता है। फिर वहाँ मुसलमानों को करने के लिए कुछ नहीं बचा रहता। सारी दुनिया को दारुल इस्लाम में बदल डालना मुसलमानों का सबसे बड़ा सामाजिक धर्म है।

किन्तु इतना याद रहे कि दारुल इस्लाम में गैर-मुसलमान रह तक नहीं सकता।

धरती पर रहने वाले लोग

राष्ट्रवादिता की दूसरी कसौटी है कि एक ही धरती पर लोगों का एक-दूसरे के बारे में क्या दृष्टिकोण है? अलग-अलग मान्यताओं और परम्पराओं के रहते क्या वे एक दूसरे का आदर करते हैं?

मेरे विचार में कोई भी मजहबी मुसलमान दूसरे मतावलम्बी का आदर करना तो दूर, उसका रहना तक स्वीकार नहीं कर सकता। इस्लाम के शब्दकोश में मनुष्य को सीधे-सीधे दो हिस्सों में बाँट दिया गया है। मुसलमान अर्थात् खुदा के बन्दे जिनका ईमान कुरान पर सलामत है, तथा काफिर, जो इस्लाम को नहीं मानते और बुतपरस्त (मूर्तिपूजक) हैं।

समाजशास्त्रियों की मान्यता है कि दुनिया में दो जातियों में आत्म-केन्द्रित बने रहने की मूल प्रवृत्ति बहुत अधिक है—चीनी और मुसलमान ये जातियां हैं। इसी आत्मकेन्द्रितता से इनकी मतान्धता, संगठनात्मकता, स्वार्थपरता तथा दूसरों से कुछ न सीखने आदि की प्रवृत्तियाँ विकसित हुई हैं।

दुनियाभर के धर्मों के इतिहास में जितना खून इस्लामी तलवार ने बहाया, किसी ने नहीं। इससे बड़ा मतान्ध कोई नहीं। मजहब के नाम पर संगठित होकर कुछ भी कर डालने की कहानी आज भी मुरादाबाद, अलीगढ़, बिहारशरीफ की गलियों की खून से सनी धूल रो-रो कर कह रही है। स्वार्थपरता के सबसे ताजा उदाहरण, बंगलादेश में राष्ट्रपति जियाउर्रहमान की हत्या और ईरान में बनी सदर के पदच्युत होकर फ्रांस में शरण लेने की कहानी और उनके समर्थकों द्वारा अनेक राजनेताओं की हत्या आपके सामने है। दूसरों से कुछ न सीखने का ही कारण है इस युग में भी इस्लामी देश अपनी पुरानी परम्राओं में जकड़े पड़े हैं।

भारत के मुसलमान मूल रूप से भारतीय हिन्दुओं की सन्तानें हैं। अतः दो-चार पीढ़ियों में यह प्रवृत्ति इतनी विकसित नहीं हुई है। किन्तु फिर भी जो कुरान की आयतों पर चलेगा, उसमें स्वाभाविक रूप से ये बातें आ जाएंगी। इसके लिए हमें मुसलमानों के धर्मग्रन्थ कुरान पर नजर डालनी पड़ेगी, जो काफिरों (गैर-मुसलमानों) के प्रति घृणा, द्वेष और हिंसा के उपदेशों से भरा पड़ा है।

कुरान और काफिर

फिर जब हुरमत के महीने निकल जाएं तो काफिरों को जहां पाओ, कत्ल करो और पकड़ो और घेरो और हर घात की जगह में उनके लिए बैठो। फिर अगर वे तोबा करें और नमाज पढ़ें व जकात (खैरात) दें तो उनकी राह छोड़ दो—जहां चाहें फिरें"। (कुरान सूरत ७, आयत ४)

यहां आप लोग कह सकते हैं कि कुरान में तो काफिरों के कत्ल का हुक्म दिया गया है। आप अपने आपको काफिर मानते ही क्यों है? यह सवाल बड़े भोलेपन का है। हम पूछते हैं कि साम्प्रदायिक दंगों में जब हिन्दुओं के कत्ल की बात खुले तौर पर कही जाती है तो क्या हम अपने आपको हिन्दू नहीं मानेंगे?

मजहबी और राजनैतिक क्षेत्र में तो खुले आम हिन्दू को काफिर कहा जाता है, किन्तु छोटे-छोटे किशोरों की पाठ्य पुस्तकों में हिन्दू की जगह काफिर शब्द का इस्तेमाल किये जाने के अनेकों प्रमाण मौजूद हैं। जमाते इस्लामी के प्रधान मौलाना किफातउल्लाह ने मुस्लिम बच्चों के लिए जो पुस्तकें प्रकाशित कीं, सभी में हिन्दू को 'काफिर' से सम्बोधित किया गया है।

मुस्लिम किसी भी देश में रहे, दूसरे मतावलम्बी से कभी मित्रता नहीं कर सकता। अभी पिछले साल जिन दिनों श्रीनगर साम्प्रदायिक दंगों की

आग में झुलस रहा था, उन दिनों श्रीनगर के एक उच्च सेनाधिकारी वेदभाष्य लेने दयानन्द संस्थान आए। और बातों के अलावा उन्होंने बताया कि श्रीनगर में तैनात पुलिस और सीमा सुरक्षा दल के अन्दर एक बात बड़ी तेजी से चल रही है। मुसलमान सिपाही अपने हिन्दू साथियों (सिपाहियों) को अपने साथ चाय-नाश्ते आदि के बहाने घर ले जाते हैं और कई बार हिन्दू सिपाही वापिस नहीं आते। उनका क्या किया जाता है—हम और आप अनुमान लगा सकते हैं। सबसे बड़ी विडम्बना तो यह है कि कुरान ही उन्हें यह सब करने का आदेश देता है। आप स्वयं देखिए—

"मुसलमानों को चाहिए कि कुफ्फार (गैर-मुस्लिम) को जाहिर व बालिग दोस्त न बनायें। मुसलमानों की दोस्ती से तजावुज करके जो शख्स ऐसा करेगा, वह शख्स अल्लाह के साथ दोस्ती रखने के लिए शुमार में नहीं—सिवाय ऐसी सूरत के कि तुमको इनसे किसी किस्म का बड़ा अन्देशा हो।"

(कुरान, सूरते अल उलेमा २७, पृष्ठ ७७)

फुटनोट में अंतिम बात की व्याख्या की गई है कि "अगर कहीं जान का अन्देशा हो तो जाहिर में दफेजाए के लिए मीठी बातें कर लेना चाहिए मगर दिली दोस्ती इनसे न रखनी चाहिए।"

सरकार मुसलमानों की चापलूसी में कह दिया करती है कि साम्प्रदायिक दंगों में मुसलमानों का हाथ नहीं है। मुसलमान नेता भी ऐसा कहते हैं किन्तु मैं कहती हूं कि ऐसा कहना तो बेचारे मुसलमान की धर्मपरायणता की तौहीन करना है। लड़ाई तो उसका धर्म है। अगर खुदा के रास्ते में वह लड़ाई नहीं करेगा तो मुसलमान रहेगा कैसे? आप कुरान उठा कर देख लीजिए—

"सो ऐ मुहम्मद! तू खुदा की राह में लड़ाई कर। तू जिम्मेदार नहीं और तू ईमानदारों (मुसलमानों) को लड़ाई पर उभार (प्रेरित कर)।

(कुरान सूरत ४, आयत ८३)

"ऐ नबी! मुसलमानों को लड़ाई पर उभार।" (वही, ८।६४)

"ऐ नबी! काफिरों से लड़ाई कर और उन पर सख्ती दिखला। उनका ठिकाना जहन्नुम है बुरी जगह है। (कुरान ८।७२)

ये तो बहुत छोटे-से उदाहरण हैं। कुरान में तो इस तरह की आयतें भरी पड़ी हैं। अब क्या दुनिया का कोई भी व्यक्ति निष्पक्षता से यह कह सकता है कि इस जहरीली शिक्षा के रहते किसी भी देश का अल्पसंख्यक मुसलमान राष्ट्रीय हो सकता है?

धरती के लोगों की संस्कृति

'राष्ट्र' का तीसरा तत्त्व है वहां के लोगों की संस्कृति। विश्व के हर देश की अपनी एक सांस्कृतिक विशिष्टता हुआ करती है और यह उस देश की हजारों साल की भौगोलिक परिस्थितियों, ऐतिहासिक घटनाचक्रों तथा धार्मिक मूल्यों से बनती है।

भारत की अपनी एक संस्कृति है, जिसकी बुनियाद "सत्य की खोज के आग्रह" पर खड़ी है। भारतीय मनीषी कहीं रुकता नहीं, जब तक कि वह एक चरम सत्य से साक्षात्कार न कर ले। इस प्रक्रिया ने उसे भोग की बजाय त्याग की भावना से जोड़ा। भारतीय विचारक ने बाहरी जगत् की चीजों में भी इसी त्याग भावना का साक्षात्कार किया। गाय भारत में क्यों पूज्य है ? गीता से लगाव तथा गंगा का सम्मान क्यों है ? यहां तक कि केवल बुद्धि मांगने वाली ईश्वरीय प्रार्थना गायत्री से भारतीय संस्कृति क्यों जुड़ी रही ?

लगातार हजारों साल के पराभव के बाद भी आम हिन्दू के मन में किसी विलासी व्यक्ति के मुकाबले निर्धन ज्ञानी अथवा संन्यासी के प्रति सम्मान की भावना है। इस्लाम की संस्कृति इसके सर्वथा विपरीत है। उसकी दृष्टि में भोग ही महत्त्वपूर्ण है। यही वजह है कि भारतीय इतिहास के उज्ज्वल पक्ष को वह स्वीकार नहीं कर पाता। लाख चाहने के बाद कोई मुसलमान (अपवाद छोड़कर) राम, कृष्ण, बुद्ध, महावीर को हृदय से स्वीकार नहीं कर सकता।

पुरानी बात छोड़िये। देश का विभाजन कर देने वाला जिन्ना पढ़े-लिखे मुसलमानों में बड़े आदर का पात्र है, लेकिन मैं पूछती हूं कि भारत मां के अमर बेटे शहीद अशफाक उल्लाखां का नाम मुसलमानों की जबान पर क्यों नहीं आता ?

औरंगजेब तथा अकबर विदेशी शासक थे और शिवाजी तथा प्रताप राष्ट्रवादी सिपाही। जब तक भारतीय मुसलमानों की यह औरंगजेबी मानसिकता खत्म नहीं हो जाती, तब तक इस देश की संस्कृति से उसका सामंजस्य नहीं हो सकता।

इस सम्पूर्ण विश्लेषण के बाद हम एक ही नतीजे पर पहुंचते हैं कि जिन तीन तत्त्वों से मिलकर सम्पूर्ण राष्ट्र बनता है (अर्थात् धरती, धरती पर रहने वाले लोग तथा लोगों की संस्कृति) इनके साथ कोई नागरिक जब तक एकाकार नहीं हो जाता, तब तक वह राष्ट्रीय नहीं हो सकता।

इस का यह अर्थ कदापि नहीं कि प्रत्येक हिन्दू राष्ट्रवादी है। हिन्दुओं में भी अराष्ट्रीय लोगों की कमी नहीं है।

एक ही रास्ता

हमने इस पुस्तिका के प्रारम्भ में ही लिखा है कि मनुष्य कोई बुरा नहीं, उसकी शिक्षा और संस्कार उसे बुरा-भला बनाते हैं। अगर इस तरह की भ्रांत शिक्षा एवं उपदेशों को छोड़कर भारत का मुसलमान कुरान के केवल मानवीय व धार्मिक पक्ष को ही माने तो वह किसी भी राष्ट्रवादी हिन्दू से कम राष्ट्रीय नहीं रहेगा।

मेरा निवेदन है कि जो भाई विभिन्न मतों के अन्धेरे में गोता लगा रहे हैं, उन्हें वैदिक ज्ञान के प्रकाश में लाने का प्रयत्न हम सभी को करना चाहिए।

प्रचार साहित्य

१. Bible in the Balance	६० "
२. A Challenge to the Christian Faith	२० "
३. पोप की सेना का भारत पर हमला	४० "
४. पादरियों को चुनौती	२० "
५. बाइबिल को चुनौती	४० "
६. ईसाई मत खण्डन	४० "
७. क्या ईसा खुदा का बेटा था ?	४० "
८. ...और पादरी भाग गया	४० "
९. चुनौती : इस्लामी साम्राज्यवाद की	६० "
१०. भारत के मुसलमानों का क्या करें ?	४० "
११. क्या आप सारा भारत दारुल इस्लाम बनने देंगे ?	४० "
१२. हिन्दुओं को चेतावनी	४० "
१३. मोपला (उपन्यास)	५ रुपये
१४. हम सब हिन्दू हैं	४० पैसे
१५. क्या है इस्लाम ?	४० पैसे

हिन्दू रक्षा समिति की मांगें

१. भारत के सभी नागरिकों के लिए समान सिविल कानून, नियम और अधिकार बनाए जाएं।

२: मजहब के आधार पर पुलिस, सेना व सभी सरकारी विभागों में आरक्षण की मांग को किसी भी स्थिति में स्वीकार न किया जाए।

३. कश्मीर, असम व देश के सभी भागों में पाकिस्तानी घुसपैठियों व सेवा की आड़ में राजनैतिक देशद्रोहपूर्ण षड्यन्त्रों में लगे सभी विदेशी पादरियों को तुरन्त भारत से निकाला जाए।

४. अल्पसंख्यक आयोग स्थापित किया जाए।

५. भारत के किसी भी भाग में मुस्लिम विश्वविद्यालय खोलने की अनुमति न दी जाये और अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय को राष्ट्रीय स्वरूप प्रदान किया जाए।

६. अल्पसंख्यक-बहुसंख्यक शब्दों का प्रयोग बन्द हो और तुष्टीकरण की नीति समाप्त की जाए।

७. कश्मीर सम्बन्धी धारा ३७० तुरन्त हटाई जाए और वहां भारत के नागरिकों के बसने की व्यवस्था हो।

८. मजहब के नाम पर अधिकार मांगने व दंगा करने वालों की पूरी शक्ति से कुचल दिया जाए।

९. जो भारत को अपना देश नहीं मानते उनको वोट का अधिकार न दिया जाए। प्रत्येक नागरिक को वोट देने का अधिकार देने से पहले एक शपथपत्र भरने का नियम बनाया जाए, जिसमें वह स्वीकार करें कि मैं भारत को अपनी मातृभूमि स्वीकार करता हूं और मेरी प्रथम निष्ठा भारत राष्ट्र के प्रति रहेगी।

१०. गोहत्या का कलंक तुरन्त समाप्त किया जाए।

११. बिहार व उत्तर प्रदेश में उर्दू को द्वितीय राजभाषा बनाने का आदेश तुरन्त रद्द किया जाए।

धर्म-देश-राष्ट्र और राम-कृष्ण की परम्परा
को बचाने के लिए हिन्दू मात्र को

महात्मा वेदभिक्षुः का आह्वान

भाइयो और बहनो,

आज हिन्दू धर्म पर इतना बड़ा संकट आया है जितना पहले कभी नहीं आया था। विदेशी ईसाई मिशनरी और अन्तरराष्ट्रीय इस्लामी साम्राज्यवाद के पोषक अपार धनराशि के बल पर हमारी स्वतन्त्रता, एकता और संस्कृति को समाप्त करने में लगे हुए हैं।

दुर्भाग्यवश हमारे नेतागण स्वार्थ व कुर्सी के मोह में इन्हें रोकने के स्थान पर इनके तुष्टीकरण में लगे हैं।

भारत मां की चिन्ता किसी को नहीं। ऐसे में हमने देशभक्त जनता और प्रभु के विश्वास पर इनकी चुनौती स्वीकार कर और हिन्दूमात्र को एक झंडे के नीचे लाकर विजय वरण के लिए

अखिल भारतीय हिन्दू रक्षा समिति की स्थापना कर दी है।

यह समिति सर्वत्र अनेक हिन्दू रक्षा सम्मेलन आयोजित कर चुकी है।

१२ पुस्तकें प्रचार साहित्य के रूप में भारी संख्या मेंप्रकाशित कर आधे मूल्य में वितरित कर चुकी है।

धन-साधन शून्य होने पर भी हमने संघर्ष का बिगुल बजा दिया है।

हमें १. भारी संख्या में प्रचार साहित्य प्रकाशित करना है।
२. स्थान-स्थान पर हिन्दू रक्षा सम्मेलन आयोजित करने हैं।
३. एक प्रभावशाली पत्र का प्रकाशन भी अत्यन्त आवश्यक है।

इन सभी कार्यों के लिए धन और जन की भारी आवश्यकता है।

मेरी प्रार्थना कि आप

१. अपने क्षेत्र में जन-जागरण के लिए अधिक से अधिक समय दें।
२. अपने यहाँ हिन्दू रक्षा समिति स्थापित करें। सदस्यता पत्र मंगवाएं।
३. भारी संख्या में प्रचार साहित्य मंगाएं।
४. संपूर्ण कार्य की सफलता के लिए स्वयं भूखे रहकर भी अधिक से अधिक धन भेजें व अपने मित्रों से भिजवाएं।

कार्य हो रहा है, होता रहेगा। तेजी से बढ़ने के लिए आपका सहयोग चाहिए।

दूरभाष : ५६२६३९/५६४७४१
अखिल भारतीय हिन्दू रक्षा समिति
१५६७ हरध्यानसिंह मार्ग, करौल बाग, नई दिल्ली-५

—**वेदभिक्षुः**
अध्यक्ष

हिन्दुओं को चेतावनी

अन्तरराष्ट्रीय
इस्लामी साम्राज्यवाद
व ईसाइयत का भारत
को मिटाने का षडयंत्र !

जागो और देश बचाओ

दयानन्द संस्थान
वेद मन्दिर नई दिल्ली 110005

प्रकाशक—

पं० राकेश रानी

अध्यक्ष, दयानन्द संस्थान, वेद मन्दिर,

दिल्ली-११००३६

दिल्ली कार्यालय—

दयानन्द संस्थान

१५९७, हरध्यानसिंह मार्ग, करोल बाग,

नई दिल्ली-११०००५

दूरभाष : ५६२६३६/५६६८६१/८०१२११

मूल्य : ४० पैसे

संस्करण :

द्वितीय अक्तूबर १९८८

इस पुस्तक की कम-से-कम १०० प्रतियां बाँटना प्रत्येक देश भक्त का धर्म है।

महात्मा वेदभिक्षु : अध्यक्ष अखिल भारतीय हिन्दू रक्षा समिति की हिन्दुओं को चेतावनी

सर्वनाश से पहले नींद टूटेगी क्या ?
तिरंगा राष्ट्र ध्वज जलता रहेगा क्या ?
देश बरबाद होता रहेगा क्या ?
तुम तमाशा ही देखते रहोगे क्या ?

कब तक ? आखिर कब तक ??

सहने की सीमा होती है, पिटते-पिटते गीदड़ भी शेर बन जाता है पर मेरे देश के वासियों को पता नहीं क्या हो गया है कि स्वतंत्र होने के ३३ वर्ष बाद वे फिर से उन्हीं रास्तों पर चल पड़े हैं जिनके कारण भारत माँ के टुकड़े हुए थे। वही हवा, वही नारे वही सब कुछ, लगता है हम १९८० में नहीं १९४६ में पहुंच गए हैं। सांप्रदायिकता का जहर फिर सिर उठा चुका है। राष्ट्रीय ध्वज फिर जलाया जा रहा है। खुदा के घर फिर से हिंसा के केन्द्र बन गए हैं। देशद्रोह की खुली आवाजें गूंज रही हैं और मैं सोच रहा हूँ कि इस देश में कोई शासन भी है या नहीं ? इस देश का कोई मालिक भी है या नहीं ? भारत को माँ कहने वाले, वन्देमातरम् का गीत गाने वाले, माँ की आजादी के लिए फांसी का फन्दा चूमने वाले इस देश में, आज कुर्सी-गद्दी और स्वार्थ की घृणित राजनीति ने, सभी कुछ एक ऐसी स्थिति में पहुंचा दिया है जहां पहुंच कर भी यदि न संभला गया तो फिर हमारी आजादी—हमारी परम्पराएं, हमारा धर्म-संस्कृति-वेद-शास्त्र-गौ-गंगा-गायत्री सब संकट में पड़ जाएंगे !

इसलिए मैं एक नारा दे रहा हूँ·········एक आवाज उठा रहा हूं ····· आप को जगा रहा हूं—बुला रहा हूँ और कहता हूँ······जागो और कहो—

भारत उन का : जो भारत के

१९२१ से हिन्दू-मुस्लिम दंगों की जो लहर उठी थी, वह बढ़ती गयी और आखिर में पाकिस्तान बना ! लाखों मरे ·········स्व. नेहरू ने भी कहा कि हम ने सिर कटा कर सिर दर्द की दवा की है। पर··· ··आज १९८० में हम कहते हैं कि हमारे नेताओं की १९२१ से १९८० तक की राजनीति गलत थी। वे राजनीति से सर्वथा शून्य थे। अन्यथा उन्हें यह पता होना चाहिए था

कि जो वर्ग घृणा-युद्ध-हिंसा-द्वेष को घुट्टी में पीता है, जिन को शिक्षा ही यह दी जाती है कि जो तुम्हारी बातें न माने वह काफिर है और उसे जीने का अधिकार नहीं, क्या वह प्यार की भाषा सुनेगा ?

चोर-डाकू और बदमाशो के लिए वे कानून नहीं होते जो सभ्य-शांत नागरिकों के लिए होते हैं। इसलिए मेरा कहना है कि भारत को बचाने का मार्ग केवल एक है कि इस देश का वह वर्ग, जो भारत को माँ मानता है—भारत की मिट्टी से प्यार करता है, भारत को अपना समझता है, संगठित हो, जागे और शासन उस वर्ग को कठोरता से दबाए जो उपद्रवी है, सांप्रदायिक है, हिंसक है—और ऐसे व्यक्तियों की नागरिकता समाप्त कर दी जाए।

अब समय आ गया है जब हमें सारी स्थिति पर नए सिरे से विचार करना होगा। इस देश के उस वर्ग को जो अपने को हिन्दू कहता है, सोचना होगा कि आगे आने वाले समय में उसे जीवित रहना है या नहीं ?

हमारे नेता भी अपनी गद्दियों के चक्कर में जिस तरह देशद्रोहियों की खुशामद करते रहे हैं, करते हैं, वह भी एक ऐसा अपराध है जिसे केवल भारत में ही सहन किया जा सकता है।

क्या किसी को भी यह अधिकार है कि वह भारत की स्वतंत्रता को दाँव पर लगा दे? क्या किसी को भी यह अधिकार है कि वह तिरंगे को जलता मूक दर्शक की भांति देखता रहे, और गद्दियों पर बना रहे? सेना, पुलिस और प्रशासन में सांप्रदायिकता के आधार पर भरती हो……क्या हो रहा है यह सब कुछ ?

मैं देश के हर व्यक्ति को कहना चाहता हूँ कि……वह संभले, बदले और देश पर छाए संकट से जूझने के लिए सर्वस्व न्योछावर करने के लिए तैयार हो।

हम यह भली भांति समझ लें कि सारे संसार के इस्लामी देश भारत का अस्तित्व मिटाने के लिए पूरी तैयारी कर चुके हैं।

उनके द्वारा दिए हुए धन से भारत में ६ नए मुस्लिम विश्वविद्यालय खुल चुके हैं और ६ और खुलने जा रहे हैं। सारे देश में लाखों विदेशी मुसलमान धन-हथियार और षड्यंत्र फैला रहे हैं। सरकार को न कोई चिन्ता है और न वह स्थिति को सही ढंग से समझ ही पा रही है। फिर क्या, कैसे किया जाए, यह आप नहीं सोचेंगे तो कौन सोचेगा !

प्रश्न बहुत सीधा है कि मस्जिदों में हथियार कहाँ से आए? कैसे सारे देश में योजनाबद्ध ढंग से दंगे भड़के ? किसी भी केन्द्रीय मंत्री ने इस के लिए

दोषी को दोषी कहने का साहस नहीं किया। उल्टे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को कोस कर अपराधियों का साहस बढ़ाया जाता है। कोई पागल भी यह नहीं मानेगा कि रा. स्व. संघ ने मस्जिदों में हथियार दिए होंगे ?

यह तुष्टीकरण की नीति मेरे देश की तबाही का एकमात्र कारण है। अब तो सब कुछ स्पष्ट करना होगा, नीतियां बदलनी होंगी। एक साथ उठ खड़ा होना होगा, वरना कुछ भी नहीं बचेगा।

यह तसवीर का एक पक्ष है। दूसरा पक्ष है विदेशी पादरियों का। त्रिपुरा में हजारों हिन्दुओं का नर-संहार हुआ। क्या आप रोए ? क्या आपके दिल में दर्द हुआ ? क्या आपने अनुभव किया कि कोई बिछुड़ा है आप से ?

सात समुद्र पार से आकर धन के बल पर भारत की भोलीभाली जनता को बहका कर, ईसाई बना कर, देशद्रोह के पाठ पढ़ाना केवल हमारी सरकार सह सकती है। दुनियाँ में और कोई ऐसी मिसाल मिलनी कठिन है। झारखंड में क्या हो रहा है ? नागालैंड में क्या हो रहा है, कौन नहीं जानता, पर वोटों के चक्कर में सब देशद्रोहियों के सामने घुटने टेक रहे हैं।

हम पिछले २५ वर्षों से इन विदेशी पादरियों के विरुद्ध आवाज उठा रहे हैं। इन के षड़्यन्त्रों से देश को सावधान कर रहे हैं, पर कौन सुनता है ?

अब तो पानी सिर से गुजर चुका है। हमारा प्यारा भारत जल रहा है ....और उस की आग मेरे मन को जला रही है। मैं चाहता हूं कि मेरे मन की अग्नि आप के मन तक भी पहुंचे और आप इस्लामी-ईसाई सम्मिलित आक्रमण से देश को बचाने का संकल्प लेकर खड़े हो जाएं।

भारत हमारा है। यह किसी एक वंश या व्यक्ति की जागीर नहीं है। हम भारत माँ के पुत्र जागें और सब से पहले सारे देश को इस विदेशी षड़्यन्त्र व हमले से परिचित कराएं।

हम भारत सरकार से मांग करें

१. सांप्रदायिक तत्त्वों को पूरी शक्ति से कुचला जाए।

२. वर्ग-जाति-मजहब-प्रांत-भाषा के नाम पर अधिकार मांगना देश-द्रोह समझा जाए।

३. देशद्रोह के अपराधियों को मृत्यु दंड दिया जाए।

४. सेना-पुलिस-प्रशासन में जाति के आधार पर भर्ती की नीति को तुरन्त बंद किया जाए।

५. विदेशी पादरियों—पाकिस्तानी नागरिकों को तुरन्त भारत से निकाला जाए।

मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि १—आप आज ही प्रधानमन्त्री, भारत सरकार, नई दिल्ली को पत्र भेज कर इन पांच बातों की मांग करें।

२. जागरण के लिए भारी संख्या में साहित्य बांटें।

३. आपस की बातचीत में अपने मित्रों को संकट से परिचित कराएं।

४. निर्भीक होकर भारत मां की रक्षा का व्रत लें।

५. तन-मन-धन से भारी संघर्ष के लिए तैयार रहें।

हम यह स्पष्ट कर देना चाहते हैं कि हमारा न राजनीति से कोई सम्बन्ध है और न हमारा मुसलमानों या ईसाइयों से कोई द्वेष है। हम तो उन्हें भी प्रभु का पुत्र होने के नाते भाई मानते हैं। किन्तु यदि वे या कोई भी भारत के प्रति द्वेष रखता है, हमारे धर्म पर—संस्कृति-स्वतंत्रता पर तिरछी नज़र डालता है तो उस देशद्रोही के लिए एक ही दंड है—मृत्यु! मुसलमान-ईसाई-हिन्दू व सभी भारतीय भारत के नागरिक होने के नाते शांति से रहें। सब के लिए एक से सरकारी नियम हों। एक-सी सुविधाएं सभी को मिलें। अल्पसंख्यक—बहुसंख्यक की बातें उठाकर, मज़हब की आड़ में हिंसा का तांडव नृत्य हमारा देश बहुत सह चुका, अब और सहना संभव नहीं।

इसलिए मेरी सभी को यह सलाह है कि भारत को मां मानो! प्यार से रहो और छोड़ दो वह जहरीली कहानी, जिस ने लाखों का खून बहाया और पाकिस्तान को जन्म दिया।

हमने आप सभी तक खतरे की घंटी पहुंचा दी है। आप जागें और संगठित हों। अपने कर्त्तव्य और अधिकार को समझें। अपनी दुर्बलताएं छोड़ें और भविष्य के लिए संगठन का मंत्र धारण कर संघर्ष में विजय वरण का व्रत लें।

जहां सत्य : वहां जय।
जहां धर्म : वहां जय।
अधर्म को मिटाना है।
देश-धर्म-संस्कृति को
वेद-शास्त्र-उपनिषदों को
गौ-गंगा-गायत्री को बचाना है।

हमें सब कुछ स्वाहा कर भी भारत मां की स्वतन्त्रता—एकता—अखण्डता की रक्षा करनी है।

—वेदभिक्षुः

भारत अन्तर्राष्ट्रीय षड्यंत्रों के घेरे में

—धर्मपाल शर्मा

स्वतंत्रता का स्वर्ण विहान होकर अभी इसका सुखद प्रकाश करोड़ों देशवासियों की झोंपड़ियों तक पहुंचा भी नहीं था, सैकड़ों वर्ष की दासता के अंधेरे बन्धनों से अभी उन्होंने मुक्ति पाई भी नहीं थी कि इस स्वतंत्रता सूर्य को निगलने वाली काली आंधी चारों ओर से मंडरा उठी। हजारों देशभक्तों के असीम बलिदान से प्राप्त आजादी की रक्षा करने का दायित्व संभालने वाले देशभक्त राष्ट्रवादी भारतीय इस स्वर्ण विहान काल से ही ऐसी गहन निद्रा में सोये रहे कि भारत माता को पराधीनता की बेड़ियों में जकड़ने वाले चोर-लुटेरों ने अपना जाल द्रुतगति से फैलाना शुरू कर दिया। इन विदेशी लुटेरों ने अपने क्रीतदास हस्तकों के बल पर देश के स्वतंत्र उपवन की सीमाओं पर और कशमीर से कन्याकुमारी तथा कच्छ से कामरूप (असम) तक षड्यंत्रों की आग लगानी शुरू कर दी और देशभक्त भारतीय समाज इन सब लपटों से अनजान बनकर शुतुरमुर्ग की तरह रेत में गर्दन गड़ाकर खतरे से अनभिज्ञ बनने का नाटक करता रहा। किन्तु खतरे से आँखें मूंदने से क्या कभी खतरा टला है ?

यद्यपि साम्राज्यवादी शक्तियों का यह खतरा विश्वव्यापी है, किन्तु भारत उनकी षड्यंत्रकारी योजना का मुख्य केन्द्र है। ईसाइयत, इस्लाम और कम्युनिज्म की इन शक्तियों ने समूचे विश्व को अपने खूनी पंजे में समेटने का षड्यंत्र व्यापक पैमाने पर शुरू कर रखा है, किन्तु भारत इन सबको एक ऐसा आकर्षक केन्द्र नजर आ रहा है, जिस पर सबकी गिद्धदृष्टि एक साथ केन्द्रित है। इसका कारण है भारत की भौगोलिक स्थिति और प्राकृतिक संपदाओं से भरपूर इसकी वसुन्धरा। पश्चिमी राष्ट्रों की बहुराष्ट्रीय व्यापार कम्पनियों ने पिछले दिनों लन्दन में हुए सम्मेलन में कहा था कि अतुल खनिज संपदा और कच्चे माल के भंडार के कारण भारत ही एक ऐसा देश है, जहां बहुराष्ट्रीय निगमों के व्यापार की सर्वाधिक संभावनाएं है। उनके अनुसार यह आज भी सोने की चिड़िया है, जिसके पास तकनीक और दोहन शक्ति का अभाव है और इसलिए बहुराष्ट्रीय निगम इस देश में अपने व्यापार की जड़ें गहरी जमा सकते हैं।

पाश्चात्य राष्ट्रों के बहुराष्ट्रीय निगमों के उक्त चिंतन से स्पष्ट है कि रत आज भी उनकी दृष्टि में सोने की चिड़िया है जिस पर उनकी दृष्टि ी हुई है। इन्हीं औद्योगिक चिंतकों के अनुसार भारत का नेतृत्व इन अपार धनों का उपयोग नहीं कर पाया। इसका कारण देश के कुशल तकनीक र दोहन शक्ति की क्षमता में कमी ही रहा है। लेकिन इन तथ्यों कारण यह निर्विवाद है कि साम्राज्यवादी शक्तियों ने अपना उपनिवेश ाने के लिए भारत को उपर्युक्त कारणों से ही सर्वाधिक उपयुक्त समझा र इसे अपने विश्व साम्राज्य की रणभूमि बनाने का संकल्प किया।

पश्चिमी राष्ट्रों का षड्यंत्र

महान् अफ्रीकी स्वातंत्र्य योद्धा जोमो केन्याता ने ईसाई मिशनरियों के ड्यंत्रों का पर्दाफाश करते हुए कहा था, "जब ईसाई मिशनरी इस देश अफ्रीका) में आए तब अफ्रीकियों के पास जमीन थी और मिशनरियों के ास बाइबिल। उन्होंने हमें आंखें बन्द करके प्रार्थना करना सिखाया। जब मने आँखें खोलीं, तब देखा कि उनके पास जमीन है और हमारे पास बाइ-ल।" जोमो केन्याता के इस मार्मिक कथन से स्पष्ट है कि ईसाई मिशनरियों ा विश्वभर में धर्म प्रचार की आड़ में कितने घृणित साम्राज्यवादी विस्तार ा उद्देश्य रहा है। मानवता की सेवा के नाम पर फेंके गये जाल में किस कार इन्होंने संसार भर के लोगों को पराधीनता की जंजीरों में जकड़ा है।

मिशनरियों द्वारा पूर्वांचल में षड्यंत्र

भारत का समस्त पूर्वांचल आज ईसाई मिशनरियों के षड्यंत्रों की पटों में झुलस रहा है। मिजोरम, नागालैंड, मणिपुर, बिहार, मध्यप्रदेश था पश्चिमी बंगाल के आदिवासी क्षेत्रों में मिशनरी षड्यंत्रों के राष्ट्रविरोधी ारनामे अब जगजाहिर हो चुके हैं। इन तीनों राज्यों के १८ जिलों को पृथक् झारखंड राज्य बनाने की मांग ने हिंसात्मक और भूमिगत रूप ले लिया है। न क्षेत्रों के मकानों की दीवारों पर 'भारतीय कुत्तो, वापिस जाओ' जैसे नारे ंकित किए गए हैं। यह सारी समस्या इन क्षेत्रों को धर्मान्तरण द्वारा ईसाई-हुल बनाने के बाद ही शुरू हुई है। त्रिपुरा के नरसंहार के पीछे भी ईसाई मशनरियों के अपार धन और षड्यंत्र का हाथ स्पष्ट हो चुका है। पश्चिम ंगाल में मिशनरियों द्वारा पृथकता की ज्वाला भड़काने के तथ्य को गृह राज्य-मंत्री योगेन्द्र मकवाना ने भी स्वीकार किया है। पश्चिम बंगाल सरकार ने विगत २९ अगस्त को मिशनरियों द्वारा संचालित अनेक संस्थाओंको राष्ट्र-

विरोधी षड्यंत्रों में लिप्त पाये जाने के कारण अपना बोरिया-बिस्तर समेटकर वहां से चले जाने का आदेश दिया है।

पूर्वांचल में ये राष्ट्रविरोधी षड्यंत्र इतने स्पष्ट और विस्फोटक हो गए हैं कि इनके पीछे अब कोई रहस्य छिपा नहीं रह गया है। सत्तासूत्र भी क्योंकि अब धर्मांतरित ईसाईबहुल जनप्रतिनिधियों के हाथ में आ गए हैं, इसलिए यहां समस्त प्रशासनतंत्र द्वारा राष्ट्रवादी लोगों का उत्पीड़न शुरू हो गया है। आर्यसमाज, रामकृष्ण मिशन और वनवासी कल्याण आश्रम जैसी राष्ट्रवादी संस्थाओं के कार्यकर्त्ताओं पर खुले आक्रमण और उनकी हत्याएं शुरू कर दी गई हैं। इस प्रकार स्वतंत्र और धर्मनिरपेक्ष देश में धर्मनिरपेक्षता को ही हथियार बनाकर ईसाइयों ने मजहबी राज्यों की स्थापना शुरू कर दी हैं। धर्मनिरपेक्ष राज्य में मजहबी राज्य स्थापित करने जैसी विडम्बना केवल भारत में ही देखी जा सकती है। यह ज्ञातव्य है कि इन ईसाई मिशनरियों की ऐसी ही राष्ट्रविरोधी गतिविधियों के लिए इन्हें अन्य अनेक देशों ने क्षमा नहीं किया। वहां के प्रबुद्ध जनमत और जागरूक सरकारों ने इन्हें अपने देश की स्वतंत्रता के साथ खिलवाड़ करने की छूट नहीं दी। सूडान में स्वतंत्रता के पश्चात् ऐसे ३० राष्ट्रविरोधी मिशनरियों को देश से निष्कासित किया गया। नेपाल ने सांस्कृतिक आक्रमण के खतरे को भांपकर ईसाई और इस्लाम धर्म-परिवर्तन पर पूर्ण प्रतिबंध लगाकर उनकी समस्त शिक्षण संस्थाओं को अपने अधिकार में ले लिया है। इस प्रकार विश्व के अनेक देशों ने इन मिशनरियों के राजनीतिक षड्यंत्रों से सावधान होकर इन्हें निष्कासित कर दिया है।

विदेशों का अरबों रुपया भारत में झोंककर सेवा के नाम पर छल, प्रलोभन और अत्याचारों के बल पर मिशनरियां द्वारा धर्म परिवर्तन का कुचक्र परमात्मा के पुत्रों को सद्भावनापूर्वक मुक्ति दिलाने के लिए नहीं किया जा रहा, अपितु इसके पीछे भयंकर साम्राज्यवादी साजिश के तहत धर्मान्तरित व्यक्तियों की राष्ट्रीयता बदलने का कुचक्र रहता है।

ये मिशनरी यह मानते हैं कि जिस प्रकार भारत के नेताओं ने द्विराष्ट्र वाद के सिद्धान्त के आधार पर १९४७ में मुसलमानों की मांग पर भारत का विभाजन स्वीकार कर पाकिस्तान का अस्तित्व स्वीकार कर लिया था, इसी प्रकार इन्हें त्रिराष्ट्रवाद के आधार पर एक और विभाजन के लिए विवश कर देना कठिन कार्य नहीं है। आवश्यकता केवल इस बात की है कि धर्मांतरण द्वारा ईसाई बहुमत बनाकर पृथक् ईसाईस्तान की मांग बुलन्द की जाये। इसी योजना के तहत पूर्वांचल में ईसाई राज्य कायम करने और उन्हें

पाश्चात्य राष्ट्रों का उपनिवेश बनाने का इनका गम्भीर षड्यंत्र इस समय चरम बिन्दु पर है।

षड्यंत्र की साक्षियां

ईसाई मिशनरियों द्वारा पूर्वांचल में भड़काई गई देशद्रोह की ज्वाला अचानक नहीं भड़क उठी। भारत में ब्रिटिश शासन के काल से ही इनके षड्यंत्र जारी रहे हैं। स्वतंत्रता के बाद निरन्तर अनेक जांच रिपोर्टों और चेतावनियों द्वारा ये सामने आते रहे हैं, लेकिन भारतीय जनमत की चिर-निद्रा और राष्ट्र के कर्णधार शासकों की उपेक्षा के कारण षड्यंत्र की लपटें आज अनियंत्रित होती दीख रही हैं। मिशनरियों के षड्यंत्रों की जांच के लिए नियुक्त बहुचर्चित नियोगी समिति के सदस्यों ने अपनी रिपोर्ट में इन षड्यंत्रों का रहस्योद्घाटन करते हुए कहा था कि "जब हम जांच के लिए दौरे पर जसपुर क्षेत्र में थे तो वहाँ हमारे सामने यह आम शिकायत सुनी गई कि ईसाई प्रचारक गाँव वालों को कहते फिरते हैं कि जब से जवाहर राज्य स्थापित हुआ है, सुख का नाम-निशान नहीं है। लेकिन हम विश्वास दिलाते हैं कि जवाहर राज्य अब समाप्त होने वाला है और ईसाई राज्य आने वाला है।" इसी प्रकार 'घर बन्धु' नामक-पत्र के जून १६५२ अंक में एक लेख 'निराला राज्य और उसके कर्मचारी' में देशद्रोहपूर्ण सामग्री इस प्रकार छपी थी—"आज हमारे सामने सरगुजा का विस्तृत राज्य है जिसे मसीह के साम्राज्य में मिलाना है।" मसीह साम्राज्य से इनका तात्पर्य पाश्चात्य ईसाई राष्ट्रों से ही है। २४ मई १६७६ को भारत के राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री को भेजे ज्ञापन में नागारानी गाइडिलो ने अपील करते हुए लिखा था—"आपसे मेरी यह साग्रह अपील है कि पाश्चात्य देशों से आ रही अपार धन राशि को, जो हमारी संस्कृति तथा जीवन दर्शन का गला दबोच रही है, कृपा कर कोई कड़ा प्रशासनिक कदम उठाकर शीघ्र बन्द करें।" देशभक्त रानी ने आगे लिखा था—'हम लोग आए दिन यह सुन रहे हैं तथा ईसाई पत्र-पत्रिकाओं में पढ़ रहे हैं कि भारतवर्ष पश्चिमी देशों का ईसाई मिशन फील्ड है और वह हमेशा खुले रूप में यह घोषणा करते हैं कि चाहे जैसे भी हो, भारतवर्ष को ईसा की भूमि में परिवर्तन करना है।"

धर्मप्रचार की आड़ में जासूसी

धर्मप्रचार की आड़ में राष्ट्रविरोधी प्रचार से बड़ा अपराध कुछ ईसाई मिशनरियों द्वारा सीधे जासूसी जैसा जघन्य देशद्रोहपूर्ण कृत्य किया जाना है।

नई दिल्ली से प्रकाशित टाइम्स आफ इंडिया के १७ दिसम्बर १९७५ के अंक में प्रकाशित समाचार के अनुसार "सी. आई. ए. द्वारा ईसाई मिशनरियों का जासूसी के घृणित कार्य के लिए उपयोग किया जाना अत्यधिक चौंका देने वाली बात है। लेकिन इससे भी अधिक चिंताजनक बात यह है कि चर्च स्वयं इस अनुचित कृत्य में लिप्त है। सी. आई. ए. के अध्यक्ष (तत्कालीन) मि. विलियम कोल्बे ने इस तथ्य को गुप्त नहीं रखा कि किस प्रकार कुछ ईसाई पादरी उनके संगठन (सी. आई. ए.) के लिए योजनाबद्ध रूप से अनेक वर्षों तक काम करते रहे हैं।

इतना ही नहीं कि सी. आई. ए. ने विदेशों में इन ईसाई मिशनरियों का उपयोग किया हो, विलियम कोल्बे के कथनानुसार इन तथाकथित प्रभुसेवकों में से अनेक महत्त्वपूर्ण गुप्त जानकारियां स्वयं ही देते रहते हैं।

अमरीकी मिशनरी अनेक विकासशील देशों में कार्य कर रहे हैं। वे इन देशों में योजनाबद्ध रूप से अमरीका समर्थक राजनीतिक वातावरण बनाने का लक्ष्य अपनाकर कार्य कर रहे हैं, लेकिन कांग्रेस में सी. आई. ए. के इन हस्तकों का पर्दाफाश हो जाने के बाद यह संभावना बढ़ गई है कि इन देशों की जनता इनके कार्यों पर सन्देह करे और अधिक देशों की सरकारें इनकी गतिविधियों पर कठोर निगरानी रखें।"

भारत सरकार की धार्मिक सहिष्णुता और धर्मनिरपेक्षता का दुरुपयोग करते हुए ईसाई मिशनरियों ने देश की स्वतंत्रता के विरुद्ध जो षड्यंत्र शुरू किये हुए हैं, उन्हें कोई भी जागरूक सरकार नजर अन्दाज नहीं कर सकती। १७ सितम्बर १९७६ को प्रकाशित 'ब्लिट्ज' साप्ताहिक के एक समाचार के अनुसार "ब्लिट्ज द्वारा इस क्षेत्र का लगभग एक सप्ताह तक गहन सर्वेक्षण करने के दौरान बहुत-से भारतीय मिशनरियों की भारतविरोधी गतिविधियों का पता चला है। इस कार्य के लिए इन्हें राजनयिक माध्यमों से अपार धन दिया जाता है। पीड़ितों और निर्धनों की मदद के नाम पर यहाँ (हिमालय के तराई क्षेत्र में) मुख्य केन्द्रों पर रंगारंग महफिलें आयोजित की जाती हैं, जिनमें सैनिक अधिकारियों को मनोरंजन के लिए आमंत्रित किया जाता है।"

ये कुछ सीमित उदाहरण हैं, जिनसे पता चलता है कि राष्ट्रविरोधी षड्यंत्रों के अतिरिक्त किस प्रकार ईसाई मिशनरी इस देश में पाश्चात्य राष्ट्रों के लिए जासूसी करने जैसे जघन्य अपराध करने में लिप्त हैं।

इस्लामी सांस्कृतिक आक्रमण का खतरा

मुरादाबाद और देश भर में हुए मुस्लिम लीगी मनोवृत्ति के खुले विद्रोह

और पुलिस पर आक्रमण के माध्यम से राज्य के विरुद्ध बगावत ने सामान्य जनता को स्पष्ट कर दिया है कि ये सांप्रदायिक दंगे नहीं अपितु राष्ट्रविरोधी सुनियोजित षड्यंत्र है। एक ही समय पर एक साथ मस्जिद से आग्नेयास्त्रों का अपार भंडार पाया जाना और उसका खुलकर प्रयोग करना साजिश को स्पष्ट कर-देता है। लेकिन देश में हुई इस प्रकार की खूनी साजिशों के कुछ अध्यायों को उलटने से स्पष्ट हो जाता है कि इन वारदातों के पीछे सामयिक उत्तेजना या कोई छोटी-मोटी मांगें नहीं, अपितु एक विस्तृत विभाजन की दूसरी योजना ही है। दुर्भाग्य से मुस्लिम संघर्ष की इस सुनियोजित चाल को देश का नेतृत्व और राष्ट्रवादी जनता या तो शायद समझती नहीं है या जानबूझकर इसकी उपेक्षा की जाती है।

देखने में आया है कि मक्का में अलअक्सा मस्जिद पर किसी सशस्त्र मुस्लिम गिरोह द्वारा आक्रमण किया गया हो, लन्दन में कुछ ईरानी छापामारों को बंधक बनाया गया हो अथवा विश्व में कहीं कोई भी ऐसी मुस्लिम गड़बड़ रही हो, भारत के मुस्लिम लीगी यहां दंगे प्रारंभ कर देते हैं और हिन्दू मन्दिरों और मूर्तियों को तोड़कर तथा उनकी हत्या करके अपना रोष प्रकट करते हैं। प्रश्न यह उठता है कि इन घटनाओं का भारत में हिन्दुओं से विरोध का क्या अर्थ है ? क्या हिन्दुओं के कहने से ये घटनाएं विश्व में घटित होती हैं ? स्पष्ट है कि समय-समय पर मुस्लिम सशस्त्र शक्ति के प्रयोग का बहाना ढूंढकर ये तत्त्व विभाजन का पूर्वाभ्यास किया करते हैं और देखा करते हैं कि यह तैयारी किस मात्रा में देश में फैली और बढ़ी है।

भारत में एक पृथक् पाकिस्तान बनाने का यह इस्लामी षड्यंत्र १९४७ के विभाजान के बाद से ही प्रारंभ हो चुका है। अतीत में मुरादाबाद में हुए दंगों में इस प्रकार के नक्शे भी ऐसे तत्त्वों से प्राप्त हुए हैं, जिनमें भारत के मुस्लिमबहुल भाग विशेषकर उत्तर प्रदेश के कुछ जिलों को, जिनमें बिजनौर, मुरादाबाद, रामपुर, मेरठ आदि हैं, पाकिस्तान के नक्शे में दिखाया गया है। इस बृहत् योजना का उद्देश्य यह है कि अन्ततोगत्वा पश्चिमी पाकिस्तान से असम तक के क्षेत्र को जोड़ने वाले क्षेत्र को पाकिस्तान में मिला लिया जाये, ताकि शेष भारत में निर्बाध राष्ट्रविरोधी षड्यंत्र करने के लिए पाकिस्तानी सपर्क सड़क मार्ग से अटूट बना रह सके। फिर समस्त भारत पर हरा परचम लहराया जा सके। इस योजना को मूर्त्तरूप देने के लिए देश में लगभग ७९ हजार पाक एजेन्ट कार्यरत हैं, जिनमें से लगभग ५ हजार मुरादाबाद जिले में हैं। मुरादाबाद जिले को इस सारी योजना का विशेष कार्य संचालन केन्द्र

बनाया गया है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए अरब राष्ट्रों के धन की मदद से एक मुस्लिम नेता ने मुरादाबाद के चारों ओर १० मील क्षेत्र में भूमि खरीदी है, जिसमें अपार धन से १० मुस्लिम बस्तियों का निर्माण शुरू हो गया है। बंगलादेश से आए बिहारी मुसलमानों और पाक एजेन्टों को वहां बसाने की योजना प्रारंभ हो गई है। विशेष गतिविधियों का सशक्त केन्द्र बनाने के लिए इस सीमित क्षेत्र में दो अरबी मुस्लिम विश्वविद्यालयों का निर्माण भी शुरू है, ताकि अलीगढ़ की भांति इस क्षेत्र को विद्वेष और सांप्रदायिकता के प्रशिक्षण का बड़ा केन्द्र बनाया जा सके। यह सब कुछ दिन के खुले प्रकाश में भारत सरकार की जानकारी में हो रहा है और मातृभूमि के इस पुनर्विभाजन के खेल को हम नग्न सत्य के रूप में देखने के लिए विवश हो रहे हैं। अपनी शक्ति और भारतीय जनता तथा सरकार के प्रतिरोध को नापने के लिए व्यापक कुचक्र एक साथ दिखाई दे रहा है। भारत में स्थान-स्थान पर राष्ट्रध्वज फाड़कर पैरों तले रौंदा जाता है। पाकिस्तान जिंदाबाद नारे लगाए जाते हैं और उसी समय सुनियोजित ढंग से पाक जासूसों द्वारा मुरादाबाद के दंगों की ली गई फिल्में पाकिस्तान टेलीविजन पर प्रदर्शित की जाती हैं तथा पाक समाचारपत्रों में तीखे लेख लिखकर इस षड्यंत्रकारी मनोवृत्ति को मदद पहुंचाई जाती है। इस सारे षड्यंत्र को राजनीतिक नेता, सत्ताधारी दल और भारतीय जनता तरह-तरह के नाम देकर लीपापोती करना चाहते हैं, जब कि वास्तविकता स्पष्ट है कि मातृभूमि के विभाजन का सुनियोजित षड्यंत्र अपनी जड़ें फैला रहा है, जिन्हें समय से पूर्व न उखाड़ा गया, तो मुस्लिम पृथक्ता के इस विषवृक्ष के विषमय परिणाम हमें शीघ्र ही भोगने पड़ेंगे।

षड्यंत्र अन्तर्राष्ट्रीय है

भारत में इस्लामी पृथक्तावाद और नया पाकिस्तान बनाने के षड्यंत्र की जड़ें सामान्य धरातल से कहीं नीचे बहुत गहरी हैं। यह षड्यंत्र अन्तर्राष्ट्रीय है। इसकी वास्तविकता को समझ कर ही इस खतरे की गम्भीरता को समझा जा सकता है। गत वर्ष लन्दन में सम्पन्न मुस्लिम देशों के सम्मेलन में यह फैसला किया गया था कि गैर-मुस्लिम सरकारों के कब्जे से मुस्लिम भूभागों को मुक्त कराने के लिए अभियान छेड़ा जाये और उक्त निर्णय के अन्तर्गत यह मांग भी की गई कि जम्मू-कश्मीर के मामले में निष्पक्ष जनमत-संग्रह कराया जाये। इस सम्मेलन में २७ मुस्लिम राष्ट्रों के करीब एक सौ प्रतिनिधियों ने भाग लिया था। मुस्लिम देशों के उक्त सम्मेलन में लिए गए

निर्णयों तथा पारित किए गए प्रस्तावों से यह बात साफ हो गई है कि अन्तर-राष्ट्रीय क्षेत्र में इस्लाम के नाम पर एक नई सांप्रदायिक और जहरीली शक्ति खड़ी करने का प्रयास किया जा रहा है। मुस्लिम देशों के मुल्ला-मौलवियों का यह षड्यंत्र यदि सफल हो जाता है, तो सारे विश्व में सांप्रदायिकता की आग भड़कने की संभावना हो सकती है, जिसके दूरगामी परिणाम विश्व की सभ्यता और संस्कृति के लिए बड़े खतरनाक होंगे।

यह एक विडंबना है कि जब अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में मानवता और बन्धुत्व के प्रयास किये जा रहे हैं, संयुक्त राष्ट्र संघ की अनेक संस्थाएं विश्व को एक सूत्र में बाँधने के लिए प्रयत्नशील हैं, उसी समय अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में मुस्लिम साम्राज्यवाद की बात की जा रही है। अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में जब सौहार्द का वातावरण बनाने के प्रयत्न जारी हैं, तब इस प्रकार के इस्लामी सम्मेलनों का आयोजन और इनके प्रस्तावों द्वारा घृणा और हिंसा का वातावरण बनाने की पृष्ठभूमि तैयार की जा रही है।

इस्लामी राष्ट्रों की साजिश है कि मुस्लिम जनसंख्या के दबाव वाले देशों के इस्लामीकरण के लिए द्रुत गति से सुनियोजित उपाय किए जाएं, ताकि उन्हें स्वतंत्र इस्लामी राज्य बनाया जा सके। इस कार्य के लिए दक्षिण एशिया में इस्लामीकरण के लिए मुस्लिम राष्ट्रों ने २० अरब रुपये की राशि तय की है। इस धन के द्वारा दक्षिण-पूर्व एशिया के इन देशों में मुसलमानों को सैनिक आधार पर संगठित करने की योजना बनाई गई है, ताकि वे अल्प-संख्यक होने के बावजूद अपने संगठित शस्त्र बल के आधार पर उन देशों में अपनी अधिकतम मांगें मनवाकर इस्लामीकरण की पृष्ठभूमि बनाने के कार्य को आगे बढ़ा सकें। अपनी शक्ति का परिचय देने के लिए समय-समय पर दंगे और सशस्त्र संघर्ष भी इसी योजना का अंग हैं। पाकिस्तान इस इस्लामी योजना का नेतृत्व करने की कोशिश कर रहा हैं। पाकिस्तान की भौगोलिक स्थिति, विस्तार तथा जनसंख्या इस नेतृत्व के लिए प्रमुख प्रेरक कारण हैं। इसलिए इस्लामी राष्ट्रों द्वारा इस्लामी अणुबम बनाने के लिए पाकिस्तान को हर प्रकार की मदद दी जा रही है। इस उद्देश्य के लिए इस्लामिक इन्स्टीट्यूट आफ डिफेंस टैक्नॉलॉजी की स्थापना भी की गई है। इस्लामी राष्ट्रों की योजना है कि मुस्लिम राष्ट्रों की तीसरी सैन्यशक्ति के केन्द्र के रूप में पाकिस्तान को विकसित किया जावे। इस प्रकार पाकिस्तान न केवल भारत विभाजन के स्वप्न देखता है, अपितु इस्लामी राष्ट्रों की शह से यह विश्व के इस्लामीकरण का नेतृत्व करना चाह रहा है। बहरहाल इस पृष्ठभूमि में

अन्तर्राष्ट्रीय षड्यंत्रों की पूर्ति के लिए काफी बड़ी जनसंख्या वाले, सुरम्य भारत पर मुस्लिम राष्ट्रों की दृष्टि केन्द्रित है और वे सर्वप्रथम किसी न किसी प्रकार इस विशाल साधनसंपन्न और विशिष्ट देश को इस्लामी देश बनाने का स्वप्न पूरा कर लेना चाहते हैं।

इस्लामी सभ्यता का रूप

विश्व के इस्लामीकरण की योजना बनाने वाली यह इस्लामी व्यवस्था संसार को सुख-शान्ति और प्रगति का सन्देश देने वाली नहीं है, अपितु भरा-नक विनाश के नरक में झोंकने वाली है। इस्लामी राष्ट्रों के आपसी नर-संहार और क्रूरता के परिप्रेक्ष्य में इसे देखा जा सकता है। पाकिस्तान का इतिहास हमारे सामने है, जहाँ कभी जनतंत्र का नामो-निशान नहीं रहा, जिसके शासकों का दुःखद अन्त क्रमशः निर्वासन और हत्याओं के रूप में होता रहा है। पाकिस्तानी जन्नत का हश्र भी स्पष्ट ही है। वहां आर्थिक ढांचा चरमरा रहा है। सामान्य नागरिक कराह रहा है। ईरान में शाह के सत्ता से हटने के बाद आयतुल्ला खुमैनी के मतान्ध नेतृत्व में हजारों लोगों को मौत के घाट उतारा जा रहा है। क्रान्ति अपनी ही सन्तानों का भक्षण कर रही है। ईरान को फिर १३वीं शताब्दी के गहरे अंधेरे में ढकेलने की कोशिश हो रही है। यही कोशिश पाकिस्तान और अन्य इस्लामी राष्ट्रों में भी जारी है। नतीजा यह है कि नई सभ्यता और बीसवीं शताब्दी की जागृत परम्पराओं में उड़ान भरने वाली नई पीढ़ी १३वीं सदी के अंधेरे और दकियानूसी माहौल में लौटने को तैयार नहीं है। इसलिए इन इस्लामी देशों में ज्वालामुखी सुलग रहा है, जो सैनिक और निरंकुश तानाशाही शासकों की बन्दूक तले कुछ समय के लिए भले ही दब जाये, लेकिन अन्ततोगत्वा इन्हें भी उखाड़ फेंकेगा। इस्लामी स्वर्ग के ये फरिश्ते दुनिया को अपना अंधेरा बांटने चले हैं। इस अंधेरे और जहालत में पनप रहे अपराधों की कोई सीमा नहीं। इन्हें दबाने के लिए बर्बर युग के दंडविधान कोड़ों, पत्थरों से मार-मार-कर संगसार करना और हाथ-पैर काटना आदि सजाओं का प्रयोग किया जा रहा है, लेकिन अपराध बढ़ते ही जा रहे हैं।

अन्तर्राष्ट्रीय कुचक्रों के तहत इस प्रकार ईसाई मिशनरियों और मुस्लिम देशों के षड्यंत्र देश की सीमाओं और आन्तरिक शान्ति-व्यवस्था के लिए भयंकर खतरा बन चुके हैं। सांस्कृतिक आक्रमण, धर्म परिवर्तन और फिर सीधी कार्रवाई के द्वारा स्थिति को विस्फोटक बनाकर न केवल भारतीय सभ्यता, संस्कृति और जीवन मूल्यों के लिए खतरा पैदा किया जा रहा है,

अपितु इस देश के हिन्दू समाज का अस्तित्व ही संकटग्रस्त बनाया जा रहा है।

यह ऐतिहासिक सत्य है कि धर्मान्तरण और विदेशी घुसपैठ द्वारा जहां-जहां हिन्दू समाज अल्पमत में हुआ और ईसाई या इस्लाम मतावलम्बी समाज बहुसंख्या में हुआ, उन भागों में भारत-विरोधी भावनाएं पनपीं और वहां से पृथक्ता के स्वर उभरे हैं। भारत-विभाजन द्वारा इसी आधार पर पाकिस्तान की स्थापना के बाद सीमावर्ती क्षेत्रों को सुनियोजित ढंग से मुस्लिम और ईसाई-बहुल बनाने के ये अन्तर्राष्ट्रीय षड्यंत्र चलते रहे हैं। जनसंख्या के दबाव के जोर पर पृथक् राज्यों की मांग और उसके बाद इन सीमावर्ती क्षेत्रों में विदेशी अड्डे बनाकर देश की स्वतंत्रता पर आघात करने का सीधा मार्ग खोजना इन शक्तियों का उद्देश्य है। यह भी एक कटु सत्य है कि ऐसे विधर्मी क्षेत्रों से हिन्दू समाज का सदैव क्रूरतापूर्वक निष्कासन होता रहा है और वह अपने ही घर में पराया बनकर या तो मौत के घाट उतारा गया है अथवा द्वितीय श्रेणी का नागरिक बनकर रह गया है। पाकिस्तान में बच रहे ३ करोड़ हिन्दुओं की संख्या घटकर एक करोड़ से भी कम रह जाना और भारत के ४ करोड़ मुसलमानों की संख्या बढ़कर ६ करोड़ तक हो जाना इसी तथ्य का परिचायक है। अतः सारे भारत में विदेशी घुसपैठ और आक्रमणों के बाद हिन्दू जीवन मूल्यों और इस समाज के लिए हिन्द महासागर के सिवा कहीं स्थान शेष नहीं रह जाता। विश्व के अन्य देशों में भी हिन्दू प्रवासियों की उपेक्षा और दुर्दशा इस तथ्य का द्योतक है। इसलिए भारत पर हो रहे वर्तमान सांस्कृतिक आक्रमण न केवल भारत की भौगोलिक सुरक्षा के लिए खतरे का संकेत करते हैं, अपितु ये हिन्दू समाज के अस्तित्व के लिए भी गम्भीर खतरा हैं।

संपूर्ण विश्लेषण के परिप्रेक्ष्य में यह स्पष्ट है कि यदि भारत और हिन्दू समाज का अस्तित्व सम्भव है, तो वह केवल राष्ट्रीय चेतना के जागरण से ही संभव है। धर्मनिरपेक्षता की आड़ में द्रुत गति से मजहबी राज्य समर्थक शक्तियाँ पनप रही हैं और ये ऐसी सांप्रदायिक व मजहबी शक्तियाँ हैं, जिनकी निष्ठा भारत के बाहर है तथा जिनकी असहिष्णुतापूर्ण मनोरचना में धर्मनिरपेक्षता के लिए कोई स्थान नहीं हैं। अतः भारतीय जीवन मूल्यों, राष्ट्रीय सुरक्षा और गौरवमयी संस्कृति की रक्षा के मार्ग में वर्तमान संकट राष्ट्रवादी तत्त्वों के लिए एक गम्भीर चुनौती है। यदि समय रहते इस संकट की चुनौती को स्वीकार कर राष्ट्रीय जनमत जागृत न किया गया, तो षड्यंत्रकारी शक्तियां स्वतत्रता के अरुणोदय काल में ही देश के स्वातन्त्र्य सूर्य को ग्रस्त कर लेंगी, इसमें सन्देह नहीं है।

शुद्धि सनातन है

भूमिका

क्रान्ति मन्त्र : शुद्धि

भारत की सांप्रदायिक समस्या का हल भारत के एक महान् मनीषी ने बताया था—शुद्धि । शुद्धि का अर्थ है स्वच्छता। स्वच्छता अर्थात प्रत्येक प्रकार की गन्दगी को दूर करना। घर अशुद्ध हो तो यह रहने योग्य नहीं रहता, विचार अशुद्ध हों तो वे जीवन को दुःखद बना देते हैं। मनुष्य में जब अशुद्धि आती है तो वह गन्दा दीखता है और विचार चिन्तन का भटकाव उसे पशु बना देना है।

झगड़े क्यों होते है, विचारों की अशुद्धि से, ईर्ष्या द्वेष क्रोध, पाप सबका जन्म अशुद्ध विचारों का परिणाम ही तो है। इसलिए मनुष्य को मनुष्य बनाने का एक मात्र मार्ग है शुद्धि।

संसार में मनुष्य को मनुष्य बन कर रहना सिखाने के लिए सृष्टि के आरम्भ में ही प्रभू ने जो ज्ञान दिया, वह ही धर्म का आधार है। जब तक मनुष्य उस द्वारा दिखाए गए मार्ग पर चलता रहा तब तक धारती पर सुख आनन्द का राज्य रहा, किन्तु जैसे जैसे मनुष्य प्रभु के दिखाए मार्ग को भूलकर मनुष्य के दिखाए मार्ग पर चलने लगा, धरती पर युद्ध - द्वेष, और घृणा का साम्राज्य छाता गया और पशुता सिर उठाती गयी।

सांप्रदायिकता क्या है? अलगाव का घृणित प्रदर्शन, स्वार्थ का नर्तन, भेद की दीवारों का प्रदर्शन। मनुष्य को मानवता, नैतिकता का पाठ पढ़ाने वाला धर्म है और उसे स्वार्थ—उन्हें बेईमानी का रास्ता दिखाने वाला मजहब है।

इसी तथ्य को समझकर युग-प्रणेता स्वामी दयानन्द सरस्वती ने संसार के सभी मजहबों को समाप्त करने का आह्वान किया था। महान् श्रद्धानन्द ने इसी सत्य को जानकर मनुष्य को मनुष्य से लड़ाने वाली जहरीली मजहबी विचारधाराओं से मनुष्य को मुक्त करने के लिए शुद्धि का क्रान्ति मंत्र फूंका था।

आज भी और कल भी, यहां भी और वहां भी, अलगाव और घृणा के, द्वेष और युद्ध के संदेश वाहक मनुष्यकृत मजहब रहेंगे वहां पशुतः नाचती रहेगी। राक्षस उत्पन्न होते रहेंगे, युद्ध चलेंगे, और खून बहेगा।

इस विनाश से रक्षा का मार्ग है केवल एक शुद्धि। विचारों की शुद्धि, शरीर की शुद्धि और समाप्ति उन सब भावों की, जो मनुष्य को राक्षस बनाते हैं।

हम आज भी भारत में सांप्रदायिक उपद्रव देख रहे हैं। १९२० से ८० तक गांधी की विचारधारा पूर्णतया असफल रही है। क्या आज यह आवश्यक

नही कि अब हम गांधीजी के बड़े भाई स्वामी श्रद्धानन्द की विचारधारा को अजमा कर देखें। अब तक हमने नकली मेल का चक्र चलाया, अब असली एकता का मार्ग पकड़ें।

हम मिटा दें उस जहरीली शिक्षा को जो मनुष्यों को राक्षस बनाती है। जो अपने विरुद्ध विचार रखने वालों को कत्ल कर मार डालने का आदेश देती है।

भारत के वे करोड़ों मुसलमान और ईसाई बन्धु जो इस्लामी और ईसाईत की शिक्षा के कारण प्रभु के चरणों से दूर है, एक बार परमात्मा के बेटे बन कर तो देखे। मजहब का कड़वा प्याला तो वे पीते रहे, अब अमृत को चख कर तो परखें। सचमुच उनका जीवन बदल जाएगा।

भारत की एकता का मार्ग है शुद्धि, मनुष्य को मनुष्य से प्यार सिखाने वाला मंत्र है शुद्धि ईश्वर की ज्योति को ग्रहण करने का साधन है "शुद्धि"। शुद्धि से साम्प्रदायिकता जड़ मूल से नष्ट हो जाएगी, दंगों का नाम निशान तक मिट जाएगा। मजहब ने जो विनाश लीला दिखा रखी है उसके स्थान पर सभी मिलकर निर्माण में लगेंगे।

देशवासी शुद्धि का महत्व समझें। ईसाई—मुसलमानों को पवित्र करने वाला यह एक ऐसा अमोघ अस्त्र है जो उनके मन-मस्तिष्क को प्यार से भर देगा।

शुद्धि द्वारा वे व्यक्ति की पूजा छोड़ कर प्रभु की, एक ईश्वर की पूजा का रास्ता पकड़ें। सत्य, प्रेम, क्षमा, दान, संतोष जैसे पवित्र भाव हृदय में धारण करें। किसी की हत्या, किसी को मारना, किसी से घृणा करना छोड़ें और भारत की उस महान् परम्परा के सूत्र में आबद्ध हो जाएं जिसके कारण भारत संसार का सिरमौर रहा है।

आज जब फिर सांप्रदयिकता के सांप ने देश की शान्ति को चुनौती दी है तब हम सारे देश को शुद्धि मंत्र द्वारा पूत—पावन होने का आवाहन करते हैं।

हम भारत मां के ६० करोड़ बेटे एक स्वर में, एक राह पर चलने के लिए शुद्धि यज्ञ में उन सब विचारों की आहुति दे दें जो हममें अलगाव उत्पन्न करते हैं।

महानाश की लपटें देश को भस्म कर दें, इससे पहले धर्म के पहरेदारों को शुद्धि का मंत्र—चक्र फिर से चलाने का संकल्प लेना होगा। भारत मां के लौह लाड़लों को एक बार फिर मां की रक्षा के लिए शुद्धि चक्र चलाना होगा, भले ही हमें सैकड़ों श्रद्धानन्द शहीद करने पड़ें, मां की रक्षा के लिए हम आगे बढ़ें यही समय की मांग है।

—वेदभिक्षुः

शुद्धि सनातन है

—स्वर्गीय देशभक्त कुंवर चांदकरण शारदा

प्रस्तुत रचना पुस्तिका के रूप में सन् १९२५ में दयानन्द जन्म-शताब्दी (मथुरा) के अवसर पर प्रकाशित हुई थी। अब इसे कुछ सामयिक परिवर्त्तन के साथ पुनः प्रकाशित किया जा रहा है। यह रचना आज भी उतनी ही उपयोगी है, जितनी अपने प्रथम मुद्रण के समय थी—

सम्पादक

हिन्दू जाति ४ भागों में विभक्त है—ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र। उत्तर भारत में ये चारों वर्ण विद्यमान हैं और दक्षिण भारत में केवल दो वर्ण विद्यमान हैं—ब्राह्मण और शूद्र। दाक्षिणात्यों का कहना है कि परशुरामजी ने क्षत्रियों का नाश कर दिया अतः जो पीछे दक्षिण में राजा हुए वे सब शूद्र हुए। प्राचीन हिन्दू शास्त्रों के देखने से यह स्पष्ट विदित होता है कि पहले दो प्रकार के विवाह होते थे—एक तो अनुलोम और दूसरा प्रतिलोम। अनुलोम तो उसे कहते हैं, जिसमें उच्च जाति का ब्राह्मण क्षत्रिय, वैश्य अपने से नीच जाति वाली स्त्री से विवाह करे और प्रतिलोम उसे कहते हैं, जिसमें उच्च जाति वाली स्त्री अपने से नीच जाति वाले पुरुष से विवाह करले, परन्तु उपरोक्त शास्त्रसमर्थित विवाहों द्वारा उत्पन्न हुई संतति के विद्यमान रहने पर भी हिंदू जनता का यह विश्वास है कि ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य ये द्विज हैं और इनके अन्दर रुधिर की पवित्रता है, अर्थात् सृष्टि की आदि में जो ब्राह्मण थे उन्हीं की वंशपरम्परा अब तक वर्तमान है। उसमें कोई बाहरी मिलावट नहीं हुई है। एवं जो क्षत्रिय हैं वे बिना किसी बाह्य मिश्रण के आदिम

क्षत्रियों के वंशज हैं। कुछ लोग यह भी कहते हैं कि हिन्दू धर्म विदेशी व विधर्मी को कभी हिन्दू जाति व धर्म में प्रविष्ट होने की आज्ञा नहीं देता। अब हमें जिस विषय पर विचार करना है वह यह है कि आया हमारे प्राचीन महर्षि दूसरों को अर्थात् विदेशियों को हिन्दूधर्म में सम्मिलित करते थे या नहीं व धर्मभ्रष्ट, पतित पीछे से प्रायश्चित्त द्वारा मिलाये जाते थे या नहीं।

हिन्दुओं की सबसे प्राचीन धर्म पुस्तकें वेद हैं। वेदों को हम ईश्वरीय ज्ञान मानते हैं। वेदों में न केवल 'यथेमां वाचं कल्याणीम्' वाले मन्त्र से सब को वेद पढ़ने की आज्ञा है अपितु 'पुनन्तु मा देवजनाः' वाले मन्त्र से सारे विश्व को पवित्र करने की आज्ञा है। यही नहीं, ऋग्वेद ९-६३-५ में—

'इन्द्रं वर्धन्तो अप्तुरः कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' मन्त्र द्वारा ईश्वर की महिमा बढ़ाते हुए सब संसार को आर्य बनाने की आज्ञा है। ऋग्वेद १०। १३७। १ में यह मन्त्र आता है—

उत देवा अवहितं देवा उन्नयथा पुनः।
उतागश्चक्रुषं देवा देवा जीवयथा पुनः॥

जो गिरे हैं उनको पुनः उठावो। जिन्होंने पाप किया है, जिनका जीवन मैला हो गया है उनको फिर से जीवन दो और शुद्ध करो।

इतनी स्पष्ट आज्ञाओं के अतिरिक्त वेदों के मन्त्रद्रष्टा ऋषियों के इतिहास देखने से स्पष्ट विदित होता है कि सब वर्णों में से वेदों के मन्त्रद्रष्टा ऋषि हुए हैं।

वेदों के मन्त्रद्रष्टा ऋषि पृथक्-पृथक् हुए हैं। ऋग्वेद के १० मण्डल हैं। इसके मन्त्रों के पृथक्-पृथक् ऋषि हैं। इन ऋषियों की नामावली देखने से स्पष्ट पता लगता है कि ये मन्त्रद्रष्टा ऋषि सब के सब ब्राह्मण ही नहीं थे। ऋग्वेद के तीसरे मण्डल के मन्त्रद्रष्टा ऋषि विश्वामित्र और उनके कुटुम्बी हुए हैं। प्रत्येक हिन्दू जानता है कि महर्षि विश्वामित्र क्षत्रिय थे, ब्राह्मण नहीं थे। ऋग्वेद के चतुर्थ मण्डल के ४३वें व ४४वें मन्त्र के द्रष्टा अजमीढ़ और पुरमीढ़ ऋषि हुए हैं। विष्णुपुराण में लिखा है कि अजमीढ़ और पुरमीढ़ क्षत्रिय थे। महाभारत के "अनुशासन पर्व" में लिखा है कि विश्वामित्रजी कठिन तपस्या के बाद ब्राह्मण बने—

ततो ब्राह्मणतां यातो विश्वामित्रो महातपाः।
क्षत्रियोऽपि च सोऽत्यर्थं ब्रह्मदेशस्थकारकः॥

और ब्राह्मणों में जो कौशिक गोत्र वाले ब्राह्मण हैं वे विश्वामित्र के ही वंशज हैं और आज तक ब्राह्मण लोग कौशिकगोत्रीय ब्राह्मणों के साथ विवाह

आदि सब प्रकार के सम्बन्ध करते आये हैं। इससे स्पष्ट सिद्ध हुआ है कि ब्राह्मण और क्षत्रिय का रक्त परस्पर मिल जाता है और जो अभिमानी ब्राह्मण रक्त की पवित्रता की डींग मारते हैं उनका सिद्धान्त शास्त्रानुकूल नहीं है। जिस समय द्रौपदी का स्वयंवर हुआ था उस समय पाण्डव ब्राह्मण वेश में आये थे और अर्जुन ने ब्राह्मणवेश में ही मछली की आंख बींध कर द्रौपदी को स्वयंवर में जीता था। इससे सिद्ध है कि प्राचीन समय में ब्राह्मण क्षत्रिय आपस में विवाह करते थे। इसी प्रकार सीता स्वयंवर में धनुष तोड़ने के लिए रावण जैसे ब्राह्मण आये थे और सीता से विवाह करने के लिए उद्यत थे। इससे भी यही सिद्ध होता है कि ब्राह्मण और क्षत्रिय का आपस में विवाह होता था। ये "काण्वायन" ब्राह्मण अजमीढ़ क्षत्रिय के पुत्र 'कण्व ऋषि' की सन्तति हैं। इसी प्रकार वैश्य लोग भी ब्राह्मण बन जाते थे। हरिवंश पुराण में लिखा है कि नाभागारिष्ट वैश्य के दोनों लड़के वैश्य से ब्राह्मण बन गये। "नाभागारिष्टपुत्रौ द्वौ वैश्यौ ब्राह्मणतां गतौ" ६५६ ॥ कवश, एलूष शूद्र थे परन्तु इनकी धार्मिकता के कारण ऋषियों ने इन्हें अपने मण्डल में मिला लिया था। जानश्रुति पौत्रायण नाम का एक शूद्र भी राजा हो गया था और तत्पश्चात् ब्रह्मज्ञान प्राप्त कर ब्राह्मण बन गया था।

ये सब बातें स्पष्टतया यही प्रमाणित करती हैं कि हिन्दूजाति में परस्पर चारों वर्णों में विवाहसम्बन्ध होता था और हिन्दू-जाति एक थी। कविवर कालिदास की प्रसिद्ध शकुन्तला कैसे उत्पन्न हुई थी? विश्वामित्र ऋषि ने मेनका अप्सरा से सम्भोग किया तब विश्वामित्र के वीर्य से वह पैदा हुई। इस प्रकार उत्पन्न शकुन्तला से प्रसिद्ध क्षत्रिय राजा दुष्यन्त ने विवाह कर लिया, जिससे स्पष्ट प्रतीत होता है कि कर्म ही प्रधान था और सब जानते हैं कि "शूद्रो ब्राह्मणतामेति ब्राह्मणश्चैति शूद्रताम्" अर्थात् कर्म से शूद्र ब्राह्मण हो जाता था और ब्राह्मण शूद्र।

ब्राह्मणों में वशिष्ठ गोत्र वाले बहुत पवित्र माने जाते हैं। परन्तु वशिष्ठ गोत्र वाले कौन थे? यह बात महाभारत के निम्नलिखित श्लोक से विदित होती है—

> गणिकागर्भसम्भूतो वशिष्ठश्च महामुनिः,
> तपसा ब्राह्मणो जातः संस्कारस्तत्र कारणम् ॥

महर्षि वशिष्ठ वेश्या के गर्भ से पैदा हुए परन्तु अपनी तपस्या के कारण ब्राह्मण पद को प्राप्त हो गये। ऋग्वेद के सातवें मण्डल के मन्त्रद्रष्टा ऋषि वशिष्ठजी ही हैं। इसी प्रकार व्यासजी महाराज जिन्होने महाभारत रचा,

उनकी तथा पराशर ऋषि की भी उत्पत्ति महाभारत के वनपर्व में शूद्रकुल से बताई गई है । पराशर ऋषि चांडाली के पेट से पैदा हुए और व्यासजी मछुए की पुत्री योजनगन्धा के पेट से उत्पन्न हुए —

जातो व्यासस्तु कैवर्त्याः श्वपच्यास्तु पराशरः ।
बहवोऽन्येऽपि विप्रत्वं प्राप्ता ये पूर्वमद्विजाः ॥

पराशर मुनि ने योजनगन्धा मछलीमार की पुत्री से सम्भोग किया, तब व्यासजी उत्पन्न हुए । फिर उसी योजनगन्धा का विवाह राजा शान्तनु के साथ हुआ । उसके पुत्र चित्राङ्गद और विचित्रवीर्य्य भारतवर्ष के राज्य के मालिक हुए । उनकी रानियों से व्यासजी ने नियोग कर के पांडु और धृतराष्ट्र को पैदा किया । दासी से भोग किया उससे विदुरजी पैदा हुए ।

पीछे के काल में भी याज्ञवल्क्यस्मृति के अध्याय ४ में लिखा है कि—

जात्युत्कर्षो युगे ज्ञेयः पञ्चमे सप्तमेऽपि वा ।
व्यत्यये कर्मणां साम्यं पूर्ववच्चाधरोत्तरम् ॥

इसके पश्चात् याज्ञवल्क्य स्मृति के प्रसिद्ध टीकाकार विज्ञानेश्वर भट्ट ने मिताक्षरा में लिखा है कि सातवीं पीढ़ी में वा पांचवीं पीढ़ी में ब्राह्मण का निषादी के साथ विवाह होने पर उनके पुत्र व पुत्री ब्राह्मण बन जाते थे । इसी प्रकार मनुस्मृति में भी लिखा है । देखो मनु० अध्याय १० । श्लोक ६४

शूद्रायां ब्राह्मणाज्जातः श्रेयसा चेत् प्रजायते ।
अश्रेयाञ्छ्रेयसीं जातिं गच्छत्यासप्तमाद्युगात् ॥

इससे सिद्ध हो गया कि शूद्रा से विवाह करने पर भी ६वीं व ७वीं पीढ़ी में उसकी संतति ब्राह्मण बन जाती थी । कुल्लूक भट्ट (मनुस्मृति के प्रसिद्ध टीकाकार) ने तो यहां तक लिखा है कि यदि शूद्र ब्राह्मणी के साथ विवाह कर ले और उससे पुत्र उत्पन्न हो तो वह पहली पीढ़ी में ही ब्राह्मण हो जायेगा और यदि ७ पीढ़ी तक बराबर शूद्रों में विवाह करेगा तो शूद्र होगा, नहीं तो शूद्रों में विवाह करने पर भी ३ पीढ़ी तक तो बराबर ब्राह्मण ही रहेगा।

अतः ब्राह्मण में शूद्र का खून विद्यमान है और उच्च जातियों के रक्त की पवित्रता वाला सिद्धान्त प्राचीन शास्त्रों के आधार पर मिथ्या साबित होता है । पुराणों में स्थान-स्थान पर ब्रह्मक्षत्र शब्द आता है। इसके मायने यह हैं कि जो क्षत्रिय-ब्राह्मण और क्षत्रिय दोनों के गुणों से सम्पन्न होते थे वे ही ब्रह्मक्षत्रिय कहलाते थे । इसका अर्थ कई यह भी लगाते हैं कि क्षत्रिय थे परन्तु

उसकी संतति ब्राह्मण हुई वे ब्रह्मक्षत्रिय हैं और कहीं पर यह भी अर्थ लगाया जाता है कि पिता क्षत्रिय और उसने ब्राह्मण स्त्री से विवाह कर लिया तो ब्रह्म क्षत्रिय बन गये। सूत यद्यपि क्षत्रिय पिता और ब्राह्मणी के रज से उत्पन्न हुए थे तथापि बड़े बड़े ऋषि उन्हीं सूतजी से कथा सुनने सामने आकर नीचे बैठते थे। विष्णु-पुराण में लिखा है कि पुरु राजा के कुल से ब्राह्मण और क्षत्रिय उत्पन्न हुए। ययाति और शर्मिष्ठा क्षत्रिय पुरु राजा के माता-पिता थे। इसी विष्णुपुराण के ९वें और १०वें अध्याय से यह भी सिद्ध होता है कि गार्ग्य, शांडिल्य और काण्वायन व मौद्गल्य आदि गोत्र जो ब्राह्मणों के हैं, वे क्षत्रियों से निकले।

हमारी स्मृतियों में प्रायश्चित्त की विधि बहुत प्राचीन काल से चली आती है। भारतवर्ष में हूण, सोदियन आदि जो बाहर से आये, वे सब आर्य बनाये गये और विदेशों में भी यहां से आर्य मिशनरियों ने जा जाकर विधर्मियों को आर्य बनाया। सम्राट् अशोक ने चीन और जापान में धर्म प्रचारक भेजे और सब को बौद्ध बनाया। भारतवर्ष के बाहिर जो ४५ करोड़ बौद्ध हैं वे हमारे ही धर्म भाई (हिन्दू भाई) हैं।

आज तक हूण जो पहिले तिब्बत से टाइग्रीस नदी तक पहुंचे हुए थे, भारतवर्ष में परमार क्षत्रियों की एक शाखा माने जाते हैं और उनसे सब क्षत्रिय विवाह करते हैं। हमने आर्य सभ्यता फैलाई. तभी तो हमारा चक्रवर्ती साम्राज्य सारे संसार में विस्तृत था। हमारे आर्य राजा सर्वत्र राज्य करते थे। अफगानिस्तान में शकुनि, चीन में भगदत्त, यूरोप में बिडालाक्ष, अमेरिका में बभ्रुवाहन आदि राज्य करते थे।

वीरश्रेष्ठ अर्जुन ने अमरीका की राजकन्या उलूपी से विवाह किया था। महाभारत में युधिष्ठिर ने जो राजसूय यज्ञ किया था उसमें सब राजाओं का वर्णन है। पूज्य शङ्करस्वामी ने तो शंख बजा कर ही सारा भारत शुद्ध किया था। जो शान्ति से शुद्ध न हुए उन्हें तलवार के जोर से उन्होंने शुद्ध किया। (देखो "शङ्कर दिग्विजय") चन्द्रगुप्त ने सैल्यूकस की लड़की के साथ विवाह किया था। सिकन्दर के साथ आए हुए बहुत से ग्रीक आर्य बनाये गये और भगवान् बुद्ध का विदेशों में धर्म प्रचार किस से छिपा है। उनकी शुद्धि की लहर तो देश-देशान्तरों में फैली हुई थी। पुष्कर के प्राचीन इतिहास में लिखा है कि ऋषियों ने निरीति राक्षस को पुण्यभूमि पुष्कर में शुद्ध कर के वैदिक धर्मानुयायी बनाया। बौद्धों के इतिहास में लिखा है कि बौद्ध प्रचारक तीर्थों में जाकर ब्राह्मणों तथा अन्य जातियों को बौद्ध मतानुयायी बनाते

थे। सांची में ईसा के २०० वर्ष पूर्व के बौद्ध स्तूप मिलते हैं। उनसे भी शुद्धि की प्रथा प्राचीन साबित होती है।

बम्बई सरकार के पुरातत्त्व विभाग की सन् १९१४ ई० की "प्रोग्रेस रिपोर्ट" हाल ही में प्रकाशित हुई है। उस में एक शिलालेख है जो भेलसा शहर के पास बसे खांबबाबा नामक एक गरुड़ध्वज स्तम्भ पर मिला है। इस लेख में यह कहा है कि "देलियो डोरस" नामक एक हिन्दू बने यवन अर्थात् ग्रीक ने इस स्तम्भ के सामने वासुदेव का मन्दिर बनवाया और यह यवन वहाँ के भगभद्र नामक राजा के दरबार में तक्षशिला के एण्टि आल्कट्स उस नामक ग्रीक राजा के एलची की हैसियत से रहता था। "एण्टि आल्कट्स उस" के सिक्कों से अब यह सिद्ध किया गया है कि वह ईसा के १४० वर्ष पूर्व राज्य करता था। इससे यह बात पूर्णतया सिद्ध हो जाती है कि उस समय भारत में वासुदेव भक्ति प्रचलित थी। केवल इतना ही नहीं अपितु यवन लोग श्री वासुदेव के मन्दिर बनवाने लगे थे, अतः सिद्ध है कि हिन्दुओं में शुद्धि का रिवाज बहुत पुराना है। शारीरिक, मानसिक और सामाजिक दुर्बलताओं एवं आडम्बरपूर्ण साम्प्रदायिक बखेड़ों के कारण यह रिवाज मुसलमानों के समय में दब गया था और इसके दब जाने में मुसलमान बादशाहों का अन्यायपूर्ण शासन भी कारण था। पुराणों में ऐसे सैकड़ों उदाहरण पाये जाते हैं जिन से यह साफ तौर पर सिद्ध हो जाता है कि हमारे पूर्वज ऋषि-मुनियों—राजा-महाराजाओं ने लाखों करोड़ों बौद्धों और म्लेच्छों को शुद्ध करके पुनः सनातनधर्म (हिन्दू जाति) में मिलाया था। भविष्यपुराण, प्रतिसर्ग पर्व, खण्ड ४ में लिखा है कि—

> सरस्वत्याज्ञया कण्वो मिश्रदेशमुपाययौ।
> म्लेच्छान् संस्कृतमाभाष्य तदा दशसहस्रकान् ॥
> वशीकृत्य स्वयं प्राप्तो ब्रह्मावर्त्ते महोत्तमे।
> ते सर्वे तपसा देवीं तुष्टवुश्च सरस्वतीम् ॥
> सपत्नीकांश्च तान् म्लेच्छान् शूद्रवर्णाय चाकरोत्।
> कारुवृत्तिकराः सर्वे बभूवर्बहुपुत्रकाः ॥
> द्विसहस्रास्तदा तेषां मध्ये वैश्या बभूविरे ॥
> तदा प्रसन्नो भगवान् कण्वो वेदविदां वरः ॥
> तेषां चकार राजानं राजपुत्रपुरं ददौ।

देवी सरस्वती की आज्ञा से कण्व ऋषि ने मिश्र देश में जाकर १० हजार म्लेच्छों को शुद्ध किया और उनको संस्कृत पढ़ाकर भारतवर्ष में लाये और उन में से २००० को वैश्य बनाया। इसी में आगे लिखा है—

मिश्रदेशोद्भवा म्लेच्छाः काश्यपेन सुशासिताः,
संस्कृताः शूद्रवर्णेन ब्रह्मवर्णमुपागताः ।

शिखा सूत्रं समाधाय पठित्वा वेदमुत्तमम् ।। इत्यादि

अर्थात् मिश्र देश में उत्पन्न म्लेच्छ शुद्ध होकर तथा उत्तम वेद पढ़कर व शिखा सूत्र धारण करके ब्राह्मणपद को प्राप्त हो गये। आगे फिर इसी अध्याय में कथा आती है कि वैष्णव सम्प्रदाय के आचार्य श्रीकृष्ण चैतन्य देव के प्रधान शिष्य स्वामी रामानन्दजी, आचार्य निम्बादित्यजी, श्रीविष्णुस्वामीजी तथा आचार्य वाणीभूषण आदि सात आचार्यों ने हरिद्वार, प्रयाग, काशी, अयोध्या, कांची आदि प्रसिद्ध तीर्थस्थानों में जाकर लाखों म्लेच्छों को पवित्र वैष्णव धर्म का उपदेश देकर हिन्दू धर्म में प्रविष्ट किया। जिसे सन्देह हो वह भविष्य पुराण पढ़कर या विद्वानों से सुनकर अपने सन्देह को निवृत्त करले। देवल मुनि ने तो अपने धर्मशास्त्र में गोहत्यारे, म्लेच्छों की जूठन खाने वाले की भी शुद्धि का विधान लिखा है। यथा—

बलाद्दासीकृतो म्लेच्छैश्चांडालाद्यैश्च दस्युभिः,
अशुभं कारितं कर्म गवादिप्राणिहिंसनम् ।
उच्छिष्टमार्जनं चैव तथा तस्यैव भक्षणम्,
तत्स्त्रीणां च तथा संगस्ताभिश्च सह भोजनम् ।। इत्यादि

"रणवीर प्रायश्चित्त" में अनेक प्रमाण लिखे हैं। अर्थात् म्लेच्छ, चाण्डालादि तथा डाकुओं द्वारा जो जबर्दस्ती दास बनाया गया हो तथा अशुभ कर्म (गो आदि पवित्र प्राणियों की हिंसा आदि) जिससे जबर्दस्ती कराई गई हो अथवा जिससे जूठे बर्तन मंजवाये गये हों तथा जिसे जूठा खिलाया गया हो तथा जिसने उनकी स्त्रियों का संग या उनके साथ भोजन किया हो तो उसकी शुद्धि कृच्छ्रसन्तापन व्रत से होती है। उपरोक्त ऐतिहासिक प्रमाणों के विद्यमान होते हुए भी हम रूढ़ि के गुलाम होने के कारण शुद्धि करने को बुरा मानते हैं। इसका कारण यह है कि आर्यजाति के दुर्भाग्य से एक समय ऐसा आया जब कि भारत से विभिन्न देशों में उपदेशक ब्राह्मणों का अभाव हो गया और भारत से ब्राह्मण उन देशों तक न पहुंच सके, जो उनको धर्म-कर्म की शिक्षा देकर आर्य धर्म में दृढ़ रखते। अतः उस समय शनैः-शनैः आर्य धर्म की बहुतसी शाखायें अज्ञान से तथा अपना कर्म त्याग देने से हो गई जैसा कि महाभारत शान्तिपर्व राजप्रकरण में स्पष्ट रूप से वर्णन आता है। ऐसा ही मनुस्मृति अध्याय १० श्लोक ४३-४४ में विधान पाया जाता है—

शनकैस्तु क्रियालोपादिमाः क्षत्रियजातयः ।
वृषलत्वं गता लोके ब्राह्मणादर्शनेन च ।।
पौड्रकाश्चोड्रद्रविडाः कम्बोजा यवनाः शकाः ।
पारदाः पल्हवाश्चीनाः किराता दरदाः खशाः ।।

अर्थात् निम्नलिखित तमाम क्षत्रिय जातियां कर्म के त्याग देने से और यज्ञ, अध्ययन न करने और स्ववर्णानुकूल प्रायश्चित्तादि कार्यों के लिए ब्राह्मणों के न मिलने से धीरे-धीरे म्लेच्छता को प्राप्त हो गई। जैसे कि पौड्र, द्रविड़, काम्बोज, यवन, शक, पारद, पल्हव, चीन, किरात, दरद, खश आदि-आदि। ज्योंही इन आर्यों ने ब्राह्मणों के अभाव से अपने धर्म कर्म का परित्याग किया तथा सर्वदेशीय भाषा संस्कृत का पठन-पाठन बन्द किया, इनकी अनेक शाखायें जातियों के रूप मे परिवर्तित हो गई और आर्य लोग इनको म्लेच्छ नाम से पुकारने लगे। क्योंकि उस समय संस्कृत भिन्न भाषा भाषियों को आर्य लोग म्लेच्छ कहते थे। कुछ समय के उपरान्त ब्राह्मणों ने अन्य देशों में जाकर इनमें से बहुतसी जातियों को संस्कृत भाषा पढ़ाकर पुनः आर्य धर्म में प्रविष्ट किया और जिस समय ये जातियां भारतवर्ष में आक्रमण करने या अन्य किसी उद्देश्य से आईं, आर्यों ने इन्हें वैदिक सभ्यता की शिक्षा देकर हिन्दूधर्म में मिला लिया, जिनमें से आज तक बहुतसी जातियां उसी नाम से प्रसिद्ध हैं और हिन्दुओं का उनके साथ खानपान का सम्बन्ध उसी प्रकार है जैसा कि एक आर्य का आर्य के साथ होना चाहिये।

यवन जाति की शुद्धि

डाक्टर भांडारकर ने सम्राट् अशोक के शिलालेखों (Rock Edict XIII Ep. Ind. Vol. II pp. 463-464) में से यह लिखा है—

"एते च मुखमुते विजये देवानप्रियस यो धर्मविजयो ।
सो च पुन लधो देवानांप्रियस इह च सर्वेसु च अंतेसु आ छसुपि योजन-सतेसु यत्र अंतियोको नाम योनराजा परं च तेन अंतियोकेन चतुरो राजानो तुरमाये नाम अंतिकिनि नाम मक नाम अलिकसुंदरो नाम ।"

प्राकृत भाषा के उपरोक्त लेख से पाया जाता है कि ग्रीक लोगों को यवन कहते थे ओर इस में ५ यवन राजाओं के नाम "अंतियोक" "तुरमाय" "मक" "अलिक सुन्दर" "अंतिकिनि" आये हैं। ये ही शुद्ध हुए हिन्दू राजा अंग्रेजी में Antichos Soter, king of Syria, Ptolemy Philaldelphos, king of Egypt, Antioono Gonatos, king of Mccedonia. Alexander, king of Ephisus कहाते हैं। उपरोक्त शिलालेखों के आधार पर उन्होंने

यह सिद्ध करने का सफल प्रयत्न किया है कि ग्रीक लोगों का पुराना नाम यवन था। इन लोगों को हिन्दू धर्म में दीक्षित कर पुनः हिन्दू-धर्म में मिला लिया गया था। पंजाब और काबुल में राज्य करने वाला, जिसका नाम "मिलिन्द मीनीएन्डर" था, ईसा से ११० वर्ष पूर्व बड़ा प्रतापी राजा हुआ था और यवन जाति का एक स्तम्भ था। पाली भाषा में लिखे शिलालेखों से यह सिद्ध होता है कि उसने बौद्ध मत को भी ग्रहण किया था। यवन राज "मीनीएन्डर" को शुद्ध कर उसका संस्कृत नाम "मिलिन्द" रक्खा गया। उसने महाभाष्य के रचयिता "पतंजलि" के समय में "साकेत" जिसको "अवध" कहते हैं और "मध्यमिका" (मेवाड़) नामक स्थान यवनों द्वारा घेरे। महर्षि "पतंजलि" ने महाभाष्य में उनकी मिसाल निम्न प्रकार से दी है—

"अरुणधवनो मध्यमिकाम्"
"अरुणाधवनो साकेतम्"

इसी राजा "मिलिन्द" के सिक्के "बरोच" (गुजरात) में प्रचलित थे और काठियावाड़ में अब तक मिलते हैं। उनके एक ओर तो ग्रीक भाषा में Basileus Suthros Menandros और दूसरी ओर प्राकृत में "महाराजस आदर्श मीनमदर्श" लिखा हुआ है। "मिलिन्दपनाह" नामक प्राकृत भाषा की पुस्तक में "मिलिन्द" यवन ने किस प्रकार बौद्ध धर्म स्वीकार किया इसका विस्तृत वर्णन है। इसका वृत्तान्त "Sacred Books of the East" में भी मिलता है, जिसमें लिखा है कि बौद्ध गुरु "नागसेन" से शास्त्रार्थ कर "मिलिन्द" राजा ने बौद्ध धर्म स्वीकार किया। बौद्ध होने के बाद इसके सिक्कों पर "धर्मचक्र" भी रहता था।

न केवल इतना ही प्रत्युत पाली शिलालेखों से यह भी सिद्ध होता है कि यवनों ने "सिंह", "धैर्य" और "धर्म" शब्दान्त नाम रखकर हिन्दू-धर्म को स्वीकार किया था। एक शिलालेख से यह भी प्रामाणित होता है कि तुरकण का पुत्र हरकरण, जिसका पहला नाम बदालोक था, ब्राह्मणों ने उसे इस साधुभक्ति और ब्राह्मण प्रेम के उपलक्ष्य में हिन्दू बना लिया था। "चिट" और "चन्दान" नामक यवनों के जीवन चरित्र से यह सिद्ध होता है कि इनका संस्कृत नाम "चित्र" और "चन्द्र" रक्खा गया था और आर्यपुरुषों के साथ इनका खानपान समान पाया जाता है। जुन्नर के एक शिलालेख से यह बात और भी पुष्ट हो जाती है नासिक की गुफाओं में एक शिलालेख मिला है कि "सिधं ओतराहस दतामिति यकस याणाकस धम्मदेव पुतस ईदाग्निदतस धम्मात्मना:" इसका अर्थ यह है "दत्तामित्र का रहने वाला धार्मिक धर्मदेव के

पुत्र इन्द्राग्निदत्त ने यह मंदिर दिया।" इस लेख से यह प्रकट होता है कि उत्तर से आये हुए यवन पिता ने पुत्रों को धर्मदेव और इन्द्राग्निदत्त नाम रखकर आर्य बना लिया था। नासिक में एक शिलालेख प्राप्त हुआ है जिसमें लिखा है "शकाग्निवर्मण: दुहित्रा गणपकस्य रेभिलस्य भार्यया गणपकस्य विश्ववर्मस्य मात्रा शकनिकया उपासिकया विष्णुदत्तया गिलनभेषजार्थं अक्षयनीवी प्रयुक्ता" इस में एक रानी की तरफ से धर्मार्थ फण्ड स्थापित करने का वर्णन है। यह रानी शकजाति की थी। शक जाति से शुद्ध होने के बाद इसका नाम विष्णुदत्ता रक्खा गया और यह बौद्ध उपासिका बन गई। इसके पति का नाम गणपक था और इसके पिता का नाम अग्निवर्मन् था।

इसके पिता के नाम के साथ वर्मा विशेषण लगा हुआ है, जोकि क्षत्रियत्व का परिचायक है। अत: प्रतीत होता है जिस समय यह लिखा गया होगा, उस समय से पूर्व ही विदेशी शक जाति जिसको मनुस्मृति और महाभारत में म्लेच्छ लिखा है, आर्यजाति में पूर्ण रूप से मिल चुकी थी। ये लोग भारत में पश्चिम की तरफ से आये थे और राजा विक्रमादित्य के १५० वर्ष बाद तक उन्होंने मालवा, गुजरात पर शासन किया था। इस जाति का सबसे प्रसिद्ध राजा शालिवाहन, जिसका कि संवत् चलता है, हुआ है। इसके वंशज ब्राह्मणों और क्षत्रियों में अब तक पाये जाते हैं। अवध के बहुत से वंश क्षत्रिय ताल्लुकेदार इन्हीं महाराज शालिवाहन के वंशज हैं और अवध का बहुत सा हिस्सा "वंशवाए" नाम से प्रसिद्ध है। वहाँ अधिकांशत: यही वैश्य क्षत्रिय पाये जाते हैं।

क्षत्रप वंश का क्षत्रिय जाति में प्रवेश

प्राचीन शिलालेखों में क्षत्रपवंशीय कई राजाओं का उल्लेख पाया जाता है। परन्तु क्षत्रप शब्द का किसी संस्कृत कोष या अन्य पुस्तक में पता नहीं चलता। अत: डाक्टर भांडारकर ने यह सिद्ध किया है कि यह शब्द फारसी भाषा के "क्षत्रपावन" शब्द का, जिसका अर्थ राजप्रतिनिधि है, रूपान्तर है। अंग्रेजों में इसी शब्द का बिगड़ कर Satrap हो गया है। नासिक के एक शिलालेख में इस वंश के राजा "दिनीक", "नाहापान" आदि का और "नहपान" की लड़की "संघमित्रा" का एक आर्य राजा ऋषभदत्त या उशवदत्त के, जो राजा "दीनीक" का पुत्र था, विवाह का वर्णन आता है। नासिक का यह शिलालेख इस प्रकार है—

"सिद्धं राज्ञः क्षहरातस्य क्षत्रपस्य नहपानस्य जामात्रा दीनीकपुत्रेण उपवदातेन इत्यादि।"

इस वंश के राजाओं का राज्य नासिक और बाद में उज्जयिनी में २०० वर्ष तक रहा। शिलालेखों और सिक्कों में "चष्टन" नाम मिलता है। डाक्टर साहब ने अनुमान किया है कि यह "चष्टन" ही तियस्थनीज नाम से प्रसिद्ध था। इसके पुत्र का हिंदू नाम "जयदमन" और पौत्र का "रुद्रदमन" था। इसके कुछ काल के बाद इनके नाम रुद्रसिंह आदि हो गये थे। इन नामों को देखने और ऊपर लिखित शिलालेखों के विचार करने से यही सिद्ध होता है कि "क्षत्रप" लोग भी विदेशों से आकर भारत में बसे थे और शनैः-शनैः हिन्दू आचार-विचारों को ग्रहण करने से हिन्दू जाति में मिला लिये गये। इन शुद्ध हुए क्षत्रियों का राज्य ३८८ सन् तक रहा। रुद्रदमन के विषय में जूनागढ़ में निम्नलिखित शिलालेख मिला है "शब्दार्थं गान्धर्वं न्यायाद्यानां विज्ञान प्रयोगावाप्तविपुलकीर्तिना" अर्थात् रुद्रदमन व्याकरण, संगीत, न्याय आदि का प्रकाण्ड पंडित था और उसकी बड़ी कीर्ति थी।

कान्हेड़ी गुफा के शिलालेख "वासिष्ठीपुत्रस्य" आदि से स्पष्ट प्रमाणित होता है कि इस शुद्ध हुए "रुद्रदमन" की पुत्री से वसिष्ठ पुत्र "श्रीसातकर्णी" का विवाह हुआ था अर्थात् वे शुद्ध किये जाकर उनका उच्च वंशों के राजाओं के साथ सम्बन्ध भी हो गया। नासिक की गुफा के शिलालेख में लिखा है कि इसी शक जाति के "दसपुरा" के रहने वाले शुद्ध हुए विष्णुदत्त के लड़के "बृद्धीक" ने वहां दो कुंड बनवाये। इससे ज्ञात होता है कि न केवल राजा-महाराजा वरन् मामूली हैसियत के शक जाति के आदमी भी शुद्ध कर लिये जाते थे।

ये यवन शुद्ध होने के बाद बड़े-बड़े मठों, बौद्ध चैत्यों और स्तूपों में पुष्कल दान देते थे। पूना के समीप की कारली गुफा में शिलालेखों से यह सिद्ध होता है—

'धेनु काकटा यवन स सिंह धयानथम्भी दानं।'

अर्थात् धेनुकाकट से आये हुए यवन से शुद्ध होकर हिन्दू जाति 'सिंहद्ध्य' रक्खा। उसने यहां भेंट चढ़ाई।

"धेनुकाकटा धमयवनस"

अर्थात् धेनुकाकट से आये हुए यवन से शुद्ध होकर अपना हिन्दू नाम धम्म रक्खा और यहाँ भेंट चढ़ाई।

जुन्नार के निम्नलिखित शिलालेखों से भी यही सिद्ध होता है—

"यवनस इरिलस गतान देवधम बे पोढियो"

अर्थात् ईरीला नामक यवन को हिन्दू बनाया गया और उसने मन्दिर के लिये दो कुण्ड बनवा दिये।

आभीर जाति का हिन्दू होना

वर्त्तमान "अहीर" कहलाने वाले विदेश से भारत में आये और "आभीर-वटक" नामक स्थान में, जो संयुक्तप्रान्त में "अहरौरा" और झांसी जिले में "अहीरवार" नाम से प्रसिद्ध हैं, आकर बसे। विष्णुपुराण और महाभारत तक में इनको म्लेच्छ मानते रहे परन्तु हिन्दूजाति ने इनको शुद्ध कर अपने में मिला लिया और सन् १८० में इनके शुद्ध हिन्दू नाम रक्खे जाने लगे जैसे कि "रुद्रमूर्ति" अभीर सेनापति था। ये राज्य करने लगे और राजा होने के बाद इनके नाम "माधरीपुत्र", "ईश्वरसेन", "शिवदत्त" इत्यादि हुए और राजपूतों में मिल गये और अब तक इनको यादव राजपूत होने का अभिमान है।

तुरुष्क जाति का हिन्दू होना

भारत के उत्तर से एक जाति, जिसका नाम तुरुष्क था, भारतवर्ष में आई। जिस देश में यह जाति रहती थी, उसका नाम राजतरङ्गिणी में तुरुष्क तथा कुषाण लिखा है, यह कुषण राजा के वंशज थे और कुषणवंशी कहलाये। इस वंश के हिमक्काड्स (हिमकडफिसस) नामक एक राजा ने शैव मत को स्वीकृत कर हिन्दू जाति में प्रवेश किया था। इसके विशेषणों में "माहेश्वर" शब्द मिलता है जिसका अर्थ शैव है। इसके सिक्कों पर एक तरफ तुर्की टोपी व दूसरी तरफ त्रिशूलधारी शिव और नन्दी बैल की तसवीर है। इसी वंश में प्रसिद्ध बौद्ध राजा "कनिष्क", "हुविष्क" और "वसुदेव" हुए जिनके सिक्कों पर बौद्ध भगवान् के चित्र मिलते हैं। ये सब हिन्दूजाति में मिल गये।

हूण जाति का आर्य होना

ईसा की ५वीं शताब्दी में हूण जाति ने टिड्डी दल की तरह भारत में प्रवेश किया और कुछ समय के उपरान्त कश्मीर से लेकर मालवा आदि प्रदेशों तक इस जाति का अधिकार हो गया था। इसका विस्तृत विवरण राजतरंगिणी में लिखा है। हर्षवर्धन "शिलादित्य" ने इन्हें परास्त किया। बहुत काल तक भारत में रहने के कारण और हिन्दू धर्मानुकूल कर्मों के करने से ये क्षत्रिय जाति में पूर्णरूप से मिल गये थे। छत्तीसगढ़-चेदी के राजा कण-

देव ने एक हूण कन्या "अहिल्या देवी" से विवाह किया था और पंवार राजपूतों की यह हूण एक शाखा अब तक मानी जाती है।

शाकद्वीपी मग जाति का ब्राह्मण जाति में प्रवेश

निम्नलिखित श्लोक से सिद्ध होता है कि मगों को विदेश से लाकर ब्राह्मण बनाया गया—

देवो जीयात् त्रिलोकीमणिरयमरुणो यन्निवासेन पुण्यः,
शाकद्वीपस्स दुग्धाम्बुनिधिवलयितो यत्र विप्रा मगाख्याः।
वंशस्तत्र द्विजानां भ्रमिलिखिततनोर्भास्वतः स्वाङ्गमुक्तः,
शाम्बो यानानिनाय स्वयमिह महितास्ते जगत्यां जयन्ति॥

पर्शिया तथा उसके आसपास के प्रदेशों में एक जाति मग नाम की, जिस को अब मगी कहते हैं, आबाद थी। ये लोग पहले पहल आकर बंगाल, राजपूताना आदि में बसे थे। उस समय ब्राह्मण लोग पुजारी बनना गर्हित कर्म समझते थे। क्योंकि "देवचर्य्यागतैर्द्रव्यैः क्रिया ब्राह्मी न विद्यते" अर्थात् देवपूजा में प्राप्त द्रव्य द्वारा ब्रह्मकर्म नहीं होता। अतः श्रीकृष्ण के पुत्र "शाम्बराज" ने अपने मन्दिर की पूजा के लिये (जो कि उसने चनाब नदी के तट पर बनवाया था) इन मगों को पुजारी बना दिया। तब से शनैः-शनैः ये मग लोग उन्नति करते-करते ब्राह्मण जाति में मिल गये और देवपूजा में इनका इतना अधिकार बढ़ा कि "वराहमिहिर" के समय से सूर्य्यदेवता की स्थापना का अधिकार केवल मग ब्राह्मणों का ही रहा। भविष्यपुराण में इन के विषय में लिखा है कि ये पहिले गले में डोरी डाले रहा करते थे, परन्तु ब्राह्मण पदवी प्राप्त करने पर यज्ञोपवीत धारण करने लगे। शिलालेखों से यह सिद्ध होता है कि ये लोग पहले "शाकद्वीप" में रहा करते थे। इनका विस्तृत विवरण स्कन्दपुराण में मिलता है और शाम्ब ने जब भोजवंशी यादवों की लड़कियाँ इनको ब्याह दीं तो उस दिन से उनकी सन्तान "भोजक" कहलाई। ये लोग जादू टोना बहुत करते थे, इस वास्ते इनके साहित्य को "मैगिक" साहित्य कहते थे और अंग्रेजी का Magic शब्द इसी "मैगिक" का अपभ्रंश है। यही लोग मारवाड़ में सेवक कहाते हैं। ये "मिहिर" गोत्र के थे और फारस से भारत में आये। पारसियों के गुरु "जरतुष्ट" के वंशज हैं और वहां मगी पुजारी कहाते थे। इस प्रकार पांचवीं शताब्दी तक हम बराबर पारसियों से विवाह सम्बन्ध करते थे और उनको अपने में मिला लेते थे। हिन्दू नेताओं का कर्तव्य है कि पारसी भाइयों को भी जो शतप्रतिशत हिन्दू हैं, अपनी ओर अपना

प्राचीन धार्मिक व रुधिर का सम्बन्ध बताकर खींचें ताकि वे अपने आपको हिन्दू कहें क्योंकि पहिले जो लोग ईरान, सीरिया, "एशिया माइनर", 'श्याम आदि देशों से भारत में आये, वे सब हिन्दू बनाए गये थे और "आर्य्य सभ्यता को मानते थे"।

गुर्जर जाति का आर्य्य जाति में प्रवेश

बहुत से ऐतिहासिकों का मत है कि हूणों के साथ-साथ गुर्जर लोग भी विदेश से आये थे और पहले पहल ये लोग भीनमाल तथा गुर्जरत्रा अर्थात् गुजरात देश मे आकर बसे थे। कुछ काल के बाद ये लोग तमाम भारत में फैल गये। चीनी यात्री युआनचुआंग (Yuanchwang) लिखता है कि राजस्थान में सातवीं शताब्दी के प्रथम भाग में ही गूजर लोग हिन्दू जाति में इतने मिल गये थे कि इन को सब क्षत्रिय मानते थे। यही गूजर प्रसिद्ध "प्रतिहार राजगत वंश" कन्नौज में जाकर कहलाया। गुजरात के कुनबी, राजस्थान के "गुर्जर-गौड़ ब्राह्मण" और बड़गूजर राजपूत सब इस वंश के हैं। कई प्रान्तों में इनका राज्य भी हो गया था। पंजाब का गुजरांवाला तथा गुजरात जिला और बम्बई प्रांत का गुजरात अब तक इसी नाम से प्रसिद्ध है। महीपाल, महेन्द्रपाल राजाओं को राजशेखर कवि ने "रघुकुलतिलक" लिखकर रघुवंशी प्रकट किया है। वास्तव में ये लोग आजतक एशिया और यूरोप के बीच में "कहजार' जो कि गूजर का अपभ्रंश है, इस नाम से एक बहुत बड़ी संख्या में बसते हैं। इनको भी हिन्दूजाति ने अपने में मिलाया था और अपनी आर्य्य सभ्यता इनको सिखाई थी।

इन्होंने शुद्ध होकर अपने हिन्दू नाम रक्खे। जैसे "वत्सराज", नागभट्ट, रामभद्र आदि। अपने नाम के आगे हिन्दू धर्मी के नाम लिखने लगे जैसे' परमवैष्णव", "परमभगवतीभक्त", "परममाहेश्वर" आदि। इन गूजरों के सम्बन्ध में जोधपुर के शिलालेख से यह प्रमाणित होता है कि ये परिहारों के पूर्वज हैं और ब्राह्मण पिता और क्षत्रिय माता से "परिहार" राजपूत उत्पन्न हुए। चालुक्य वंश जिसने भारत में राज्य किया वह भी इन्हीं गूजरों की संतति है और वह पीछे से "सोलंखी" राजपूत कहलाये। इसी प्रकार चौहान और परमार राजपूत भी यहीं बाहर से आकर हिन्दू बनाये गये और सब मिल जुल गये। चौहानों का पहिला राजा "पृथ्वीराज विजय" के अनुसार "वासुदेव" हुआ और इस वासुदेव का राज्य छठी शताब्दी में मुलतान में था। इसके सिक्के पर "ससानी पल्हवी" भाषा लिखी है। इससे ज्ञात होता है कि यह भारत के बाहर से आया था और ब्राह्मण बन गया।

इस वंश का दूसरा राजा "सामन्त" हुआ और उसके लिये बिजौलिया का शिलालेख सिद्ध करता है कि वह ब्राह्मण था अतः चौहान राजपूत ब्राह्मणों के वंशज है। "कर्पूरमंजरी" में लिखा है कि ब्राह्मण कवि "राजशेखर" ने चौहानवंश की कन्या "अवन्तीसुन्दरी" के साथ विवाह किया। इनका "वत्स गोत्र" था। इस प्रकार चौहान पहिले ब्राह्मण थे, फिर क्षत्रिय बन गये। "तालगंड" (मैसूर) के शिलालेख से प्रमाणित होता है कि कदम्ब भी पहिले ब्राह्मण थे, फिर क्षत्रिय बन गये। कदम्बों के विषय में लिखा है कि "मानव्य ऋषि" की संतति "हारितपुत्रों" ने तीनों वेद पढ़कर ब्राह्मणपद को प्राप्त किया और क्योंकि इनके घर के पास कदम्ब का वृक्ष था, इस वास्ते ये कदम्ब कहलाये इसी कुल में "मयूरशर्मन्" नामक वीर योद्धा हुआ और उसका पुत्र "कंगवर्मन्" हुआ। सातवीं शताब्दी तक ब्राह्मणों से क्षत्रिय हो जाते थे और जाति पांति का कोई बन्धन नहीं था।

मैत्रिक जाति का हिन्दू होना

वैसे तो सृष्टि की उत्पत्ति ही सब से ऊंचे स्थान "तिब्बत" पर हुई और वहां से और मध्य एशिया से आये लोग बराबर लगातार आकर आर्यावर्त्त में बसते रहे। परन्तु उन्होंने कभी भी जाति-पांति के संकुचित बन्धन नहीं लगाये और जो जो मनुष्यों के समूह आते रहे उनसे लड़भिड़ कर भी उन्हें अपनी सभ्यता सिखाकर अपने में मिलाते रहे। ५वीं शताब्दी में हूणों के साथ-साथ कई जातियां आईं जिन का हम ऊपर वर्णन कर चुके हैं।

भारत के ब्राह्मणों में नागर ब्राह्मण सबसे श्रेष्ठ माने गये हैं। H. H. Risley ने (जो भारतवर्ष में प्रसिद्ध जातीय तत्त्वान्वेषक माने गये हैं) अपनी Castes and Tribes of India नामक पुस्तक में लिखा है कि नागर ब्राह्मणों की तहकीकात करने पर मालूम होता है कि सिकन्दर ने जब भारत पर आक्रमण किया तो उसकी सेना के कई सिपाही यहीं भारत में बस गये। उन लोगों ने यहां की स्त्रियों के साथ विवाह कर लिया। उनसे जो सन्तान उत्पन्न हुई वे नागर ब्राह्मण कहलाये। इनमें सब रीति रिवाज वे ही हैं जो यूनानियों में पाये जाते थे। इसकी पुष्टि इनके सिर और नाक के नाप से भी होती है जो Indo-Sythian जाति के सिर और नाक के नाप से मिलती है, क्योंकि ५वीं शताब्दी तक कोई भी जन्म से जाति मानने का प्रमाण नहीं मिलता। इस वास्ते ये नागर ब्राह्मणों के पूर्वज भी जैसा जैसा काम करने लगे वैसा वैसा कहलाने लगे।

काम्बोज जाति हिन्दू बनाई गई

काम्बोज जाति को मनु ने म्लेच्छ लिखा है। इतिहास में इसका विदेशों से आना पाया जाता है। परन्तु आजकल यह हिन्दू जाति की उपजाति है और कम्बोहे नाम से भारत के कई भागों में बहुत बड़ी संख्या में बसी हुई है। इसी प्रकार न मालूम कितनी विदशों जातियों को हिंदुओं ने अपने में मिला लिया होगा।

मुसलमानों का वैष्णव धर्म में प्रवेश

विचित्र पाचनशक्ति रखनेवाली आर्य्यजाति ने न केवल अन्य विदेशियों को अपनाया प्रत्युत पुराणों के प्रमाणों से यह भी सिद्ध होता है कि वैष्णव सम्प्रदाय के आचार्यों ने लाखों मुसलमानों को वैष्णव धर्म की दीक्षा देकर हिन्दू बनाया। जिस समय भारत में मुसलमानों का राज्य विस्तृत हो रहा था और लाखों हिन्दू मुसलमान हो गये थे, उस समय बंगाल में कृष्णचैतन्य महाप्रभु, जिनको बंगाली गौराङ्ग स्वामी कहते हैं, वैष्णव धर्म का प्रचार करते थे। उन्होंने इस अवस्था को देखकर अपने शिष्य प्रशिष्यों को आज्ञा दी कि मुसलमान हुए हिन्दुओं को वापस लेलो। इसका विस्तारपूर्वक वर्णन भविष्यपुराण प्रतिसर्ग पूर्व खण्ड ४ अध्याय २१ में किया है। यथा—

'श्रुत्वा ते वैष्णवाः सर्वे कृष्णचैतन्यसेवकाः।
दिव्यं मन्त्रं गुरोश्चैव पठित्वा प्रययुः पुरीम् ॥
रामानन्दस्य शिष्या वै अयोध्यायामुपागताः।
कृत्वा विलोमं तं मन्त्रं वैष्णवांस्तानकारयन् ॥
भाले त्रिशूलं चिह्नं च श्वेतरक्तं तदाभवत्।
कण्ठे च तुलसी माला जिह्वा राममयी कृता ॥
म्लेच्छास्ते वैष्णवाश्चासन् रामानन्दप्रभावतः ॥"

अर्थात् कृष्णचैतन्य के शिष्य अपने गुरु का उपदेश ग्रहण कर सातों पुरियों में गये। रामानन्द के शिष्य अयोध्या में गये और यवनों के मत का खण्डन करके और अपने मत का उपदेश देकर सबको वैष्णव बना लिया और उनके मस्तकों पर लाल सफेद रंग का त्रिशूलाकार तिलक लगवाया, गले में तुलसी की माला पहनाई, रामनाम का उपदेश दिया। रामानन्दजी के प्रभाव से अयोध्या के तमाम मुसलमान वैष्णव बन गये। आचार्य्य निम्बादित्यजी शिष्यों सहित कांचीपुर गये और मार्ग में समस्त मुसलमान हुओं को वैष्णव धर्म

में पुनः मिला लिया। उनके मस्तकों में बांस के पत्ते के सदृश तिलक लगा कर और गले में माला डालकर और कृष्ण का नाम जपने का उपदेश देकर हिन्दू बनाया। इसी प्रकार विष्णुस्वामी, वाणीभूषण आदिकों ने हरिद्वार, काशी आदि तीर्थस्थानों में जा कर तमाम मुसलमानों को वैष्णव बनाया था। वल्लभाचार्य्यजी ने अबदुलकरीम उर्फ रसखान को मुसलमान से हिन्दू बनाकर वैष्णव धर्म में दीक्षित किया था।

तेषां स्वयमेव शुद्धिमिच्छतां प्रायश्चित्तान्तरमुपनयनम् ।। आपस्तम्ब १। १। १। १।।

अर्थ यदि वे अपनी शुद्धि की इच्छा करें तो उनको प्रायश्चित्त कराकर यज्ञोपवीत दे देना चाहिये।

मुसलमानी राज्य और शुद्धि

सत्य शास्त्रों तथा उत्तम पुरातत्त्व-विद्वानों के प्रमाण देकर हम ऊपर बतला चुके हैं कि वैदिक काल से लेकर रामायण व महाभारत के समय तक हम विदेशियों को बराबर अपने में मिलाते रहे। हम शिलालेखों व बौद्धस्तूपों के प्रमाणों से भी बता चुके कि बौद्ध काल में भी हमने अपनी प्रायश्चित्त और शुद्धि की प्रथा को कायम रक्खा। पौराणिक काल में भी हम बराबर शुद्धियां करते रहे। तत्पश्चात् जब मुसलमानी शासन हुआ, तब भी हिन्दुओं ने शुद्धि की प्रथा को नहीं छोड़ा। हिन्दू कवि मुसलमान बादशाहों के दरबारों में रहा करते थे।

शुद्धि और राजपूत इतिहास

वीरभूमि राजस्थान कभी भी मुसलमानों के पूर्ण आधीन नहीं हुई। कभी-कभी मुसलमान हिन्दू स्त्रियों को भगा ले जाते थे। इसके प्रतीकार रूप में राजपूतों ने औरंगजेब के बड़े-बड़े मुसलमान अफसरों की बीवियों तक को भगाया और इसका प्रतिफल यह हुआ कि मुसलमानों ने फिर इधर राजस्थान की हिन्दू स्त्रियों का भगाना बन्द कर दिया। इसी प्रकार हिन्दू मन्दिरों की गोमांस से मुसलमानों द्वारा अपवित्रता को रोकने के लिये जोधपुर के महाराजा अजीत सिंह ने खास दरगाह ख्वाजासाहब अजमेर तक की प्रसिद्ध मस्जिद में सूअर को काट कर लटकाया और मुल्लाओं से "अजीत बादशाह" के नाम का फतवा पढ़ाया। उसके बाद राजस्थानीय मन्दिर अपवित्र होने से बचे। इससे दूसरा लाभ यह हुआ कि जो लोग मुसलमानी पीरों को मानते थे उनके हृदय से इन मुसलमानी कब्रों की इज्जत जाती रही।

राजपूताना के रणबांके राठौड़ बड़े निर्भय होते थे। इनका यही मन्त्र था।

मारवाड़ के इतिहास में लिखा है कि राजपूत बड़े बहादुर होते थे। वे मुस्लिम बादशाहों से नहीं डरते थे। जोधपुर के महाराजा "गजसिंहजी" ने बादशाह शाहजहां के मुंह के आगे एक नामी मौलवी की लाल लम्बी चौड़ी दाढ़ी पर भरे दरबार में थूक दिया था और शाहजहां बादशाह तथा उनके ७३ "खान" और ७२ "उमराव" उनको कुछ न कह सके। यही नहीं, उन्होंने शाहजहां के प्रसिद्ध वजीर "असदखां" की स्त्री "अनारां" को उससे छीनकर अपनी बीवी बना लिया। राव "रायपालजी" मारवाड़ के राजा ने ६०० मुसलमानियों को घर में डाल लिया और उनकी शादियाँ अपने सर्दारों और नौकरों के साथ कर दीं।

"खेड़" मारवाड़ के राजपूत सिन्ध के मुसलमान अमीरों की लड़कियों को फतह कर ले आते थे और अपनी बीवी बना लेते थे और फिर उन्हें बहुतसी लड़ाइयां लड़नी पड़ती थीं। एक बार मारवाड़ में श्रावण की तीज को मुसलमान प्रजा की कुछ खेलती हुई लड़कियों को उड़ा ले गये थे। इसका बदला लेने के लिये राजपूत मुसलमान नवाबों व अमीरों की लड़कियां ले आये। सिंध की मुसलमानी फौज "कुंवर" जगमाल से लड़ने आई तो उसे बुरी तरह हार कर भागना पड़ा और अमीर की लड़की का भाई "घुडलेखां" भी, जो अपनी बहिन को वापिस लेने के लिये फौज चढ़ा कर आया था, तीरों से छिद-कर मारा गया। उस पर अमीरजादी ने अपने हिन्दू पति से प्रार्थना की कि उसके भाई की कोई यादगार बनवा दी जाय। कुंवर साहब ने मन्जूर किया और तब से राजपूताने भर में "गणगोरियों" के दिनों में जो राजस्थान का प्रसिद्ध मेला है, "घुड़ल्यो घुमेलो" का खेल जारी हुआ। अबतक लड़कियां मिट्टी की हांडी बनाकर और उसमें छेद कर के भीतर दीपक रखके इसे घर-घर ले जाती हैं और खेलती तथा गाती हैं। यह मारवाड़ियों का मुसलमानों पर विजय का द्योतक है। उदयपुर के महाराणा "कुम्भा" नागौर और मालवे से मुसलमानियों को पकड़ लाये थे और उनके विवाह हिन्दुओं के साथ करा दिये थे। योद्धा हरनाथसिंहजी ने बादशाह के निकट के रिश्तेदार 'इनायतखां' के लड़के की स्त्री को छीन लिया था और घर में डाल लिया था। "रायसेन" मालवे में मुल्क है। वहां का राजा "सलहदी पूर्बिया" प्रसिद्ध है। उसने और उसके सर्दारों ने बहुतसी मुसलमानियों को अपने घर में डाल लिया था। कुछ राजपूतों ने मुगल सम्राटों को भय और परतन्त्रतावश विवाहरूप में चाहे बाँदियां और गोलियां ही दीं या चाहे अपनी पुत्रियां ही दीं परन्तु उन्होंने

बदले में अमीरजादियां भी लीं और ये बांदियाँ भी मुसलमानी हरम में जोधा-बाई के समान हिन्दू आचार-विचार से ही रहीं। यह बात सिद्ध है कि वे प्राण रहते मुसलमानियां नहीं बनीं। इसी प्रकार जो हिन्दू मुसलमानी बीवियां लाये उनको धार्मिक स्वतन्त्रता रही। जो हिन्दू बन गईं उन्हें हिन्दू बना लिया और जिन्होंने मुसलमान धर्म में रहना चाहा उन्हें मुसलमान धर्म में रहने दिया। हिन्दुओं ने कभी भी जबरन किसी को हिन्दू नहीं बनाया।

सम्राट् अकबर ने मुसलमानों की जड़ खूब खोखली की थी। वह तो अपनी "जन्म गांठ" तक हिन्दू सौर वर्ष से ही मनाता था। वह हिजरी संवत् काम में नहीं लाता था। बादशाह अकबर के समय तक हिन्दुओं में बल था और वे जाति-पांति के बन्धनों को अधिक नहीं मानते थे। मैं प्रसिद्ध राजा मानसिंहजी जयपुर वालों का ही उदाहरण देता हूं जिन्होंने बड़े-बड़े दान-मन्दिर बनवाये थे और काबुल तक फतेह किया था। राजा मानसिंहजी ने बंगाल के राजा प्रतापादित्य पर चढ़ाई की और जब उसे जीत कर वापिस लौटे तब कूचबिहार पहुंचे और कूचबिहार के राजा जो राजपूत नहीं थे वरन् खत्री कहलाते थे और जिनके लिये ख्यातों में "खातन" जाति लिखा हुआ है उसकी पुत्री से विवाह कर लाये। वह कूचबिहार की होने से जयपुर में महा-रानी "कूचेनीजी" कहलाई और उनसे जो कुंवर हुआ उसका नाम 'सखतसिंह' रक्खा गया और उनको जागीर में "धूला" का प्रसिद्ध ठिकाना दिया गया। यद्यपि पिछले राजपूत अब तक कूचबिहार वालों को असली राजपूत नहीं मानते परन्तु उसी सम्बन्ध से उत्पन्न हुई सन्तति आज तक जयपुर में सर्व-श्रेष्ठ मानी जाती है। जयपुर में धूला का ठिकाना टीकायत ठिकाना माना जाता है और दरबार में "राजपूतों" में सबसे पहिली गद्दी इन्हीं की लगती है। ऐसे भी अनेक उदाहरण मिलते हैं कि हिन्दू राजाओं ने मुसलमानियों से विवाह किया पर उनकी सन्तान हिन्दू ही रही। अब तक ऐसा होता रहा है।

मध्यभारत में एक रियासत है जिसका नाम राजगढ़ है। इस रियासत के राजा मोतीसिंहजी मुसलमान हो गये थे और अपने को नवाब कहने लग गये थे। इनकी पूर्व विवाहिता स्त्री हिन्दू थी और पिछली मुसलमान। किन्तु रियासत का धर्म हिन्दू ही रहा और मुसलमानी से जो कुंवर पैदा हुआ

उसका नाम हिन्दुआनी ढंग का "बलवन्तसिंह" रक्खा गया और बहैसियत हिन्दू के वे राजगद्दी के मालिक हुए।

दूसरी मिसाल काठियावाड़ की रियासत "जामनगर" की लीजिये। यह प्रसिद्ध राजपूत रियासत है। जोधपुर के महाराज सुमेरसिंहजी का विवाह यहीं हुआ था। क्रिकेट के प्रसिद्ध भारतीय खिलाड़ी महाराजा रणजीतसिंहजी इसी रियासत के राजा हैं। इन्हीं महाराजा "रणजीतसिंहजी" के दादाजी "विभाजाम" ने मुसलमानी से विवाह किया और उससे "जस्साजाम" नामक पुत्र उत्पन्न हुआ जो "विभाजाम" के उत्तराधिकारी बहैसियत हिन्दू के बने और इन्हीं मुसलमानी के पेट से उत्पन्न हुए। "जस्साजाम" ने राजपूतों में ३ विवाह किये और उनके बाद महाराजा रणजीतसिंहजी गद्दी पर बैठे। इन जस्साजाम साहब को प्रिन्स "कालोबा" भी कहते हैं। महाराजा रणजीतसिंहजी जो उनके उत्तराधिकारी हैं वह सर्वश्रेष्ठ राजपूतों में माने जाते हैं।

हैदराबाद निजाम के हिन्दू दीवान राजा सर किशनप्रसादजी के खानदान में तथा अन्य बड़े बड़े हिन्दू रईसों के यहां मुसलमान स्त्रियों से विवाह करने की प्रथा जारी है। सिन्ध के "सोढ़ा" राजपूतों का यह रिवाज है कि मुसलमानियों की लड़कियों ले भी लेते हैं और दे भी देते हैं। पहिले गुजरात में भी इसी प्रकार की प्रथा जारी रही। इन सिन्ध के सोढ़ों का गहरा सम्बन्ध अब तक राजपूताना के राजपूतों के उच्च कुलों से है। मुगलों के राज्यकाल में राठौड़ों ने कई बार मुसलमानियों को ला लाकर अपने सर्दारों को बांट दिया। मारवाड़ के "अमरसिंह" राठौड़ बादशाही शाहजादी को ले आये। जयपुर वाले "मनोहरपुर" रावजी फर्रुखसियर बादशाह की बुआ को उड़ा लाये थे। कायमखानियों की ख्यात में लिखा है कि मण्डोर के राव जोधाजी ने जो जोधपुर महाराज के पूर्वज हैं, अपनी पुत्री "सीताबाई" कायमखानी को ब्याह दी थी, क्योंकि वे कायमखानियों के नाममात्र के मुसलमान हो जाने पर उनको मुसलमान न मान कर अपने राजपूत भाई ही मानते थे और उस समय के कायमखानियों को चौहान होने का बड़ा अभिमान था और अधिकतर को अब भी है और वे राजपूती रीति-रस्मों से ही रहते हैं।

पटियाला के महाराजा ने महारानी फ्लोरेंस से विवाह किया था। कपूर्थला, जींद, टिकारी, पट्टूकोटा के महाराज तथा पंजाब केसरी रणजीत सिंहजी के पुत्र महाराज दिलीपसिंहजी ने अंग्रेजी मेमों के साथ विवाह किया था। सैकड़ों सिक्ख व आर्यसमाजी भी मुसलमान व ईसाइयों को शुद्ध कर उनसे विवाह सम्बन्ध कर लेते हैं और सनातनी हिन्दुओं का इन्हीं आर्यसमाजी और सिक्खों से वही विवाह सम्बन्ध जारी है। अतः इस प्रकार से शुद्धि की प्रथा वास्तविक रूप से सब हिन्दू मान रहे हैं।

ऐसे सैकड़ों उदाहरण हैं जिनसे यह स्पष्ट साबित होता है कि राजपूत राजा अक्सर मुसलमानियों को घर में डाल लेते थे और सरदारों में बांट देते थे परन्तु इससे वे कभी भी जातिबहिष्कृत नहीं होते थे बल्कि उनकी सन्तान असली हिन्दू मानी जाती थी। प्राचीन समय से शुद्धि की प्रथा जारी है और राजपूत इतिहास में १२वीं शताब्दी में इसका रूप यज्ञ कराकर तालाब खुदवाना या नदी में स्नान आदि था। जो कोई यज्ञ में सम्मिलित हो जाता तथा तालाब में स्नान कर लेता था, या गंगा यमुना स्नान कर लेता था, वही शुद्ध हो जाता था। १२वीं शताब्दी में अजमेर का प्रसिद्ध "अनासागर" इस शुद्धि का उदाहरण है। अजमेर के "अरणोदेव" राजा ने यवनों को जीत कर उनको मार भगाया था और उनसे अपवित्र हुई भूमि की तथा मन्दिरों की शुद्धि के उपलक्ष्य में ही यहाँ यज्ञ रचाकर यह तालाब खुदवाया था।

१६वीं शताब्दी में जब सिन्ध के मुसलमानी हमले से भाटी राजपूत मुसलमान बना लिये गये थे, तब जैसलमेर के भाटी राजपूत महाराजा "जैत-सिंहजी" ने काशी से पण्डितों को बुलाकर एक बड़ा यज्ञ रचाकर "जैतबन्ध" बँधवाया जो अब तक विद्यमान है। इस यज्ञ में जो कोई मुसलमान आ गया और जैतबन्ध में स्नान कर गया, हिन्दू बना लिया गया। यही शुद्ध हुए भाटी राजपूत अब श्रेष्ठ राजपूत माने जाते हैं और इनके साथ सब विवाहसम्बन्ध करते हैं। तात्पर्य यह है कि मुसलमान फिर से हिन्दू बनाये जाते थे। कोई हिन्दू मुसलमानियों से विवाह करने पर जातिच्युत नहीं किया जाता था। जिस हिन्दू का मुसलमानी से विवाह होता था उसकी सन्तति हिन्दू ही रहती थी। इस समय यह शुद्धि केवल जातिप्रवेश संस्कार है। भाई भाई आपस में मिल रहे हैं। समझ में नहीं आता कि मुसलमान भाई व कुछ कांग्रेसी नेता इस सनातन शुद्धि से इतने क्यों बिगड़े हैं और इसके कारण हिन्दू मुस्लिम ऐक्य के भंग होने का झूठा भय क्यों दिखला रहे हैं? हमारे पूर्वज तो सदा से शुद्धि करते रहे हैं परन्तु मुसलमानों के राज्य से भी कई हिन्दू धार्मिक गुरुओं ने मुसलमानों को हिन्दू बनाया। "रज्जबजी" मुसलमान थे। दादूजी महाराज

ने उन्हें हिन्दू बना कर अपना शिष्य बनाया । "रज्जबजी" की "बानी" अब तक दादू द्वारों में बड़े प्रेम से पढ़ी जाती है । श्री गुरुनानक साहब का मुख्य शिष्य "मर्दाना" मुसलमान से हिन्दू बनाया गया । श्री रामानन्दजी के शिष्य कबीरदासजी मुसलमान से हिन्दू बनाये गये, क्योंकि वे मुसलमान जुलाहे के पुत्र थे । रामानुजाचार्य्यजी के प्रसिद्ध शिष्य "हरिदासजी" यवनाचार्य के नाम से प्रसिद्ध हैं, क्योंकि वे मुसलमान से हिन्दू बनाये गये थे । श्री वल्लभाचार्य ने अपने शिष्यों में आठ पठानों को भी सम्मिलित किया था, जिनके नाम "रसखान "गुलखान" इत्यादि हैं । महर्षि दयानन्द ने तो सारी आयु ही इस काम को किया । सबसे पहिले उन्होंने "अलखधारीजी" को देहरादून में शुद्ध किया था । शुद्धि की लहर को जोरों के साथ चलाने वाले ये ही हैं । पं० लेखराम, पं० गुरुदत्तजी, स्वामी श्रद्धानन्दजी, मास्टर आत्मारामजी व महात्मा हंसराजजी ने कई मुसलमानों को शुद्ध किया । यहां तक कि खास अरब के कट्टर मुसलमानों (सत्यदेव) को भी शुद्ध कर लिया । कई अंग्रेजों को भी शुद्धकर हिन्दू बना लिया । स्वामीरामतीर्थ और डाक्टर केशवदेवजी शास्त्री ने अमेरिका तक में जाकर शुद्धियां कीं । जर्मनी और इंग्लैंड की दूसरी लड़ाई ने भी भारतवासियों में से छुआछूत मिटाने में बड़ी भारी सहायता पहुंचाई । हजारों राजपूत क्षत्रिय राजे महाराजे सात समुद्र पार यूरोप गये । ५ वर्ष तक अँगरेजों के साथ कन्धे से कन्धा मिला कर जर्मनी से लड़े और खानपान वगैरह में कोई भी छुआ-छूत नहीं मानी ;

भारत लौटने पर किसी जाति ने चूं तक नहीं किया । इनके साथ अन्य हजारों लाखों हिन्दू अब समुद्रयात्रा कर आये और बराबर अपनी अपनी जातियों में सम्मिलित हैं । इससे भी शुद्धि आन्दोलन में बड़ी सहायता मिली । क्या उपरोक्त प्रमाणों के होते हुए भी हमारे राजपूत सरदार शुद्धि का विरोध ही करते रहेंगे ?

जो लोग ईरान, सीरिया, एशिया माइनर, श्याम आदि देशों से भारत में आये, वे हिन्दू बनाये गये ।

१६वीं शताब्दी में पोर्च्युगीज लोगों ने हिन्दुओं को जबरन ईसाई बनाया था पर ब्राह्मणों ने उन्हें पुनः शुद्ध कर लिया । परन्तु पीछे के दक्षिणी ब्राह्मण इस शुद्धि की बात को भूल गये । इस लिए अब तक हजारों ईसाई इस बात पर ईसाई बने बैठे हैं कि ईसाइयों ने अपनी डबल रोटी उनके कुंओं में डाल दीं और लोगों ने अनजान में पानी पी लिया । बस मूर्ख पण्डितों ने फतवा व्यवस्था दे दी कि ये अशुद्ध हो गये । अब शुद्ध नहीं हो सकते, हिन्दू नहीं बन सकते । परन्तु दूसरे स्थलों के ऐसे मूर्ख नहीं थे । बंगाल में शुद्धि होती थी । "रूप

और सनातन" ढाके के नव्वाब के लड़के थे। वे प्रभु गौराङ्गदेव के शिष्य हुए और हिन्दू बनाये गये।

पहिले गुण कर्म स्वभावानुसार वर्ण थे। समूह के समूह दूसरा वर्ण बदल लेते थे। एक ही परिवार में एक ही पिता के पुत्र भिन्न भिन्न वर्णों के होते थे। ब्राह्मपुराण के अध्याय २२३ में लिखा है—

> शूद्रोऽप्यागमसम्पन्नो द्विजो भवति संस्कृतः।
> ब्राह्मणो वाऽप्यसद्वृत्तः सर्वसंकरभोजनः॥
> स ब्राह्मण्यं समुत्सृज्य शूद्रो भवति सदृशः।
> न योनिर्नाऽपि संस्कारो न श्रुतिर्नाऽपि सन्ततिः॥
> कारणानि द्विजत्वस्य वृत्तमेव तु कारणम्।
> वृत्ते स्थितश्च शूद्रोऽपि ब्राह्मणत्वं च गच्छति॥

अर्थात् शुभ संस्कार तथा वेदाध्ययन युक्त शूद्र भी ब्राह्मण हो जाता है और दुराचारी ब्राह्मण ब्राह्मत्व को छोड़कर शूद्र हो जाता है। जन्म, संस्कार, वेद, सन्तान ये सब द्विज बनाने के कारण नहीं हैं, प्रत्युत आचार ही मनुष्य को ब्राह्मण बना देता है। शुद्ध आचारयुक्त शूद्र भी ब्राह्मण बन जाता है। किन्तु इन सब प्रमाणों के होते हुए भी कुछ प्राचीन विचारों के धर्मधुरन्धर राजपूत राजा शुद्धि का गुप्त रूप से विरोध करते हैं। वे स्वयं मुसलमान खानसामों के हाथ का भोजन खाते हैं। अगरेजों के होटलों में जाकर ठहरते हैं। अंगरेज स्त्रियों तक से गुप्त सम्बन्ध रखते हैं, परन्तु शुद्धि का प्रश्न आते ही धर्मधारी वैष्णव बनकर अपनी प्राचीन कुलमर्यादा के विरुद्ध शुद्धि आन्दोलन का विरोध करते हैं। जो दिन रात अंगरेजों की टेबुलों पर चर्बी का घी और गोमांस तक खाते फिरते हैं, उन्हें जरा सोच समझ कर शुद्धि का विरोध करना चाहिये। परमात्मा हमारे राजपूत सरदारों को सुबुद्धि दे जिससे वे शुद्धि के आन्दोलन में तन, मन, धन से भाग लें और सैकड़ों वर्षों से बिछुड़े हुए भाइयों का भरतमिलाप हो।

शुद्धि और महाराष्ट्र का इतिहास

सावरकर जी ने "हिन्दू पद पादशाही" पर बहुत उत्तम लेख लिखे हैं, जिनमें अकड़बाज मुसलमानों को, जो यह कहते हैं कि हिन्दू सदा पिटते रहे हैं, बहुत उत्तम ऐतिहासिक उत्तर दिये हैं और उन लेखो के पढ़ने से विदित होजाता है कि छत्रपति शिवाजी ने मुसलमानों का दमन कर हिन्दू संगठन किया और हिन्दू साम्राज्य का फिर से सूत्रपात किया। छत्रपति शिवाजी महाराज ने समर्थ गुरु रामदासजी की आज्ञा से बीजापुर की सेना के बहुतसे

मुसलमानों को हिन्दू बनाकर मराठा जाति में मिला लिया। किसी इतिहास-
कार का मत है कि स्वयं औरङ्गजेब की लड़की उनसे प्रेम की भिक्षा मांगती
रही, किन्तु उन्होंने ब्रह्मचर्य व्रत पालन के कारण अस्वीकार कर दिया। "माडर्न
रिव्यू" में एक लेख छपा था कि नेताजी पालकर को औरङ्गजेब पकड़ कर
ले गया था और उसे मुसलमान बना लिया था। वह वीर सेनापति था। कई
वर्षों पीछे जब वह लौटकर आया, तब पेशवा के द्वारा वह शुद्ध कर लिया
गया।

महाराज शिवाजी के राज्य प्रबन्ध की खास बात प्रबन्ध मण्डल की
स्थापना है। इन अष्ट प्रधानों में से एक को "पण्डितराव" कहते थे। छत्र-
पति शिवाजी के राज्याभिषेक के समय का अर्थात् सन् १६७४ ई० का एक
कागज़ मिला है। उसमें पंडितराव के कर्तव्यों का उल्लेख इस प्रकार किया
गया है। पंडितराव को धर्मविषयक सभी कार्यों की देखभाल करनी चाहिये
यथा धर्मशास्त्रों के अनुकूल लोगों का बर्ताव हैं या नहीं, इस बात की जांच
करके दुराचारियों को दण्ड और सदाचारियों का सम्मान करना चाहिये।
शिवाजी महाराज ने धर्म की ३ शाखायें की थीं। "—१ आचार, २—व्यव-
हार, ३—प्रायश्चित्त"। इन शाखाओं की देखभाल और इनका निर्णय पंडित
राव ही करते थे। ये महाराष्ट्र साम्राज्य में धर्म के व्यवस्थापक अर्थात्
धर्मसचिव थे। धर्मभ्रष्ट अपराधियों को दण्ड देने दिलाने का कार्य पंडित-
राव करते। छत्रपति शिवाजी महाराज ने ही पहलेपहल शुद्धि की प्रथा को
अपने राज्य में प्रचलित किया था। इसका एक उदाहरण हमको मिला है।
घटना इस प्रकार है —बाजीराव निम्बालकर फलटन नामक एक तालुका के
कोई बड़े भारी सरदार थे। ये सरदार महाशय बीजापुर में बादशाह के दरबार
रहते थे। संयोगवश बादशाह की ओर से इनके ऊपर कोई अपराध लगाया
गया। शर्तें यह थीं कि यदि सर्दार सहाब इस्लाम की दीक्षा लेवें तो उन पर
से अभियोग भी उठा लिया जावेगा और बादशाह की लड़की का विवाह भी
उनसे कर दिया जावेगा। इस शर्त के अनुसार सर्दार निम्बालकर ने इस्लाम
की दीक्षा लेली और बादशाह की लड़की से उनका विवाह भी कर दिया गया।
इसके बाद निम्बालकर महाशय फलटन में अपनी जागीर पर चले आये।
कुछ दिन बाद शिवाजी महाराज तथा उनकी माता जीजीबाई ने धर्मामात्य
पंडितराव से व्यवस्था लेकर निम्बालकर को फिर से हिन्दू धर्म में ले लेने
का निश्चय किया और उनका सिंहासनपुर नामक एक तीर्थक्षेत्र में लेजाकर
प्रायश्चित्त करवाया। इस प्रकार सर्दार बाजीराव निम्बालकर मुसलमान से
पुनः हिन्दू बने। छत्रपति शिवाजी की जारी की हुई प्रथा महाराष्ट्र साम्राज्य

के अन्त तक प्रचलित रही। शिवाजी महाराज की मृत्यु के बाद महाराष्ट्र में चारों ओर उपद्रव मचे हुए थे। अनेक लोग किसी प्रलोभन में आकर अथवा अन्याय से मुसलमान हो रहे थे। इनमें से कई एक ब्राह्मण भी थे और बहुत से मराठा जाति के लोग थे। इन सब को प्रायश्चित्त कराके शुद्ध कर लिया जाता था। शासनकर्ता अपनी प्रजा से अनुमोदन लेकर इस काम को करते थे। छत्रपति साहू के शासनकाल में पूताजी बंडकर नाम मराठा जाति का व्यक्ति जबरन मुसलमान बनाया गया था। यह व्यक्ति एक वर्ष तक मुसलमान बना रहा। इसके बाद पहले पेशवा बाजीराव की सेना जब दिल्ली की चढ़ाई करने को चली तब उक्त मुसलमान मराठा उसकी सेना में भर्ती हो गया और उसने छत्रपति साहू महाराज से अपनी शुद्धि के लिए प्रार्थना की और उसकी इच्छा पूर्ण की गई। एक कोंकणस्थ ब्राह्मण को हैदरअली ने राजनैतिक कैदी के नाते से कारागार में रक्खा था। उसके विषय में शङ्का की गई थी कि वह आत्मरक्षा के लिए मुसलमान होगया है। अतः अन्त में सब ब्राह्मणों और पेशवा की सम्मति से वह ब्राह्मण भी शुद्ध कर लिया गया। एक बार एक ब्राह्मण धोखे से मुसलमान बनाया गया और दूसरा रोग नष्ट होने की आशा से धर्मच्युत हो या पर अन्त में पश्चात्ताप होने पर ब्राह्मणों और अधिकारियों की सम्मति से वे भी शुद्ध किये गये। इनमें से एक घटना अहमदनगर ज़िले के गांव में हुई थी। सवाई माधवराव पेशवा के शासनकाल में भी नरहरि राजलेकर नामक एक ब्राह्मण मुसलमान होगया था परन्तु अन्त में उसे पश्चात्ताप हुआ और उसने फिर से हिन्दू धर्म में लिये जाने के लिए पेशवा सर्कार से प्रार्थना की उसकी प्रार्थना स्वीकृत हुई और पैठन के ब्राह्मणों ने उसे शुद्ध कर लिया। द्वितीय पेशवा श्रीबाजीराव उच्च कुल के महाराष्ट्रीय ब्राह्मण थे। उन्होंने विशुद्ध मुसलमान कुलोत्पन्न "मस्तानी" नामक बेगम से, जो हैदराबाद के नवाब की लड़की थी, विवाह किया और उसे पूना लाकर शनिवारबाड़े में उसके लिए सुन्दर महल बनवा कर उसे अपनी पत्नी बनाकर रक्खा। उससे जो पुत्र "शरशेर" बहादुर हुआ उसका हिन्दू ही के समान पालन पोषण किया। उसका यज्ञोपवीत संस्कार तक करने का प्रयत्न किया। बाजीराव पेशवा के ३ पुत्र हुए थे— बालाजीराव, राघोबा और शमशेर बहादुर बाजीराव ने अपने तीनों पुत्रों को अपनी जायदाद का बंटवारा बराबर बराबर किया। शमशेर बहादुर को बुन्देलखण्ड मिला और पीछे से यही हिन्दुओं की अदूरदर्शिता के कारण हिन्दू होते हुए भी बांदा के नवाब कहलाने लगे। इसी प्रकार सिक्खों का इतिहास त्याग, तप और शुद्धि की मिसालों से भरा हुआ है। ●

नगाड़ा युद्ध का बज रहा

यह देवासुर संग्राम है

विजय के लिए आइए,

अपने नगर में

हिन्दू रक्षा समिति

स्थापित करें

●●

हम सब हिन्दू हैं

देश धर्म की रक्षा के

लिए आगे बढ़ने का

संकल्प लें

अखिल भारतीय हिन्दू रक्षा समिति

वेदमन्दिर १५६७ हरध्यानसिंह मार्ग

करौल बाग नई दिल्ली-५

—वेदभिक्षुः

ओ३म्

मैं हिन्दू क्यों बना ?

लेखक

डॉ० आनन्दसुमन सिंह

ओ३म्

मैं हिन्दू क्यों बना ?

लेखक

डॉ० आनन्दसुमन सिंह (वैदिक प्रवक्ता)

प्रकाशक :
क्रान्ति प्रकाशन
तपोवनाश्रम, देहरादून-२४८००८

(दो सहस्र प्रतियाँ मुस्लिम बन्धुओं में निःशुल्क वितरित)

मकर संक्रान्ति वि० २०४४

मूल्य : दो रुपये (१२५/- सैंकड़ा)

मुद्रक :
दुर्गा मुद्रणालय,
नवीन शाहदरा; दिल्ली-११००३२

दो शब्द

धर्म आज के युग में अर्थहीन हो गया है।

कारण है धर्म एवं सम्प्रदाय को पर्यायवाची माना जाना। न तो कभी धर्म समाज ने इसके खण्डन की आवश्यकता समझी और न कभी बुद्धि-जीवी, वैज्ञानिक वर्ग ने इसके स्पष्टीकरण की आवश्यकता को अनुभव किया, न इस पर विस्तार से चर्चाएँ हुईं। यही कारण है कि धर्म हौवा बन गया है।

सूर्य एक है, चन्द्रमा, जल, वायु, पृथ्वी, परमात्मा सभी एक हैं, फिर धर्म अनेक कैसे हो सकते हैं? मत, मजहब, सम्प्रदाय, रिलिजन व्यक्तियों की कल्पना की उड़ान भर हैं। धर्म व्यक्ति के जीवन की व्यावहारिकता से जुड़ा एक अध्याय है, जिस प्रकार व्यक्ति आँख, हाथ, पैर के बिना अधूरा है उसी प्रकार व्यक्ति एवं समाज धर्म के बिना पंगु है, भ्रष्ट है, असामान्य है। यही कारण है विश्व की वर्तमान दयनीय दशा का।

धर्म कभी परिवर्तित नहीं होता। वह तो अनन्त वर्षों से प्रवाहमान, सभी के लिए समान मार्गदर्शक एवं बुद्धि-प्रशस्ति का मार्ग है। उसका अनुसरण ही व्यक्ति का कर्तव्य (धर्म) है।

—आनन्दसुमन सिंह

प्रकाशकीय

पाठक वृन्द !

वन्दे मातरम् ।

क्रान्ति प्रकाशन का यह पन्द्रहवाँ पुष्प आपके करों में है। मैं हिन्दू क्यों बना ?—यह लेख अनेक बुद्धिजीवियों के प्रश्न का उत्तर मात्र है। अनेक बन्धुओं का आग्रह था कि इसको जन सामान्य के कल्याण हेतु पुस्तकाकार प्रकाशित किया जाये। डॉ० आनन्दसुमन सिंह वैदिक प्रवक्ता (महोपदेशक, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नयी दिल्ली) ने ३० अगस्त, १९८१ को वैदिक धर्म की दीक्षा ली और एक अभियान का आरम्भ किया। विगत् छः वर्षों में देश-भ्रमण के माध्यम से अपने तीक्ष्ण, तर्कसंगत, प्रखर राष्ट्रवादी एवं धार्मिक विचारों से करोड़ों भारतीयों को मार्गदर्शन देने वाले डॉ० सुमन अपनी लेखनी से भी साहित्य सेवा में लगे रहे हैं। जहाँ नहीं पहुँच पाये वहाँ उनकी पुस्तकों ने अनेक भ्रमित हिन्दू बन्धुओं को इसाइत व इस्लाम की मृग-मरीचिका में फँसने से रोका। उनकी नीति स्पष्ट है; धर्म एक है, उसी का पालन मनुष्यों का कर्तव्य है। व्यक्तियों द्वारा निर्मित मत, पन्थ, सम्प्रदाय लड़ाई की जड़ हैं। उनसे पृथक् हो मनुष्यों को सत्य सनातन वैदिक धर्म का पालन करना चाहिए।

प्रकाशन विगत् चार वर्षों से संघर्षरत है। हमारा आन्दोलन अबाध गति से चलायमान है।

> मैं अकेला ही चला था जानिबे मंजिल मगर,
> लोग साथ आते गये और कारवां बनता गया।

हमारी अपेक्षा तो मात्र इतनी है कि आप सबका सहयोग, स्नेह, आशीर्वाद, एवं सुभाव हमें निरन्तर मिलते रहें और हम ज्ञानगंगा प्रवाहित करते रहें।

क्रान्तिकारी शुभकामनाओं सहित।

संचालक, क्रान्ति प्रकाशन

श्री कृष्णलाल पाहुजा

स्वर्गीय श्री कृष्णलाल पाहुजा (यमुनानगर, हरयाणा) कर्मठ; परिश्रमी आर्य परिवार के सदस्य थे। महर्षि दयानन्द सरस्वती के नियमों में पूर्ण निष्ठा थी। देश-विभाजन के पश्चात् भारत आये श्री पाहुजा ने अपनी दूरदर्शिता एवं कर्मठता से अपना व्यापारिक क्षेत्र बढ़ाया। आपके पुत्रों एवं पुत्री ने भी आपके स्वभाव व विचारों को धारण किया।

उनके सुपुत्र शक्ति पाहुजा जहाँ व्यापारिक क्षेत्र में अग्रणी हैं वहीं आर्य जगत् में भी निष्ठापूर्वक सम्मिलित हैं।

उन्हीं के प्राथमिक सहयोग एवं अनेक बन्धुओं के लघु सहयोग से इस पुस्तक को प्रकाशित किया जा रहा है।

—संचालक

क्रांति-गीत

क्रान्ति कीजिए प्रभु त्रिभुवन में,
जल में थल में और गगन में,
अन्तरिक्ष में अग्नि पवन में,
औषध वनस्पति वन-उपवन में।
क्रान्ति कीजिए……।

ब्राह्मण के उपदेश वचन में,
क्षत्रिय के हारा होरण में,
वैश्य जनों के होवे धन में,
और शूद्र के हो चरणन् में,
क्रान्ति कीजिए……।

क्रान्ति राष्ट्र निर्माण सृजन में,
नगर ग्राम में और भवन में,
जीवमात्र के हो तन मन में,
और जगति के हो कण-कण में।
क्रान्ति कीजिए……।

मैं हिन्दू क्यों बना ?

मुझे अपने घर लौटे छः वर्ष बीत गये, अब सातवें वर्ष में प्रवेश किया है। विगत छः वर्षों में कश्मीर से कन्याकुमारी तथा गुजरात से अरुणाचल प्रदेश तक मैंने अपने भारत को निकट से जाना, देखा और समझा; अपने देश में प्रचलित अनेक रीति-रिवाजों एवं विचारों से परिचित हुआ, अपने देश के हर नागरिक से मिलने का अवसर मिला। देश की इस अनेकता में एकता वाले वातावरण ने मुझे रोमांचित भी किया, अनेक ऐसी घटनाएँ भी घटीं जिनसे उत्साह शिथिल हुआ, किन्तु एक विशेषता है मेरे देश में जिसको उच्चकोटि के कवि इकबाल ने इस रूप में व्यक्त किया है—

यूनान मिस्र रोमां सब मिट गये जहां से
अब तक मगर है बाकी नामोनिशां हमारा।
कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी
सदियों रहा है दुश्मन दौरे जहां हमारा।

ये पंक्तियाँ समस्त संसार के लिए चुनौती हैं। लगभग दो अरब वर्षों से वेद, स्मृति, दर्शन व शास्त्रों की कठोर किन्तु सरस नींव पर खड़ा मेरा भारत अचल है, दृढ़ है। सारे संसार के स्वरूप को अपने में समाए खड़ा यह देश न कभी मिटा, न इसका

स्वरूप बदला, न इसने कभी अपने विचारों में परिवर्तन किया। जितने कष्ट राष्ट्र व संस्कृति-घाती आक्रमण भारत ने झेले हैं उनमें से एक भी किसी अन्य राष्ट्र ने नहीं झेला। किन्तु उसने अपनी मूल संस्कृति में सहस्रों परिवर्तन किये हैं। भारत अविचल, अखण्ड, निर्भ्रान्ति, हिमालय के अभिषेक और सिन्धु के नीरमयी चरणों में अपने स्वरूप की गाथा को अनगिनत विश्व-प्रसिद्ध कवियों-लेखकों-विद्वानों से वर्णन करवा चुका है और अब भी अपनी संस्कृति की प्राचीनता, सर्वव्यापकता, सार्वभौमिकता एवं मानवता के गुणगान करवा रहा है। यह क्रम अनन्त वर्षों से प्रवहमान है और अनन्त वर्षों तक चलेगा। यही प्रत्येक भारतीय की भावना है। कभी आर्यावर्त, कभी वैदिक साम्राज्य, कभी राम-राज्य, कभी हिन्दोस्तां, कभी भारत, वर्तमान इण्डिया किन्तु पुनः किसी कवि के शब्दों में—

यह चमन यूं ही रहेगा और हजारों जानवर,
अपनी अपनी बोलियाँ सब बोलकर उड़ जायेंगे।

विगत दो अरब वर्षों में वैदिक संस्कृति में कोई परिवर्तन विद्वान्, जल्लाद, कट्टरपंथी, कूटनीतिज्ञ, आक्रमणकारी, सेवा के नाम पर विष देनेवाले नहीं कर पाये। वेद आज भी सारे संसार के लिए ज्ञान का सूर्य है। जिस प्रकार हर नवजात शिशु का अपनी जन्मदायिनी के स्तन-पान पर अधिकार है उसी प्रकार प्रत्येक मानव का वेदमाता के पठन, पाठन, श्रवण पर पूर्ण अधिकार है। वेद तो माँ है जो सबको स्नेह व संरक्षण देती है।

संसार में कोई भी सम्प्रदाय, मत, मजहब अपने स्वरूप को पाँच सहस्र वर्षों से अधिक जीवित नहीं रख पाया। इतिहास साक्षी है किन्तु मेरी संस्कृति तो आज भी अपने करुणामय,

पुत्रवत्सल स्नेह को लुटा रही है। सभी से स्नेह, बन्धुत्व एवं सबके कल्याण का उपदेश कर रही है। इसी सब पर यदि मुझे गर्व है तो क्यों न हो ? विगत छ: वर्षों में पत्रकारों, बुद्धिजीवियों ने एवं पृथक्-पृथक् समुदाय के सदस्यों ने मुझसे बार-बार यही प्रश्न किया कि आपने इस्लाम मजहब को त्यागकर वैदिक धर्म को ही क्यों अपनाया ? इस्लाम से अधिक जनसंख्या वाले एवं धनी तो ईसाई हैं, आपको ईसाई बनना चाहिए था। पश्चात् कम्यूनिस्ट हैं; आपको उनके समाज में जाना चाहिए था। किन्तु आपने ऐसे धर्म को चुना जो संसार में केवल एक छोटा-सा समह मात्र है। उनका यह प्रश्न मुझे वैसे ही लगता है जैसे एक बच्चा टब में बैठकर नहाना पसन्द करता है किन्तु तरणताल या नदी में नहाना उसके लिए भय उत्पन्न करता है। मैं मानता हूँ कि संसार में सबसे अधिक संख्या ईसाइयों की है, पश्चात् मुस्लिम, कम्यूनिस्ट व अन्य सम्प्रदाय हैं। किन्तु यह तो सभी समझते हैं कि भेड़ या बकरियों के रेवड़ (समूह) में जब एक सिंह आ जाता है तब उनमें किस प्रकार खलबली मच जाती है ! किस प्रकार वह रेवड़ छिन्न-भिन्न हो जाता है। वैदिक धर्म उसी प्रकार है जिस प्रकार एक अथाह सागर और अन्य समुदाय उसी प्रकार हैं जिस प्रकार एक कुआँ या तालाब। तालाब में गोता लगाना बड़ा आसान है, कुआँ में कूदना और बाहर निकलना भी कठिन नहीं किन्तु सागर में गोता लगाना और रत्न प्राप्त करना हर एक के लिए सहज नहीं। यह तो कोई विरला ही करता है। मुस्लिम, ईसाई व अन्य समुदायों में जनसंख्या अधिक है, धन भी है। किन्तु वैचारिक स्वतन्त्रता के नाम पर जो अत्याचार व अनाचार वहाँ होते हैं वे सर्वविदित हैं। अत: एक बुद्धिजीवी एवं खुले

आकाश में उड़ने वाले पक्षी से यह आशा करना व्यर्थ है कि वह सोने के एक पिंजड़े में कैद होकर अपना सर्वस्व व्यर्थ गँवा दे। वैदिक धर्म एक खुला आकाश है, यहाँ हमें स्वच्छंद विचरण की स्वतन्त्रता है। यही कारण है कि मैंने वैदिक धर्म में आना ही हितकर समझा। मुझे पीड़ा होती है जब मैं देखता हूँ कि मुल्ला या पादरी के आदेश पर एक पढ़े-लिखे नागरिक को भी अपमानित होना पड़ता है। मैं मानता हूँ कि यह मजहब का नियम है किन्तु कट्टरता-अन्धविश्वास और छिछोरापन किसी भी सम्प्रदाय के लिए घातक ही तो है। वही आज सारे मत-मजहब और सम्प्रदायों की दशा है।

फिर सारा संसार भली-भाँति समझता है कि विश्व में पाँच सहस्र वर्ष पूर्व वैदिक साम्राज्य ही था, सभी हिन्दू थे। किन्तु किन्हीं कारणों से उन्हें नये मत और मजहबों का कोपभाजन बनना पड़ा, किन्तु उन सबका मूल तो वेद ही है। अतः मेरा यह मज़हब परिवर्तन न केवल अपने घर में लौटने के समान था अपितु सुबह का भूला यदि शाम को अपने घर लौट आये तो उसे भूला नहीं कहते। फिर मुझे तो अपने पूर्वजों के पाप का प्रायश्चित भी करना था। एक पुत्र को जो स्नेह, ममता अपनी माँ की गोद में मिलती है, क्या आप कल्पना भी कर सकते हैं कि किराये की या सौतेली माँ उसे वह स्नेह और सान्त्वना दे सकती है?

महर्षि दयानन्द का उपकार

सत्यार्थप्रकाश मानवता, विज्ञान, विवेकमय धर्म एवं न्याय, तर्क-संगत समाज की अमूल्य निधि है। सत्यार्थप्रकाश में मानव-जीवन के प्रत्येक पहलू को तार्किक एवं विवेकमय रूप में प्रस्तुत किया गया है। विज्ञान सत्यार्थप्रकाश का आधार है। वास्तव में आज जो विज्ञान है वह सब पवित्र वेद के आधार पर ही है। शत् वर्षों पूर्व महर्षि दयानन्द ने संस्कारहीन मानव समाज को सुसंस्कृत करने हेतु सत्यार्थप्रकाश की रचना की। वह काल अज्ञान, अन्धकार, पाखण्डवाद, चमत्कारवाद एवं परतन्त्रता का काल था। भयावह वातावरण में भी सत्य को उजागर करना, घने काले बादलों में सूर्य की किरण के चमकने समान था। किन्तु अडिग दयानन्द ने भय की चिन्ता न की, अन्धकार से न घबराया, निर्भय बढ़ता ही गया जब तक कि दस सूत्र मानव-जीवन की आवश्यकता के एवं चार सूत्र पाखण्ड खण्डन के पूर्ण न कर लिये। उसी का नाम है सत्यार्थप्रकाश (चौदह समुल्लास वाला)। अनेक शंकाएँ थीं विश्ववारा संस्कृति के सम्बन्ध में, पवित्र वेद का तो लोप ही हो गया था। कोई कहता वेद शंकासुर ले गया, कोई कहता भस्मापुर। किसी का कथन था, स्त्री, शूद्र वेदों को सुन भी लें तो कानों में पिघला सीसा भर दो। यहाँ तक

कि स्त्री शूद्रोनधियताम् तक कह डाला गया। तिमिर बढ़ना था, बढ़ा। मानवता का पतन हुआ। ज्ञान-विज्ञान समाप्त हो चला। विवेक का स्तर तो था ही नहीं। प्रलय की ओर बढ़ रहा था संसार। किन्तु एक मूलशंकर जागा, वह मूल गया और शिव की भाँति निश्छल भाव से संसार को सत्यपथ का पथिक बनाने हेतु चल पड़ा। दासता समाप्त हुई, स्वतन्त्रता मिली, किन्तु दुर्भाग्य कि दयानन्द स्वतन्त्रता से पूर्व ही तिल-तिल कर जल गया। किन्तु उसकी ज्योति ने दीपक का रूप लिया, सत्यार्थ-प्रकाश ने मानवमात्र को झकझोर दिया। आज जो मानवता, विज्ञान, विवेक का नवीन युग दिखाई पड़ता है वह दयानन्द के सत्यार्थप्रकाश का प्रभाव ही है। सत्यार्थप्रकाश का अन्तिम चतुर्दश समुल्लास इस्लाम से सम्बन्धित है। इस्लाम, जिसने आज संसार के एक चौथाई भाग पर अपना अधिकार जमा रखा है। मानवों के मन में स्वर्ग-नरक का भय बैठाया है, अल्लाह के अनावश्यक रूप-जाल में फँसा लिया है। यही तो है इस्लाम। इस्लाम को आरम्भ करने का श्रेय मोहम्मद साहब को है। उन्हीं की विचार-श्रृंखला को इस्लाम का रूप दिया गया। आज यह प्रचारित किया जाता है कि इस्लाम संसार का अन्तिम मजहब व मोहम्मद साहब अन्तिम ईश्वरीय दूत हैं। कुरआन को ईश्वर द्वारा भेंट की गई रचना माना जाता है। मोहम्मद साहब ने जो कुछ कह दिया वही इस्लामी मजहब का नियम बनता चला गया। १५०५ वर्ष पूर्व जब इस्लाम का उदय हुआ, उस समय भी ईश्वर की रचनाएँ धरती पर थीं। सत्य, न्याय, ज्ञान व मानवता उससे पूर्व भी धरती पर थे। संसार कभी वेद के सन्देशानुसार-व्यवस्थानुसार चलता था। यह युग कोई पाँच

सहस्र वर्ष प्राचीन होगा। दो अरब वर्ष से आर्ष संस्कृति अपने सत्यस्वरूप में संसार का मार्गदर्शन करती आ रही है। यही कारण है कि आज भी मानवता शेष है, अन्यथा आज के तथाकथित धर्म व मजहब तो मानवता को समाप्त कर पाशविकता को; न्याय को समाप्त कर बलात्कार को; सत्य को समाप्त कर पाखण्डवाद को; विज्ञान को समाप्त कर चमत्कार-वाद को ही संसार का प्रमुख चिन्तन बना देते। किन्तु किरण जागी। कहा जाता था वेदज्ञान ब्रह्मा से जैमिनी पर्यन्त था किन्तु आज यह नहीं कहा जा सकता। आज तो ब्रह्मा से जैमिनी पर रुकने की आवश्यकता नहीं। हम निश्चिन्त होकर कह सकते हैं कि वेद ब्रह्मा से दयानन्द पर्यन्त है व आगे आर्यसमाज पर्यन्त रहेगा। जब तक आर्यसमाज, सत्यार्थप्रकाश है तब तक वेद एवं वैदिक संस्कृति का हनन असम्भव है। हजरत मोहम्मद ने इस्लाम के द्वारा सर्वप्रथम अरबवासियों में भय व्याप्त किया। अरव में उस समय पाशविकता का नंगा नाच होता था। कत्लेआम, बुतपरस्ती, व्यभिचार, जीवित लड़कियों का दफनाया जाना, करोड़ों भगवानों की उपासना—यह अरबवासियों की दिनचर्या थी। मोहम्मद साहब ने सर्वप्रथम अरबवासियों में भय बैठाया कि मैं अल्लाह का सन्देशा लाया हूँ, जो नहीं मानेगा वह भोगेगा। जिस प्रकार आज जादू के नाम पर सड़कों पर बच्चे की गरदन में छुरा गढ़ाकर रंग से रक्त दिखा दिया जाता है। वैसे ही मोहम्मद साहब ने भी दो-चार चमत्कार दिखाये, बात फैलनी थी सो फैली। सारा अरब थर्राने लगा। अब तो मोहम्मद साहब को भी मजा आने लगा। मजहब के नाम पर अनेकों सही-गलत काम होने लगे। मोहम्मद साहब के चेलों की संख्या बढ़ती गई।

सबकी इच्छा स्वर्ग जाने की थी । बस, मोहम्मद साहब ने कहा, मैं ही तुम्हें स्वर्ग ले जा सकता हूँ ! चमत्कारवाद की नयी नीति शुरू हुई । एक-एक कर सैकड़ों लोग इस्लामी हुए । फिर सैकड़ों नगर व अनेकों देश भी १५०७ वर्ष के काल में इस्लाम के चमत्कारवादी विचार में बह गये । कहीं धन का लालच, कहीं बहुपत्नीप्रथा का लोभ तो कहीं तलवार का भय भी असर दिखा गया । वेदान्ती-पौराणिक सकपकाये से दुर्दशा देखते रहे । पण्डों को साहस न बँधा कि चुनौती दे सकें, वह भी बह गये । इस्लाम के साथ-साथ पौराणिक मत भी पाखण्ड की बलिवेदी पर सहर्ष चढ़ा दिया गया । उदय हुआ विनाशरूपी काल का, थरथराने लगी मानवता । भयावह अन्धकारमय वातावरण में संसार का मार्गदर्शन करनेवाले स्वयं अपने पथ से हट गये । भूल गये सा प्रथमा संस्कृतिर्विश्ववारा का सनातन सन्देश, घिर गये अज्ञान के वातावरण में । पाँच सहस्र वर्षों तक हमने खोया, सब-कुछ खो दिया । यहाँ तक कि सभ्यता भी ऐसी अपना ली जो अपनी नहीं, पराई थी । इसी वातावरण में चमका था सूर्य दयानन्द का, उसी ने सँवारा था मातृभूमि, मातृसंस्कृति, मातृभाषा का स्वरूप । बदल दिया था कालिख को शृंगार में, अन्धकार को प्रकाश में । उसी महान निधि सत्यार्थप्रकाश के माध्यम से जिसने खदेड़ दिया था अंग्रेज को, चुनौती दी थी मुल्लाओं व पादरियों को, ललकारा था पण्डों को, झकझोर दिया था गद्दारों को ।

दयानन्द के देहावसान को एक सौ तीन वर्ष व्यतीत हुए हैं । दयानन्द के बाद हमारे समाज ने लगभग अर्ध-शताब्दी तक तो संसार में दयानन्द के प्रकाश को फैलाया, किन्तु गत अर्ध-शताब्दी

में घोर अव्यवस्था, भ्रष्टाचार, विनाश, पाखण्डवाद, चमत्कार-वाद ने पुनः अपना अधिकार मानव हृदयों पर किया है। समाज अस्त-व्यस्त है। केवल एक देश की बात नहीं, सारा विश्व भयभीत है। उन्हें ज्ञान का मार्ग दिखाना क्या दयानन्द-पुत्रों का कार्य नहीं ? आज समय आ गया है कि हम सब मिलकर पुनः वेद की ज्योति से सारे विश्व को आलोकित कर दें। दयानन्द के प्रकाश को पुनः फैलाएँ, सारे विश्व में वैदिक संस्कृति की ध्वजा फहराएँ, यही युग की माँग है, यही आर्य बन्धुओं की परीक्षा का समय है। आओ, मिलकर कृण्वन्तो विश्वमार्यम् के स्वप्न को साकार करें।

मैंने इस्लाम क्यों छोड़ा ?

इस्लामी सम्प्रदाय में मेरी आस्था दृढ़ थी। मैं बाल्यकाल से ही इस्लामी नियमों का पालन किया करता था। विज्ञान का विद्यार्थी बनने के उपरान्त अनेक प्रश्नों ने मुझे इस्लामी नियमों पर चिन्तन करने हेतु बाध्य किया। इस्लामी नियमों में पवित्र कुरआन या अल्लाहताला या हजरत मोहम्मद पर प्रश्न करना या शंका करना उतना ही अपराध है जितना किसी व्यक्ति को किसी के कत्ल करने पर अपराधी माना जाता है। युवावस्था में आने के पश्चात् मेरे मस्तिष्क में सबसे पहला प्रश्न यह आया कि अल्लाहताला रहमान व रहीम है, न्याय करने वाला है, ऐसा मुल्लाजी खुत्बा (उपदेश) करते हैं। फिर क्या कारण है कि इस दुनिया में एक गरीब, एक मालदार, एक इन्सान, एक जानवर, होते हैं। यदि अल्लाह का न्याय सबके लिए समान है, जैसा कुरआन में वर्णन किया गया है, तब तो सबको एक जैसा होना चाहिए। कोई व्यक्ति जन्म से ही कष्ट भोग रहा है तो कोई आनन्द उठा रहा है। यदि संसार में यही सब है तो फिर अल्लाह न्यायकारी कैसे हुआ ? यह प्रश्न मैं अनेक वर्षों तक अपने मित्रों, परिजनों एवं मुल्ला-मौलवियों से पूछता रहा किन्तु सभी का समवेत स्वर में एक ही उत्तर था, तुम अल्लाहताला के मामले में

अक्ल क्यों लगाते हो ? मौज करो, अभी तो नौजवान हो। यह मेरे प्रश्न का उत्तर नहीं था। निरन्तर यह विषय मुझे बाध्य करता था और मैं निरन्तर यह प्रश्न अनेक जानकार लोगों से करता रहता था किन्तु इसका उत्तर मुझे कभी नहीं मिला। उत्तर मिला तो महर्षि दयानन्द सरस्वती के पवित्र वैज्ञानिक ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश में। जिसमें महर्षि ने व्यक्ति के अनेक जन्मों एवं इस जन्म में किये गये सुकर्म या दुष्कर्मों का अगले जन्म में भोग का वर्णन किया। यह तर्कसंगत था क्योंकि हम बैंक में जब खाता खोलते हैं तो हमें बचत खाते पर नियमित छः माह में ब्याज मिलता है, मूलधन सुरक्षित रहता है, तथा स्थिर निधि पर एक-साथ ब्याज मिलता है; उसी प्रकार जीवात्मा सृष्टि की उत्पत्ति के पश्चात् अनेक शरीरों, योनियों में प्रवेश करता है तथा अपने सुकर्मों या दुष्कर्मों का भोग करता है। पुनर्जन्म के बिना यह सम्भव नहीं हो सकता। अतः पुनर्जन्म का मानना आवश्यक है किन्तु मुस्लिम समाज पुनर्जन्म में विश्वास नहीं करता। उनकी मान्यता तो मात्र यह है कि चौदहवीं सदी (शताब्दी) में संसार मिट जाएगा। कयामत आएगी और फिर मैदानेहश्र (जहाँ अल्लाहताला सभी के कर्मों के हिसाब से सजा या जजा देगा) में सभी का इन्साफ होगा। किन्तु उस मैदान में जो भी हजरत मोहम्मद के नेजे (ध्वज) के नीचे आ जाएगा, मोहम्मद को अपना रसूल मान लेगा वही इन्सान बख्शा जाएगा। अर्थात् उसे अपने कर्मों के फल भुगतने का झंझट नहीं करना पड़ेगा, और वह सीधा जन्नत में जावेगा, जो बुद्धिपरक नहीं लगता। क्योंकि एक व्यक्ति के कहने मात्र से यदि यह सारा खेल चलने लगे तो संसार में अन्य मत-मतान्तरों को मानने की आवश्यकता क्यों

पड़े ? और सृष्टि का अन्त चौदहवीं सदी में माना जाता है जबकि चौदहवीं सदी तो समाप्त हो गई ! फिर यह संसार समाप्त क्यों नहीं हुआ ? कयामत क्यों नहीं आई ? क्या मोहम्मद साहब से पूर्व या इस्लाम के आरम्भ से पूर्व यह संसार नहीं था ? क्योंकि इस्लाम के उदय को मात्र १५०७ वर्ष हुए हैं, संसार तो इससे पूर्व भी था है और रहेगा। मेरा दूसरा प्रश्न था कि जब एक मुस्लिम पति एक समय में चार पत्नियाँ रख सकता है तो एक मुस्लिम पत्नी एक समय में चार पति क्यों नहीं रख सकती ? इस्लाम में औरत को अधिक अधिकार नहीं हैं। एक पुरुष के मुकाबले दो स्त्रियों की गवाही ही पूर्ण मानी जाती है। ऐसा क्यों ? आखिर औरत भी तो इन्सानी जाति की अंग है। फिर उसे आधा मानना उस पर अत्याचार करना कहाँ की बुद्धिमानी है और कहाँ तक इसे अल्लाहताला का न्याय माना जा सकता है ? ८० साल का बूढ़ा १८ साल की लड़की से विवाह रचाकर इसे इस्लामी नियम मानकर सारे संसार को मजहब के नाम पर मूर्ख बनाये, यह कहाँ का न्याय है ? इस प्रश्न का उत्तर भी मुझे सत्यार्थप्रकाश में मिला। महर्षि दयानन्द ने भगवान मनु तथा वेद-वाक्यों के आधार पर सिद्ध किया है कि स्त्री एवं पुरुष दोनों को समान अधिकार हैं। एक पत्नी से अधिक तब ही हो सकती हैं जब कोई विशेष कारण हो (पत्नी बाँझ हो, सन्तान उत्पन्न न कर सकती हो) अन्यथा एक पत्नीव्रत होना स्वाभाविक गुण होना चाहिए। मनु ने कहा है—

यत्र नार्यस्तु पूजयन्ते रमन्ते तत्र देवताः।

जहाँ नारियों की पूजा (सम्मान) होता है वहाँ देवता वास करते हैं। तीसरा प्रश्न मेरे मन में था स्वर्ग व नरक का (दोजख

और जन्नत)। इस्लामी बन्धु मानते हैं कि कयामत के बाद फैसला होगा। उसमें अच्छे कर्मों वालों को जन्नत व बुरे कर्मों वालों को दोजख मिलेगा। जन्नत का जो वर्णन किया जाता है वह इस प्रकार है कि वहाँ सेब, सन्तरे, मय (शराब), एक व्यक्ति को सत्तर हूरें तथा ७२ शिलमें (चिकने-चुपड़े लौंडे) मिलेंगे। मैं मुल्ला-मौलवियों व मित्रों से पूछता था कि बतायें, जब एक पुरुष को जन्नत में लड़कियाँ मिलेंगी तो मुस्लिम महिलाओं को क्या मिलेगा? मेरे इस प्रश्न से वे चिढ़ते थे। चौदहवीं सदी तो बीत गयी, फिर कयामत क्यों नहीं आई? क्या अब नहीं आयेगी? अल्लाह के वायदे का क्या हुआ? इससे क्या यह स्पष्ट नहीं है कि कुरआन किसी आदमी की लिखी है? इन सब प्रश्नों से मेरा तात्पर्य किसी का दिल दुखाना नहीं अपितु केवल अपने मन में उठ रही शंकाओं का समाधान करना था। किन्तु कभी भी किसी ने मेरे प्रश्नों का उत्तर नहीं दिया अपितु इन सबसे दूर रहकर महज अल्लाह की इबादत में वक्त गुजारने और मौज उड़ाने का रास्ता दिखाया।

चौथा प्रश्न मेरे हृदय में था सभ्यता का। मैंने मुस्लिम इतिहास का (हजरत मोहम्मद के प्रादुर्भाव के पश्चात् से अब तक) गम्भीरता से अध्ययन किया है। इतिहास साक्षी है कि इस्लाम कहीं भी वैचारिकता या स्वविवेक के कारण नहीं फैला अपितु इस्लाम के आरम्भ काल से अब तक तलवार का बल, भय, बहुपत्नी प्रथा, स्वर्ग का लोभ या धन का मोह आदि ही इस्लाम के विस्तार का कारण बने। इस्लाम की शैशव अवस्था में हजरत मोहम्मद को इस्लाम के प्रचार के लिए अनेक युद्ध करने पड़े। स्वयं उनके चाचा अबुलहब ने अन्तिम समय तक इस्लाम को

नहीं स्वीकारा क्योंकि वह उसे वैज्ञानिक और तर्क-सम्मत नहीं मानते थे। हजरत मोहम्मद को मक्का से निष्कासित भी होना पड़ा क्योंकि वह अरब की सभ्यता में आमूल परिवर्तन की कल्पना करते थे और अरबवासी अनेक कबीलों में बँटे हुए थे। अबराह का लश्कर तो एक बार मक्का में स्थापित भगवान शंकर के विशाल शिवलिंग (संगे अस्वद) को मक्का से ले जाने के लिए आया था किन्तु भीषण युद्ध में अनेकों ने अपने प्राण गँवाए। यह मक्का शब्द भी संस्कृत के मख अर्थात् अग्निहोत्र या यज्ञ शब्द का ही बिगड़ा रूप है। जैसे मोहम्मद साहब का नाम भगवान कृष्ण के मदन मोहन शब्द का अपभ्रंश है। इस प्रकार के अनेक प्रमाण अरबी भाषा में मिलते हैं, जैसे आब (पानी) संस्कृत के आपः शब्द का ही रूप है। इस समय इस विषय पर चर्चा करना हमारा उद्देश्य नहीं। मुस्लिम इतिहास में एक भी प्रमाण त्याग, समर्पण या सेवा का नहीं मिलता। वैदिक संस्कृति में इतिहास के झरोखे से यदि देखें तो मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम पिता की आज्ञा का पालन कर वन प्रस्थान करते हैं। किन्तु दूसरी ओर औरंगजेब अपने पिता को जेल में कैद कर बूँद-बूँद पानी के लिए तरसाता है। यह त्याग, समर्पण एवं सेवा का ही प्रतिफल है कि विगत दो अरब वर्षों में वैदिक संस्कृति महान् बनी रह सकी। मेरे परिवार के इतिहास के साथ भी एक काला पृष्ठ जुड़ा है कि उन्हें प्रलोभनवश अपना मूल धर्म त्यागकर इस्लाम में जाना पड़ा। मैं स्पष्ट शब्दों में कहता हूँ कि आपकी पूजा-पद्धति कुछ भी हो सकती है, आप किसी भी समुदाय के हो सकते हैं किन्तु जिस देश में पले-बढ़े हैं उस देश को तो अपनी माँ मानना ही चाहिए। राष्ट्रभक्ति किसी व्यक्ति का

पहला कर्तव्य होना चाहिए, वैदिक धर्म की महानता के अनेक प्रमाण दिये जा सकते हैं किन्तु यहाँ मेरा उद्देश्य मात्र कुछ विचारों पर लिखना है, क्योंकि विगत छः वर्षों में मेरे सम्मुख यह प्रश्न रहा है कि मैं हिन्दू क्यों बना ? मैं प्रत्येक व्यक्ति को जन्म से हिन्दू ही मानता हूँ क्योंकि कोई मनुष्य बिना माँ के गर्भ में स्थान पाये विकसित नहीं हो सकता। यहाँ तक कि विज्ञान की पहुँच टेस्ट ट्यूब चाईल्ड को भी माँ के गर्भ में ही आश्रय लेना पड़ा, तभी उसका पूर्ण विकास सम्भव हुआ। माँ के गर्भ में प्रत्येक शिशु की नाभि से जुड़ा व दूसरी ओर माँ की नाभि से जुड़ा नाल या नाड़ क्या यज्ञोपवीत अर्थात् जनेऊ नहीं होता ? उसमें भी तीन शाखाएँ होती हैं, जिस प्रकार जनेऊ में तीन तागे होते हैं। यह प्रश्न मुझे विचलित करता रहता था और वैज्ञानिक भी है। अतः माँ के गर्भ में तो प्रत्येक व्यक्ति हिन्दू ही है, जन्म के पश्चात् मुसलमानियाँ कराये बिना मुसलमान और बपतिस्मा कराये विना ईसाई नहीं वना जा सकता। अतः इन क्रियाओं के पूर्व बच्चा काफिर होता है और काफिर का अर्थ है हिन्दू, अतः संसार का प्रत्येक शिशु हिन्दू है। मूल हम सबका वेद है, अर्थात् सत्य सनातन वैदिक धर्म। आशा है मेरे मित्र मेरी भावना को समझेंगे, मेरा उद्देश्य किसी की भावनाओं को चोट पहुँचाने का नहीं अपितु केवल अपने विचारों से समाज को अवगत कराना मात्र है। किन्तु यदि फिर भी किसी की भावनाओं को मेरे कारण ठेस लगे तो उन सबसे मैं क्षमा-याचना करता हूँ।

रफत, आनन्द सुमन क्यों बने ?

—तरुण विजय, सम्पादक पाञ्चजन्य (दिल्ली)

"मैं समाचार-पत्रों में छापी जा रही इस खबर का खण्डन करता हूँ कि मैंने धर्म-परिवर्तन किया है।" यह कहकर चौंकाते हुए प्रसिद्ध मुस्लिम विद्वान् एवं युवा मुस्लिम नेता डॉ० कुँवर रफत अखलाक, जो अब हिन्दू धर्म में प्रवेश करने के बाद डॉ० आनन्द सुमन सिंह नाम से प्रसिद्ध हुए हैं, ने आगे कहा, "मेरे पूर्वजों ने सोने के चन्द टुकड़ों और नवाबी जागीर के लोभ में धर्म-परिवर्तन कर इस्लाम कबूल किया था। मैंने उस भयंकर भूल का प्रायश्चित किया है और इस तरह अपने वास्तविक घर में लौट आया हूँ। इसलिए मेरा यह 'पुनरागमन' धर्म-परिवर्तन नहीं अपितु पुराने पाप का प्रायश्चित और भूल सुधार है।"

सबको चौंका गया

इस समय जब कि चारों ओर मीनाक्षीपुरम की इस्लामी गर्द के गुबार उठ रहे हैं, डॉ० रफत अखलाक का आनन्द सुमन में परिवर्तन सबको चौंका गया है। डॉ० आनन्द सुमन नवाबी ठाठ-बाट और ऐश्वर्य में पले उच्च शिक्षित युवक हैं जो अभी कुछ समय पहले तक हिन्दुस्थान को 'इस्लामी मुल्क' में तब्दील

करने के लिए काम कर रहे थे। वह 'इस्लामिक स्टूडेंट मूवमेंट आफ इण्डिया' नामक मुस्लिम छात्र संगठन के संस्थापक अध्यक्ष रहे हैं। इस संगठन के देश में प्रायः चार लाख सदस्य हैं। इसके अलावा वह अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के छात्र नेता तथा जमाते इस्लामी की राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सदस्य रह चुके हैं। डॉ० कुँवर रफत अखलाक के रूप में इन्होंने देश के विभिन्न भागों में जमाते इस्लामी की ओर से इस्लाम का प्रचार किया है और बीस से अधिक हिन्दुओं को अपनी व्यक्तिगत कोशिशों से मुसलमान बनाया है।

तो फिर ऐसा अचानक क्या हुआ कि पब्लिक स्कूल में शिक्षा पाए, चिकित्सा विज्ञान स्नातक और कट्टर इस्लामी विचारवाले इस नौजवान के दिल में उस रास्ते को अपनाने की चाह जगी, जिस रास्ते का ध्वंस करने के लिए वह अब तक कार्य कर रहा था ?

अचानक नहीं हुआ

"अचानक कुछ नहीं हुआ भाई"—डॉ० आनन्द ने रहस्यमयी मुस्कान के साथ कहा—"काफी अर्से से मैं वैदिक धर्म के बारे में कुछ पुस्तकों का अध्ययन कर रहा था। इस अध्ययन का कोई खास मकसद नहीं था। बस यूँ ही अपने एक मित्र के आग्रह पर पढ़ता था। हिन्दुत्व के बारे में जब-तब चर्चा भी होती रहती थी। एक बार मुझे संघ द्वारा आयोजित रक्षाबन्धन के कार्यक्रम में भी मुख्य अतिथि के रूप में आमन्त्रित किया था। मैं उस कार्यक्रम में गया जरूर, पर मेरे इस्लामी जज्बात इतने कट्टर थे कि उस कार्यक्रम में जब मुझे प्यार का प्रतीक धागा बाँधा गया तो

नफरत से मैंने उसे सबके सामने तोड़ दिया था। लेकिन फिर भी मुझे अब लगता है कि वैदिक साहित्य के अध्ययन व चर्चाओं का असर शायद मेरे अन्तर्मन में कहीं हो रहा था।"

'फाजिले इस्लामियत' (इस्लामी धर्मशास्त्र का स्नातक) यह युवक जो हमेशा शेरवानी व अलीगढ़ी पाजामा और 'पवित्र दाढ़ी' में दीखता था तथा हर होज पाँच दफा नहीं नौ दफा नमाज पढ़ने के लिए सुप्रसिद्ध था, जब पिछले वर्ष जनवरी में घर गया तो यह देखकर सन्न रह गया कि उसके ७६ वर्षीय पिता ने एक युवा लड़की से ब्याह रचा लिया है। वह अपने पिता के इस अजीब व्यवहार और इस कार्य को इस्लाम की स्वीकृति का औचित्य न समझ सका। पिता से जब उसने इस शादी के खिलाफ अपनी राय जाहिर की तो पिता ने डाँट दिया और उसे सिर्फ पढ़ाई और पैसे से मतलब रखने के लिए कहा। रफत अखलाक ने अपनी पाँचवीं माँ को देखा (इससे पूर्व उसके पिता ने चार विवाह किए थे) तो शर्म से उसका सिर झुक गया।

जमाते इस्लामी की करतूत

यह रफत के मन में नये धार्मिक विश्वास की आधारशिला को लगा पहला धक्का था। इसके कुछ अर्से बाद हैदराबाद में जमाते इस्लामी का बहुचर्चित सम्मेलन हुआ। इस सम्मेलन में मुस्लिम युवकों के प्रमुख नेता तथा जमाते इस्लामी की कार्यकारिणी के सदस्य के नाते रफत अखलाक सभी महत्त्वपूर्ण बैठकों में शामिल हुए। उन्हीं के शब्दों में, "२८ फरवरी, ८१ की रात को हैदराबाद में जमात के प्रमुख नेताओं की अरब के एक बहुत

बड़े उद्योगपति शेख अलरसीद के साथ गुप्त बैठक हुई। इसमें शेख ने साफ कहा कि अब वह जल्द से जल्द हिन्दुस्तान को इस्लामी गणराज्य में बदलने की योजना को सफल देखना चाहते हैं। बैठक में इस बारे में एक प्रस्ताव पारित होने के लिए जब आया तो मैंने उस पर दस्तखत करने से इन्कार कर दिया। मुझे साफ लगा कि यह अपने ही मुल्क के साथ गद्दारी और बलात्कार है। इस बात पर जमात के प्रेसीडेण्ट मौलाना युसुफ से मेरी झड़प भी हो गई, फलतः उसी दिन मैं जमात से इस्तीफा देकर हैदराबाद से लौट आया। मेरे दिमाग में भयंकर उथल-पुथल मची हुई थी। मेरे तमाम विश्वास लड़खड़ा गए थे। मैं सोच रहा था कि यह कैसा धार्मिक विश्वास है जो एक साँस में सारी दुनिया के लोगों को अपना भाईवत् बताता है और दूसरी साँस में गैर-मुस्लिमों से नफरत करना, उन्हें कत्ल तक कर देना वाजिब करार देता है। यह कैसा मजहब है जो मौत का इन्तजार कर रहे एक बूढ़े के साथ १८ साल की लड़की के ब्याह की मंजूरी देता है। यही नहीं, जिस मुल्क में हम पले-बढ़े, जहाँ की हवा हमारी रग-रग में घुली है, उसी मुल्क के साथ बलात्कार करने की प्रेरणा देता है।"

इसी चिन्तन और आत्मालोचन के दौरान रफत अखलाक को उन पुस्तकों (वेद, सत्यार्थप्रकाश आदि) की याद आई, जो "बिना किसी खास मकसद के" उन्होंने पिछले दिनों पढ़ी थीं। घण्टों हिन्दुत्व पर हुई चर्चाएँ भी उनके मस्तिष्क को एक दिशा सुझा गईं और वह अनेक हिन्दू नेताओं से मिले। उन्होंने अपनी जिन्दगी की दिशा बदलने का निर्णय कर लिया था।

शुरू में हिन्दू समाज के कार्यकर्ता सन्देहवश उत्साहित नहीं

थे, लेकिन रफत के निरन्तर आग्रह और ईमानदार स्वीकारोक्तियों ने उन्हें उनके अचल इरादे का यकीन दिला दिया।

रफत मार्च ८१ में वैदिक धर्म में लौटना चाहते थे किन्तु तभी अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय में छात्र असन्तोष उभरा और इन्हें अन्य छात्र नेताओं सहित गिरफ्तार कर लिया गया। मई, ८१ में वह जेल से छूटे और फिर हर साल की तरह गर्मियाँ बिताने नैनीताल चले गए। १९ जुलाई को रफत के पिता की पहली बरसी थी (जुलाई, ८० में उनका देहान्त हो गया था)। बरसी की रस्में निबाहने के बाद रफत ने अपने इरादे को, जो इतना समय बिताने पर और पुष्ट हुआ था,—'अमली जामा पहनाने' का निश्चय किया।

घर वापसी

दिल्ली में आर्यसमाज के नेताओं ने इस घर वापसी के कार्यक्रम को पूर्ण प्रचार के साथ सम्पन्न करने का निश्चय किया ताकि अन्य 'भटके हुए' भी प्रेरणा पा सकें। स्वयं रफत की भी यही इच्छा थी।…और बस फिर एक तूफान-सा उठा। मीनाक्षीपुरम का जवाब आनन्द सुमन में खोजा जाने लगा। उधर आनन्द के पूर्व पंथ के बौखलाए लोगों की फोन पर सिर्फ धमकियाँ ही नहीं सुनी गईं अपितु कीर्तिनगर आर्यसमाज में, जहाँ उन्हें शुद्धि के बाद ठहराया गया था, कुछ ऐसे लोग भी आए जिनके मन्तव्य संदिग्ध थे। लिहाजा आनन्द सुमन एक अन्य सुरक्षित जगह ले जाये गए। वहाँ उनसे काफी देर तक हुई बातचीत के अंश यहाँ प्रस्तुत हैं।

वतन-परस्ती की आग

तरुणविजय—आपने कहा कि हैदराबाद में जमाते इस्लामी की गुप्त बैठक में अरब उद्योगपति द्वारा हिन्दुस्थान को इस्लामी मुल्क में बदलने के प्रस्ताव पर आपने दस्तखत नहीं किए और इस्तीफा देकर लौट आए, पर एक कट्टर मुसलमान होने के नाते, जो आप थे भी, आपको तो ऐसे किसी भी प्रस्ताव से खुशी होनी चाहिए थी।

डॉ० आनन्द सुमन—हाँ, एक अन्धविश्वासी मुसलमान के नाते तो जरूर मुझे खुशी होती, पर अफसोस ! मेरे दिल में वतनपरस्ती की आग थी। मैं अपने वतन के साथ इस गद्दारी को सहन न कर सका। इस्लाम को मानना एक बात है, पर विदेशी पैसे के बल पर किसी मुल्क की अस्मत से खेलना माँ के साथ बलात्कार के समान है।

तरुणविजय—क्या खद्दर का यह मोटा धोती-कुर्ता पहने हुए आपको अपने नवाबी ठाठ-बाट की याद नहीं आती ?

डॉ० आनन्द—नहीं। जब मैं अपने घर से चला तो बदन पर एक भी कपड़ा उस घर का नहीं पहना। एक कुर्ता-पजामा अपने दोस्त से उधार लेकर खरीदा था, वही पहनकर आया था। उस नवाबी ठाठ-बाट में पाप की दुर्गन्ध थी। अब मुझे अजीब-सा सुकून महसूस हो रहा है। आपको आश्चर्य होगा कि मैं पहले हर रोज मीट खाता था, अब विशुद्ध शाकाहारी भोजन करता हूँ। सुबह पाँच बजे उठकर स्नानादि करके संध्या करता हूँ, दिन में समय मिलने पर वैदिक धर्मशास्त्रों का अध्ययन करता हूँ और इस तरह मुझे जो चैन महसूस हो रहा है वह मैंने कभी पहले महसूस नहीं किया था।

तरुणविजय—जब आप घर से चले तो इतनी सम्पत्ति का मोह नहीं हुआ ?

डॉ० आनन्द—जी नहीं। मैंने नयी जिन्दगी जीने का इरादा कर लिया था। जिस दिन मैं चला (७ अगस्त को) उस दिन अपने एकाउण्ट का करीब ढाई लाख रुपया, जमीन-जायदाद का हिस्सा सब कुछ भाइयों के नाम लिख आया था। मुझे जायदाद नहीं चाहिए, जो चाहिए था वह मिल गया यानी अपना घर। अब मैं वैदिक धर्म का प्रचारक बनना चाहता हूँ।

तरुणविजय—जब आपने घर में अपना इरादा बताया तो आपके घर वालों ने रोकने की कोशिश नहीं की ?

डॉ० आनन्द—रोकने की कोशिश तो की किन्तु मैं निर्णय कर चुका था और कही गई बात का पालन करना मेरा धर्म है।'

तरुणविजय—आपके वह कौन से पूर्वज थे, जिन्होंने धर्म-परिवर्तन कर इस्लाम कबूल किया था ?

डॉ० आनन्द—उनका नाम ठाकुर बलदेवसिंह था। उन्हें आप लोगों द्वारा धर्मनिरपेक्ष, उदार बादशाह कहे जाने वाले फर्रुखशियर पुत्र औरंगजेब ने ही नवाबी बख्श कर मुसलमान बनाया था। मेरा तो अब पक्का यकीन हो गया है कि जिस अवस्था पर मैं अब तक चला, उसका अनुसरण कर कोई भी देश-भक्त नहीं हो सकता। देखिए, जब सिन्ध से पहले-पहल मुसलमान आए और उन्होंने वहाँ के राजा से शरण माँगी तो राजा ने उनका स्वागत किया और उन्हें शरण देने की बात पर एक शर्त रखी कि वे गौरक्षा करेंगे। इस शर्त के प्रतीकस्वरूप उन्होंने एक कटोरा दूध उन मुसलमानों को भिजवाया। जवाब

में मुसलमानों ने वह दूध शक्कर घोलकर लौटाया, जिसका अर्थ था कि वे हिन्दू समाज में शक्कर बनकर रहेंगे। लेकिन इतिहास बताता है ऐसा नहीं हुआ। अभी पैंतीस साल पहले उन्होंने देश के टुकड़े करवाए और अब भी हिन्दुस्तान को इस्लामी राज्य में बदलने की कोशिश कर रहे हैं। मेरा उनसे यह कहना है कि वह सच्चाई समझें और इस देश में इस देश के होकर रहें। मेरा यह विश्वास है कि हिन्दुस्तान का हर आदमी, भले ही मजहबी तौर पर मुसलमान, ईसाई क्यों न हो पर कौमी तौर पर हिन्दू है, यही सबको मानना चाहिए।

तरुणविजय—अभी आपके चाचा ने यह बयान दिया था कि आप उनके खानदान के नहीं हैं?

डॉ० आनन्द–(व्यंग्य से) उनके मजहब की ऊँचाई का इससे बड़ा सबूत क्या हो सकता है कि उन्होंने अपने खून को गैर करार दे दिया?

तरुणविजय—आपने कहा कि २० हिन्दुओं को मुसलमान बनाया। कैसे?

डॉ० आनन्द—वे या तो आर्थिक परेशानियों से ग्रस्त थे या अधिक शादियाँ करना चाहते थे। हम दोनों ही तरह से उनकी मदद करते थे। इस्लाम कबूलने पर सामान्यत: प्रति व्यक्ति २०-२५ हजार रुपये तो देते ही थे, अन्य सहायता अलग से।

तरुणविजय—अन्य सहायता क्या?

डॉ० आनन्द—यही नौकरी लगवा दी, या घर बनवा दिया, शादी करवा दी। १९७७ में दिल्ली में ही एक अग्रवाल परिवार को मैंने मुसलमान बनाया था। उस लड़के का नाम हेमकुमार अग्रवाल था जिसे नसीमगाजी का नाम दिया गया। आजकल

वह जमाते इस्लामी के दफ्तर में नौकरी करता है। उसके परिवार में प्रायः १५ सदस्यों ने इस्लाम कबूला। हमने उसे गाजियाबाद में प्रायः तीन लाख रु० की लागत से कोठी वनवा कर दी।

तरुणविजय—यह सब पैसा सीधे तो आपके पास आता नहीं होगा, इसका जरिया क्या है?

डॉ० आनन्द—कई तरीके हैं। एक सबसे आम और आसान तरीका तो यह है कि अरब, ईरान के दूतावास यहाँ विभिन्न प्रोग्रामों, मस्जिदों को दान आदि के नाम पर करोड़ों रुपया भेजते हैं। घोषित किए गए प्रोग्राम पर नाम मात्र का खर्च कर, बाकी रुपया धर्म-परिवर्तन जैसे कामों के लिए सौंप दिया जाता है।

तरुणविजय—कुछ लोगों को यकीन नहीं आ रहा है कि आपने बिना किसी लालच के हिन्दू धर्म अपनाया है।

डॉ० आनन्द—अभी कल एक ऐसी ही सोच के मारे हुए पत्रकार प्रेस कांफ्रेंस में आए थे। उर्दू प्रेस के थे। मुझे एक कोने में ले गये और पूछने लगे 'यार, सच-सच बताओ, हिन्दुओं ने तुम्हें कितना पैसा दिया है?' मैंने कहा–'जनाब, आप प्रेस कांफ्रेंस में आए हैं, मेरे मेहमान हैं, वरना आपको इसका मजा चखा देता। आपको मैं पाँच लाख रुपया देता हूँ, बोलिये बनेंगे हिन्दू?' बस खिसियाकर वह चले गए।

तरुणविजय—मीनाक्षीपुरम में हरिजनों को मुसलमान बनाए जाने पर आप क्या सोचते हैं?

डॉ० आनन्द—यह एक बड़ा भयंकर षड्यन्त्र है, जिसे हमें विफल करना है। मेरा हरिजन भाइयों से यह अनुरोध है कि

वे इस बहकावे में न आएँ कि मुस्लिम समाज में भेद-भाव नहीं है।

मैं एक लम्बा काल इस मजहब में काट चुका हूँ। जाति प्रथा मुसलमानों में भी बहुत है। उदाहरण के लिए कोई पठान, जुलाहे का छुआ पानी भी नहीं पीता। मुसलमान लोग अपनी ऐयाशी के लिए भले ही हरिजनों की लड़कियाँ ले लें, पर अपनी बेटियाँ हरिजनों को नहीं ब्याहेंगे। हम हिन्दुओं में तो पत्नी सहधर्मिणी है लेकिन मुसलमानों में पत्नी सिर्फ औरत है, शरीर है जिसको भोगना ही उनका उद्देश्य है।

□□□
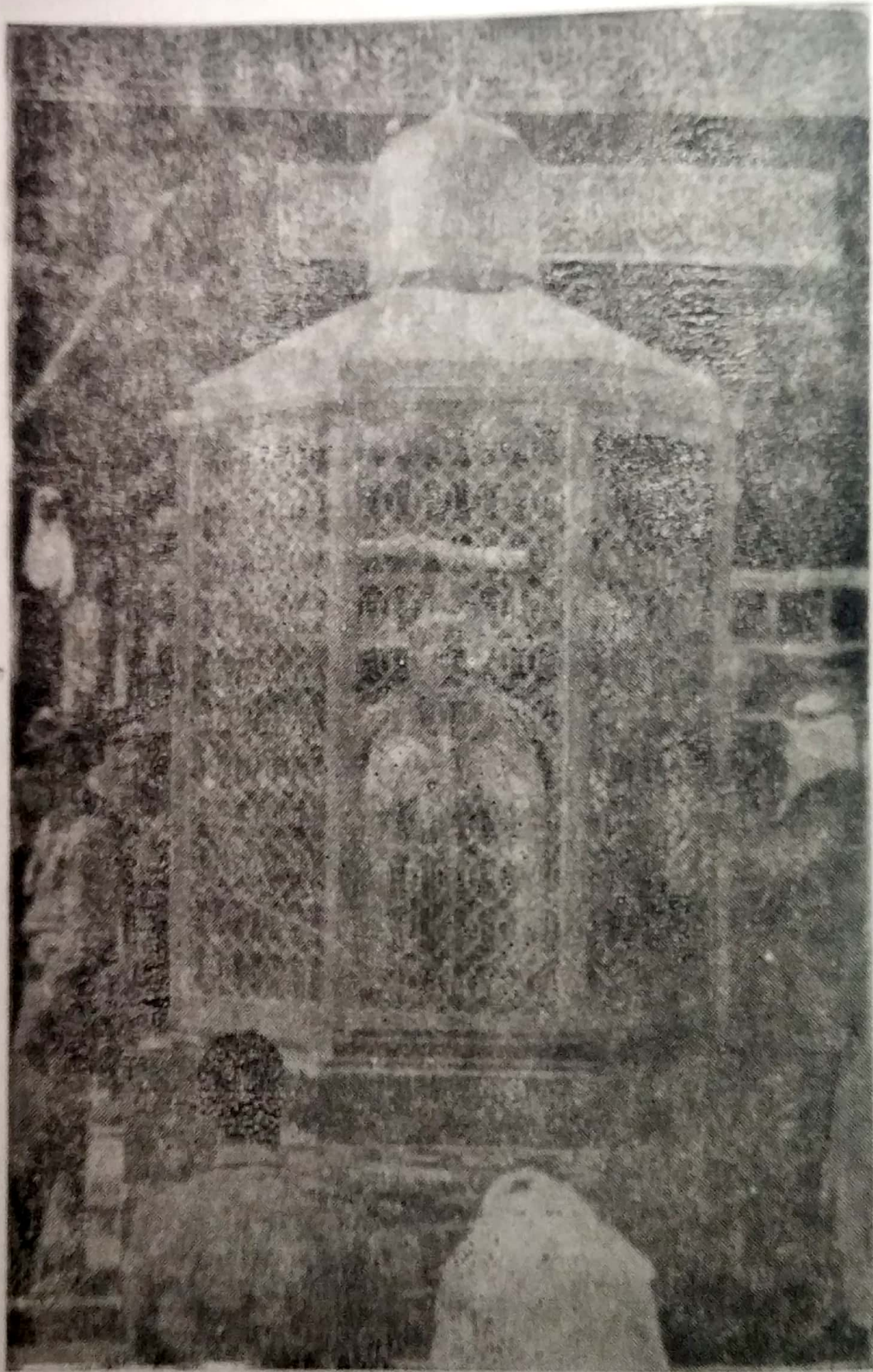
मक्केश्वर महादेव मक्का (अरब क्षेत्र), महाराज विक्रमादित्य जी द्वारा स्थापित भगवान शंकर का शिवलिंग जिसे मुसलमान संगे-अस्वत् कहते हैं। चित्र अपनी कहानी स्वयं कह रहा है।

डॉ० आनन्दसुमन सिंह (वैदिक प्रवक्ता)

विगत छः वर्षों से वैदिक धर्म एवं आर्यसंस्कृति के विद्वान् एवं क्रान्तिकारी प्रवक्ता के रूप में प्रसिद्ध निरन्तर संघर्षरत् ।

उपलब्ध साहित्य—

१.	वेद और कुरआन (तुलनात्मक अध्ययन)	३.००
२.	क्रान्ति (निबन्ध संग्रह)	६.००
३.	हिन्दुत्व के रक्षक महर्षि दयानन्द	२०.००
४.	मैं हिन्दू क्यों बना ?	२.००

सभी साहित्य पर आर्य बन्धुओं, संस्थाओं एवं विद्यालयों को २० प्रतिशत छूट ।

क्रान्ति प्रकाशन

तपोवन आश्रम, देहरादून-२४८००८ (उ० प्र०)